श्रीगोकुलनाथ कृत

अष्टछाप

संकलनकर्ता

धीरेन्द्र वर्म्मा एम० ए०

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,

विश्वविद्यालय, प्रयाग,

प्रकाशक

रामनरायन लाल

पब्लिशर और बुकसेलर

इलाहाबाद

१९२९

प्रथम संस्करण १०००]

[मूल्य १)

सूची

	वक्तव्य	१—३
१	सूरदास	१
२	कृष्णदास	१९
३	परमानददास	४५
४	कुंभनदास	७०
५	नददास	९४
६	चतुर्भुजदास	१०४
७	छीतस्वामी	११३
८	गोविंद स्वामी	११९

वक्तव्य

गोकुलनाथ जी ने 'अष्टछाप' नाम से कोई पुस्तक नहीं लिखी है। प्रस्तुत पुस्तक गोकुलनाथ जी के नाम से प्रचलित "८४ वैष्णवन की वार्ता" तथा "२५२ वैष्णवन की वार्ता" शीर्षक ग्रंथों से अष्टछाप कवियों की जीवनियों का संग्रहमात्र है। ८४ वार्ता में महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों का वर्णन है। सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, तथा कुंभनदास महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों में प्रमुख थे। इनकी जीवनियाँ ८४ वार्ता के अन्त में एक स्थान पर मिलती हैं और यह वहाँ से ही ली गई हैं। महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र तथा उत्तराधिकारी गुसाईं विट्ठलनाथ के सेवकों का वर्णन २५२ वार्ता में मिलता है। गुसाईं जी के सेवकों में नंददास, चतुर्भुजदास, छीत स्वामी तथा गोविंद स्वामी ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की थी और इनकी जीवनियाँ २५२ वार्ता में सबसे प्रथम दी गई हैं। कहा जाता है कि गुसाईं विट्ठल नाथ ने ही अपने तथा अपने पिता के इन चार चार प्रमुख सेवकों को लेकर "अष्टछाप" नाम दिया था। अतः प्रस्तुत संग्रह के इस नाम के पीछे कुछ ऐतिहासिक तथा साम्प्रदायिक परम्परा है।

इस संग्रह को हिन्दी जनता के सम्मुख रखने में मेरे दो मुख्य उद्देश हैं। भाषा संबंधी उद्देश तो है सत्रहवीं सदी के व्रजभाषा गद्य को सर्व साधारण के लिये सुलभ करना तथा साहित्यिक उद्देश है सूरदास आदि कुछ प्रसिद्ध हिन्दी कवियों की जीवनियों

के इन प्राय समकालीन जीते जागते वर्णनों से हिन्दी प्रेमियों का घनिष्ट परिचय कराना। ८४ तथा २५२ वार्ताओं के अच्छे सस्करण न होने तथा इन ग्रथो के बहुत बड़े होने के कारण उपर्युक्त उद्देशो की पूर्त्ति नहीं हो पा रही थी। इसके अतिरिक्त यह जीवनियां देश की तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति पर भी अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाश डालती हैं। राष्ट्रीय जीवन के इन आवश्यक अगो का सच्चा इतिहास लिखने के लिये हिन्दी साहित्य मे कितना भंडार भरा पड़ा है इसका दिग्दर्शन इस छोटे से सग्रह को आद्योपान्त पढ़ने से भली प्रकार हो सकेगा। इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य का अध्ययन अभी किया ही नहीं गया है।

इस सग्रह के मूल का आधार डाकोर से प्रकाशित ८४ तथा २५२ वार्ताओं के सवत् १९६० के सस्करण हैं। ८४ वार्ता का डाकोर से एक नया सस्करण निकला है किन्तु इसके तथा पुराने सस्करण के मूल मे विशेष अन्तर नहीं है। ८४ वार्ता का मथुरा से प्रकाशित सवत् १९४० का लिथो का छपा एक दूसरा सस्करण देखने को मिल गया था। इस सस्करण से कुछ महत्वपूर्ण पाठभेद फुटनोट मे दे दिये हैं। २५२ वार्ता का न कोई अन्य सस्करण ही मिल सका और न हस्तलिखित प्रति ही अत अन्तिम चार जीवनियो में पाठान्तर नहीं दिये जा सके हैं। पर्याप्त हस्त लिखित प्रतियों अथवा छपे हुये सस्करणो के बिना किसी ग्रथ के मूल को

महाप्रभून ने कही जो सूर कछू भगवद जस वर्णन करो। तब सूरदास जी ने कही जो आज्ञा[1]। सो सूरदास जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे एक पद गायौ॥ सो पद॥

राग धनाश्री

हौ हरि सब पतितन को नायक।
को करि सकै बराबर मेरी इतने मान को लायक॥ १॥
जो तुम अजामेलि सो कीनी जो पाती लिख पाऊँ।
होय विश्वास[2] भलो जिय अपने और[3] पतित बुलाऊँ॥ २॥
सिमिटे[4] जहाँ तहाँते सब कोऊ आयजुरे इक ठौर।
अब के इतने आन मिलाऊँ घेर दूसरी और॥ ३॥
होडाहोडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट।
सबहिन ले पायन तरिपरि हौं यही हमारी भेट॥ ४॥
ऐसी कितनी कब नाऊँ[5] प्रानपति सुमरन है भयो आडौ।
अबकी घेर निवार लेउ प्रभू सूर पतित को ठाडौ॥ ५॥

और पद गायौ।

राग धनाश्री

प्रभु मे सब पतितन को टीकौ।
और पतित सब घोस चारिके मैं तौ जन्मत ही कौ॥ १॥
बधिक अजामिलि गनिका त्यारी और पूतना ही कौ।
मोहि छाडि तुम और उधारै मिटै शूल केसें जीको॥ २॥

---

१ आज्ञा। २ विश्वास। ३ औरहु। ४ सिमिट। ५ कितनीक बनाऊँ।

कोउ न समरथ सेवकरनकौ खेचि कहत हौं लीकौ।
मरियत लाज सूरपतितन मे कहत सघन मे नीकौ॥ ३॥

ऐसौ पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे सूरदास जी ने गायौ सो सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो सूर है कें ऐसो घिघियात काहे को है कछू भगवल्लीला वर्णन करि। तब सूरदास नें कह्यौ जो महाराज हो तो समझत नाहीं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो जा स्नान करि आउ हम तोको समझावेंगे[1]। तब सूरदास जी स्नान करि आये तब श्री-महाप्रभू जी नें प्रथम सूरदास जी को नाम सुनायौ पाछें समर्पण करवायौ और फिर दशम स्कंध की अनुक्रमणिका कही सो ताते सब दोष दूर भये। ताते सूरदास जी कौ नवधा भक्ति सिद्ध भयी। तब सूरदास जी ने भगवल्लीला वर्णन करी। अनु-क्रमणिका ते सपूर्ण लीला फुरी सो क्यो जानियै सो दसमस्कध की सुबोधिनी मे मगलाचरण कौ प्रथम कारिका कीये हैं सो यह श्लोक सूरदास जी नें कह्यौ। सो श्लोक।

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षराविध सायनम्[2]।
लक्ष्मी सहस्र लीलाभि सेव्यमान कलानिधिम्॥ १॥

और ताही समय श्रीमहाप्रभून के सन्निधान पद कीये। सो पद। रागविलावल "चकई री चलि चरण सरोवर जहाँ न प्रेम वियोग।" यह पद सपूर्ण करिकें सूरदास जी ने गायौ। सो यह पद

---

१ समझायेंगे। २ लीलाक्षराविध सायिन।

दशमस्कध के मगलाचरण की कारिका के अनुसार कीयौ। सो यामें कह्यौ है जो तहाँ श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत शोभित। सूरदास या भाँति पद कीये ताते जानी जो सूरदास को सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने जान्यौ जो लीला को अभ्यास भयौ। पाछें सूरदास जी ने नदमहोत्सव कीयौ। सो श्रीआचार्य महाप्रभून के आगे गायौ। राग देवगन्धार। 'व्रज भयौ महर के पूत। जन यह बात सुनो।" सो यह श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे गायौ। सो सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्रीमुख ते कहैं जो सूरदास मानो निकट ही हुते।

पाछें सूरदास जी ने अपने सेवक कीये हुते तिन सबन को नाम दिवायौ। पाछे सूरदास जी ने बहुत पद कीये। पाछे श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सूरदास जी को पुरुषोत्तम सहस्रनाम सुनायौ तब सूरदास जी को सम्पूरण भागवत स्फुर्तना भई। पाछें जो पद कीये सो श्रीभागवत प्रथम स्कधते द्वादश स्कधताई कीये। ताते वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दोय तीन विराजे। पाछें फेरि व्रज को पाव धारे तब सूरदास जी हू श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ व्रज को आये।

प्रसग २

अब जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू व्रजको पधारे सो प्रथम

श्रीगोकुल पधारे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ सूरदास जी हू आये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुखसो कह्यौ जो सूरदास श्रीगोकुल को दर्शन करौ। सो सूरदास जी ने श्रीगोकुल कों दंडवत करी। सो दंडवतमात्र श्रीगोकुल की बाल लीला सूरदास जी के हृदय मे फुरी और सूरदास जी के हृदय मे प्रथम श्रीमहाप्रभून ने सकल लीला श्रीभागवत की स्थापी हैं, ताते दर्शन करत मात्र सूरदास जी कों श्रीगोकुल की बाललीला स्फुर्दना भई। तब सूरदास जी ने विचारयौ मन मे जो श्रीगोकुल की बाललीला को वर्णन करिकैं श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें सुनाइयै। जन्म लीला को पद तौ प्रथम सुनायौ है अब श्रीगोकुल की बाललीला को पद गायौ। सो पद।

रागविलावल

सो नित करन पुनीत लियै।[1]
धुटुरुवन चलत, रेणुतन मंडित,[2] सुरत वेष कियै[3] ॥ १ ॥
चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन कौ तिलक दियै।
लार लटकन मानो मत[4] मधुपगन माधुरी मधुर पियै ॥ २ ॥
कठुला कंठ वजत, केहरि नख राजत है सखी रुचिर हियै।
धन्य सूर एकौ पल यह सुख कहा भयौ जीये ॥ ३ ॥

यह पद सूरदास जी ने गायौ। सो सुनि के आप बहुत प्रसन्न भये। पाछें औरहू पद गायौ।

---

१ शोभित कर अवनीत लिये। २ मंडित। ३ मुख लेप किये। ४ मत्त।

तब श्रीमहाप्रभू जी आपने मन मे विचारे जो श्रीनाथ जी के यहाँ और तो सब सेवा कौ मडान भयौ और कीर्तन को मडान नाही कियौ है ताते अब सूरदास जी को दीजियै। तब आप श्री जी द्वार पधारे। सो सूरदास जी कौ साथ लीये ही सो श्रीनाथ जी द्वार जाय पहुँचे। तब आप स्नान करिकें मदिर मे पधारे। तब सूरदास जी सो कह्यौ जो सूरदास ऊपर आउ स्नान करिकें श्रीनाथ जी कौ दर्शन करि। तब सूरदास जी पर्वत ऊपर जायकै श्रीनाथ जी कौ दर्शन कीयौ। तब आपने कह्यौ जो सूरदास कछू श्रीनाथ जी को सुनायौ। तब सूरदास जी ने प्रथम विग्यप्त[1] को पद गायौ। सो पद। राग धनाश्री। "अब हौं नाच्यौ बहुत गोपाल।" यह पद सम्पूर्ण करिकें श्रीनाथ जी के आगें गायौ। तब श्रीमहाप्रभून जी ने कह्यौ जो अब तौ सूरदास तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो प्रभून ने दूर कीनी ताते कछू भगवद्यश वर्णन करौ। तब सूरदास जी ने महात्म्य और लीला ऐसो जस करिकें गाय सुनायौ। सो पद। राग गौरी। "कौन सुकृत इन ब्रजवासिन कों।" यह पद सम्पूर्ण करिके गायो। सो सुनिकें श्रीमहाप्रभू जी बहुत प्रसन्न भये।

सो जैसो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें मार्ग प्रकाश कीयौ हौ ताके अनुसार सूरदास जी ने पद कीये। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को कहा स्वरूप है महात्म्य ग्यान पूर्वक सुदृढ स्नेह को यौ[2] परमकाष्ठा हैं और स्नेह आगे भगवान को महात्म्य रहत नाहीं

१ विज्ञप्ति। २ यौ।

ताते भगवान वेर वेर महात्म्य जनावत हैं। नाम प्रकरन मे पूतना करि, सकट तृनावर्तकरि, गर्गाचार्य करि, यमलार्जुन करि, वैकुण्ठ दर्शन करी[1], ऐसें करिकें भगवान ने वहुत महात्म्य जनायौ। परि नइ व्रजभक्तिन को स्नेह परमकाष्ठापन्न है ताते ताही समय तौ महात्म्य रहै पाछें विस्मृत हो जाय।

प्रसग ३

और सूरदास जी ने सहस्रावधि[2] पद कीये हैं ताको सागर कहियै सो सब जगत में प्रसिद्ध भये। सो सूरदास जी के पद देशाधिपति ने सुने सो सुनिकें यह विचारौ जो सूरदास जी काहू विधि सो मिले तो भलौ। सो भगवदिच्छा ते सूरदास जी मिले। सो सूरदास जी सों कह्यो देशाधिपति ने जो सूरदास जी मे सुन्यो है जो तुमने विसनपद वहु[3] कीये हैं जो मोको परमेश्वर[4] नें राज्य दीयौ है सो सब गुनीजन मेरौ जस गावत हैं ताते तुमहूँ कछू गावौ। तब सूरदास जी ने देशाधिपति के आगे कीर्तन गायौ। सो पद। रागविलावल। "मना रे तू करि माधौ सो प्रीति।" यहपद देशाधिपति के आगे सपूर्ण करिके सूरदास जी नें गायौ। सो यह पद कैसो है जो यह पद को अहर्निश ध्यान रहे तौ भगवद्-नुग्रह की सादा सार्ति रहै, और ससार ते सदा वैराग्य रहै, और कुसग को सदा भय रहै, और भगवदीय के सग की सदा चाह रहै और श्रीठाकुर जी के चरणार्विंद ऊपर सदा स्नेह रहै, देशादि के ऊपर आसक्ति न होय, ऐसो पद देशाधिपति को सुनायौ।

---

१ करि। २ सहस्रा विधि। ३ वहुत। ४ परमेश्वर।

सो सुनि के देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यौ जो सूरदास जी मोको परमेश्वर[1] ने राज दीनो है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते मेरो जस कछू गावौ। तब सूरदास जी ने यह पद गायो। सो पद। राग केदारो। "नाहिन रह्यौ मनमें ठौर।" यह पद सपूर्ण करि कें सूरदास जी ने गायो। सो सुनि कें देशाधिपति अकबर बादशाह[2] अपने मन में विचार्यो जो ये मेरो जस काहे को गावेंगे जो इनको कछू मेरी बात को लालच होय तो गावें ये तो परमेश्वर के जन हैं। और सूरदास जी ते (ने) या पद के समाप्त मे गायो। "हो जो सूर ऐसें दर्श को इमरत[3] लोचन प्यास।" यह गायो है। देशाधिपति ने पूछो जो सूरदास जी तुम्हारे लोचन तो देखियत नाहीं सो प्यासे कैसें मरत हैं और बिन देखें तुम उपमा को देत हो सो तुम कैसें देत हो। तब सूरदास जी कछू बोले नाहीं। तब फेरि देशाधिपति बोलो जो इनके लोचन हैं सो तो परमेश्वर के पास हैं सो उहाँ देखत हैं सो वर्णन करत हैं। तब देशाधिपति नें सूरदास जी के समाधान की मन मे विचारी जो इनको कछू दीयो चाहियें परि यह तो भगवदीय है इनको कछू काहू बात की इच्छा नाहीं। पाछें सूरदास जी देशाधिपति सो विदा होयके श्रीनाथ जी द्वार आयें।

प्रसग ४

एक समय[4] सूरदास जी मार्ग में चले जाते हैं[5] सो कोई[6]

---

१ परमेश्वर। २ पातसाह। ३ ए अमरत। ४ वर्षे। ५ जात है। ६ कोऊ।

चौपड़ खेलत हुते। सो या चौपड़ खेल में ऐसे लीन है[1] जो कोऊ आवते जाते की सुधि नाहीं। ऐसे खेल मे मग्न हैं। सो देख सूरदास जी के सग के भगवदीय है तिनसो सूरदास जी नें कह्यौ जो देखौ यह प्राणी कैसो अपनौ जनमारो[2] खोवत हैं। भगवान ने तौ मनुष्य देह दीनो है सो तौ अपनी सेवा भजन के लियै दीनी है सो ये तौ या देह सो हाड कूटत हैं। या मे यह लौकिक सिद्धि नाहीं सो काहे ते जो या लोक में तो अपजस और परलोक मे भगवान ते बहिर्मुख। तातें श्रीठाकुर जी ने इनकों मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहियै। सो ता समय एक पद सूरदास जी ने अपने सगकेन सो कह्यौ। सोपद।

राग केदारौ

मन तू समझि सोच विचार।
भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार॥ १॥
साध सगति डारि फासा फेरि रसना सारि।
दाव अबकें पयौं पूरौ उतरि पहिलो पार॥ २॥
बाकसत्रे सुनि अठारे पच[3]ही को मारि।
दूर ते तजि तीन कौन[4] चमकि चौक विचार॥ ३॥
काम क्रोध जजाल भूल्यौ ठग्यो ठगनी नारि।
सूर हरि कें पद भजन बिन चल्यौ दोउ कर झार॥ ४॥

यह पद सूरदास जी ने अपने सग के भगवदीयन सों कह्यौ।

---

१ है। २ जनमारो। ३ पच। ४ काने।

सो या पद में सूरदास जी ने कहा कह्यौ 'मन तू समझि सोच विचार।' ये तीन्यो वस्तु चौपड़ में चाहियै सोई तीनो वस्तु भगवान के भजन में चाहियै। काहे ते जो समझि न होय तो श्रवण कहा करेगो ताते पहिले तो समझ चाहियै। और सोच कहिये चिंता, सो भगवान के प्राप्त[1] की चिंता न होय तो संसार ऊपर वैराग्य कैसे आवै ताते सोच कहियै। और विचार, जो या जीव को विचार हीं नाहीं तो सग दुसग में कहा करेगो ताते विचार चाहियै। सो ये तीनो वस्तु होय तो भगवदीय होय ताते ये तीनो वस्तु भगवदीय को अवश्य चाहियै। और चौपड़ में हूं ये तीनो वस्तु चाहियै। समझ कहै गिनवो न आवतो गोट कैसे चलै, और सोच अगम जो मेरे यह दाव पड़ै तो यह गोट चलूं, विचार जो वाही में तन मन। जो यह वस्तु होय तो चौपड़ खेली जाय। सो वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं[2]।

प्रसग ५

बहुर सूरदास जी श्रीनाथ जी द्वार आयकें बहुत दिन ताई श्रीनाथ जी की सेवा कीनी। बीच बीच में श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन को आवते। सो एक समय श्रीसूरदास जी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीतप्रिया जी के दर्शन कीये और बाललीला के पद बहुत सुनाये। सो श्रीगुसाईं जी सुनिकें बहुत प्रसन्न भये।

---

१ प्राप्ति। २ है।

पाछे श्रीगुसाईं जी ने एक पालना सस्कृत में कीयौ सो पालना सूरदास जी कों सिखायौ। सो पालना सूरदास जी ने श्रीनवनीत। प्रिया जी झुलत हुते ता समय गायौ। सो पद। राग रामकली। "प्रेम[1] पर्यंक शयन" यह पद सूरदास जी ने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायौ श्रीनवनीतप्रिया जी कों। पाछें या पद के भाव के अनुसार बहुत पद किये सो सुनि कें श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये। पालना के भाव अनुसार पद गायो। सो पद।

राग बिलावल

बाल विनोद आँगन में की डोलनि।
मणिमय भूमि सुभग नदालय बलिबलि गई तोतरी बोलनि ॥१॥
कठुलाकठ रुचिर केहरि नख ब्रजमाल बहुतई अमोलनि।
बदन सरोज तिलक गोरोचन लरलटिकन मधुगनि लोलनि ॥२॥
लीन्यौ कर परसत आनन पर कछू खाय कछू लग्यौ कपोलनि।
कहैं जन सूर कहां लो बरनो धन्य नद जीवन जग तोलनि ॥३॥

गोपाल दुरे हैं माखन खात।
देखि सखी सोभा जो बढ़ी अति स्याम मनोहरि गति ॥१॥
उठि अवलोकि ओट ठाढ़ी ह्वै जिह विधि नहीं लखि लेत।
चकित नेन चहुँ दिस चितवत और सबन को देत ॥२॥
सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यह आकार।
जनु जलरुह तजि वेर विधि सो लाये मिलत उपहार ॥३॥

---

१ प्रेम।

गिरि गिरि परत बदनते ऊपर है दधिसुत के बिंदु ।
मानहू सुधाकन खोरवत पिय जिय दु द[1] ॥४॥
बालविनोद विलोक सूर प्रभू बित भई ब्रज की नारि ।
फुरत न वचन बरजिवे को मनराही[2] बिचार बिचार ॥५॥

राग जैतश्री

कहाँ लग बरनो सुन्दरताई ।
खेलत कुमर कतिक आँगन मे नेन निरखि सुखभाई ॥१॥
कुलहै[3] लसत श्याम सुदर के बहु विधि रग बिबनाई ।
मानउ नवघन ऊपर राजत मघुवा मनुष्य[4] चढ़ाई ॥२॥
सेतपीत अरु असितलाल सणि[5] लटकनि भाल सराई ।
मानहूँ असुर देव गुरु सो मिलि भूमि जसो[6] समुदाई ॥३॥
अति सुदेश मृदु चिहुर[7] हरत मन मोहन सुख बगराई ।
मानहु मजुल कज[8] ऊपर बरअलि अवलि फिर आई ॥४॥
दूधदत छवि कही न जात कछू अलि पल लय झलकाई ।
किलकत हसन दुरति प्रगटत मानो बिंधु[9] मे बिपुलताई ॥५॥
खंडत बचन देत पूरन सुख अद्भुत यह उपमाई ।
घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास बलि जाई ॥६॥

राग रामकली

देखो सखी एक अद्भुत रूप ।
एक अम्बुजमध्य देखियत बीस दधिसुत जूप ॥१॥

---

१ अमृतबिंदु । २ रहि । ३ कुलहै । ४ मधुप । ५ मणि । ६ भूमिज सो । ७ चिहुर । ८ कमल । ९ बिंदु ।

एक अवली दोय जलचर उभे अर्क अनूप ।
पचवार चढ़ि गहि देखियत कहौ कहा स्वरूप ॥२॥
सिसुगन में भई सोभा कोउ करौ विचार ।
सूर श्रीगोपाल की छवि राखो यह निरधार ॥३॥

ऐसे पद सूरदास जी नें गाये पाछें फेरि श्रीनाथ जी द्वार आयै ॥

प्रसंग ६

अब सूरदास जी नें श्रीनाथ जी की सेवा बहुत कीनी बहुत दिन ताई । ता उपरात भगवद् इच्छा जानी जो अब प्रभून की इच्छा बुलायवे की है । यह विचारिकें जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहाँ करे हैं ऐसी परासोली तहाँ सूरदास जी आयै । श्रीनाथ जी की ध्वजा कौ दंडौत करिकें ध्वजा के साम्हे सम्मुख करिकें सूरदास जी सोयै परि अंत करन यह जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू दर्शन देयगे । अब यह देह तौ थकी ताते अब या देह सो श्रीनाथ जी को दर्शन होय तौ जानियै परम भाग्य है । श्रीगुसाईं जी को नाम कृपासिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरन कर्त्ता हैं । ऐसे विचार के सूरदास जी श्रीगुसाईं जी कौ चिंतवन करत हैं । और श्रीगुसाईं जी कैसे कृपासिंधु हैं जैसे सूरदास जी उहाँ स्मरण करत हैं तैसे ही श्रीगुसाईं जी इनको क्षिनहूँ नहि भूलत है ।

श्रीनाथ जी को सिंगार होतौ ता समय सूरदास जी मणि कोठा मे ठाडे ठाडे कीर्तन करते । सो तादिन श्रीगुसाईं जी श्री

नाथ जी कौ सिंगार करत हुते और सूरदास जी कौ कीर्तन करत न देखौ तब श्रीगुसाईं जी ने पूछौ सूरदास जी नाहीं देखियत सो काहे ते। तब काहू वैष्णवन ने[1] कह्यौ जो महाराज सूरदास जी तो आज परासोली की ओडी[2] जात देखे है। तब श्रीगुसाईं जी जान्यो जो भगवदि इच्छाते अवसान समे हैं ताते सूरदास जी परासोली गये हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने अपने सेवकन सो कह्यौ जो पुष्टमार्ग को जिहाज[3] जात हैं जाको कछू लेनो होय तौ लेउ और जो भगवद् इच्छा ते राजभोग आरती पाछे रहत हैं तो मे हू आवत हो। पाछे श्रीगुसाईं जी वेर वेर सूरदास जी की खबरि मँगायो करें जो आवै सोई कहै जो महाराज सूरदास तो अचेत हैं कछू बोलत नाहीं। ऐसे करत श्रीनाथ जी के राजभोग को समय भयो।

सो राजभोग आरती करिकें श्रीगुसाईं जी श्रीगिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे। भीतरिया सेवक रामदास जी प्रभृत और कुंभनदास जी और श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद-स्वामी चतुर्भुजदास प्रभृत और सब श्रीगुसाईं जी के साथ आये। सो आवत ही सूरदास जी सो श्रीगुसाईं जी ने पूछौ जो सूरदास जी कैसे हो। तब सूरदास जी ने श्रीगुसाईं जी को दंडोत करिकें कह्यौ जो महाराज आये हो महाराज की बाट देखत हुतो। यह कहिकें सूरदास जी ने एक पद गायो। सो पद।

---

१ वैष्णव ने। २ ओरी। ३ जहाज।

राग सारंग

देखो देखौ हरि जू को एक सुभाव ।
अति गंभीर उदार उदधि प्रभू जान सिरोमनराय ॥१॥
राई जितनी सेवा को फल मानत मेरु समान ।
समझि दास अपराध सिंधु सम बूंद न एकौ जानि ॥२॥
बदन प्रसन्न कमलपद सन्मुख दीखत ही है ऐसें ।
ऐसें विमुखहू भये कृपा या मुख की[1] तब देखौ तब तैसे ॥३॥
भक्त विरह करत करुणामय डोलत पाछें लागे ।
सूरदास ऐसे प्रभू को कत दीजै पीठ अभागे ॥४॥

यह पद सूरदास जी ने कह्यौ । सो सुनिकें श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो ऐसो दैन्य प्रभू अपने सेवकन को देहि या दैन्य के पात्र एही है । तब वा वेर श्रीगुसाईं जी पास ठाडे हुते और चत्रभुजदास हू ठाडे हुते । तब चत्रभुजदास ने कह्यौ जो सूरदास जी ने भगवद् जस वर्णन कीयो परि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को जस वर्णन ना कीयो । तब यह वचन सुनिकें सूरदास जी बोले जो मे तो सब श्रीआचार्य जी महाप्रभून को ही जस वर्णन कीयो है कछू न्यारो देखूं तो न्यारो करूं परि तेरे साथ कहत हो या भांति कहिकें सूरदास जी ने एक पद कह्यौ । सो पद ।

---

१ कृपाया मुख की ।

राग बिहागरो

भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो ।
श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा बिनु सब जगमांझि अंधेरो ॥१॥
साधन और नहीं या कलिमें जासो होत निबेरो ।
सूर कहाकहि दुबिधि आंधिरो[1] बिना मोल कौ चेरो ॥२॥

यह पद कह्यो । पाछे सूरदास जी को मूर्छा आई । तब श्री गुसाईं जी कहें जो सूरदास जी चित्त की वृत्ति कहां है । तब सूरदास जी ने एक पद और कह्यो । सो पद ।

राग बिहागरो

बलि बलि बलि हो कुमर राधिका नंदसुवन जासो रति मानी ।
वे अति चतुर तुम चतुर सिरोमन प्रीति करी कैसें होत है छानी ॥१॥
वे जु धरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठानी ।
ते पुनि श्याम सहेज वे शोभा अंबर मिस अपने उर आनी ॥२॥
पुलकित अंग अंब ही है आयो निरखि देखि निज देह सयानी ।
सूर सुजान सखी के बूझे प्रेम प्रकाश भयो बिहसानी ॥३॥

यह पद कह्यो इतनो कहिकें सूरदास जी को चित श्रीठाकुर जी को श्रीमुख तामें करुणारस कें भरे नेत्र देखे । तब श्रीगुसाईं जी ने पूछो जो सूरदास जी नेत्र की वृत्ति कहां है । तब सूरदास जी ने एक पद और कह्यो । सो पद ।

---

१ आंधरो ।

राग बिहागरो

खंजन नैन रूपरस माते।
अतिसे चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते।
चलि चलि जात निकट श्रवन[1] के उलटि पुलटि ताटक[2] फँदाते।
सूरदास अंजन[3] गुण अटकें नातर अब उडि जाते ॥१॥

इतनो कहत ही सूरदास जी ने या शरीर को त्याग कीयौ। सो भगवल्लीला में प्राप्त भये। पाछें श्रीगुसाईं जी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आये। ताते सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखियै। प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ॥ ८८ ॥

---

१ श्रवण। २ ताटंक। ३ अंजन।

अथ कृष्णदास अधिकारी तिनकी वार्ता

— ० —

प्रसंग १

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गये हुते। सो श्रीरणछोर जी के दर्शन करिकें तहाँ ते चले। सो आपन[1] मीराबाई के गाँव आयो। सो वे कृष्णदास मीराबाई के घर गये। तहाँ हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सह वैष्णव हुते। सो काहू को आये आठ दिन, काहू को आये दश दिन, काहू को आये पन्द्रह दिन भये हुते। तिनकी विदा न भई हुती। और कृष्णदास नें तो आपत ही कही जो हूँ तो चलूगो। तब मीराबाई ने कही जो बैठो। तब कितनेक महोर श्रीनाथ जी को देन लागी। सो कृष्णदास नें न लीनी और कह्यौ जो तू श्रीआचार्य जी महाप्रभून की सेवक नाहीं होत ताते तेरी भेट हम हाथ ते छूवेंगे नाहीं। सो ऐसे कहि कें कृष्णदास उहाँ ते उठि चले। सो जब आगे आये तब एक वैष्णवन नें कह्यौ जो तुमने श्रीनाथ की भेट नाहीं लीनी। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो भेट की कहा[3] है परि मीराबाई के यहाँ जितने सेवक बैठे हुते तिन सबन की नाक नीचे करिकें भेट फेरी है इतने इकठौर कहाँ मिलते। यह हू जानेंगे जो एक वेर शूद्र श्री-

---

१ आपन। २ वैष्णव। ३ कहा।

आचार्य जी महाप्रभून कौ सेवक आयो हुतो ताने भेट न लीनी तो तिनके गुरु की कहा बात होयगी ॥

प्रसग २

और प्रथम सेवा श्रीनाथ जी की बगाली करते। सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें मकुट[1] काछनी हीरा के आभरन भराय दीने हैं[2] सो नित्य करते[3]। सो भेट आवती सो खरच होती, कछू सग्रह न राखते, सब खरच होय जातौ, और बगाली सेवा करते। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कृष्णदास कौ आज्ञा दीनो जो तुम श्रीगोवर्द्धन रहौ सेवा टहल करौ तब कृष्णदास अधिकारी भयै, अधिकार करन लागै।

पाछे एक दिन मथुरा कौ चलन लागै सो अडींगलों पहुँचे तब पेंडे में अवधूतदास मिले। महापुरुष हुते व्रज में फिरयौ करते सो कृष्णदास कौ मिले। तब अवधूतदास ने कह्यौ जो कृष्णदास तुम कहाँ चले। तब कृष्णदास ने कही जो मथुरा जात हौ कछू काम है। तब अवधूतदास ने पूछौ जो श्रीनाथ जी की सेवा कौन करत है। तब कृष्णदास ने कही जो बगाली करत हैं। तब अवधूतदास ने कही जो श्रीनाथ जी कौ अपनौ वैभव बढावनो है ताते तुम बगालीन को दूर क्यो नाहीं करत। सो अवधूतदास सों श्रीनाथ जी ने कह्यो जो मोकों बगाली बहुत दु ख देत हैं। सो तब बगाली श्रीनाथ जी को भोग धरते सो उनकी चुटि[4] में छोटो सो स्वरूप हुतौ

---

१ मुकट। २ दे। ३ धरते। ४ चुटिया।

देवी को सो सामने बैठावनै जब भोग सरावते। वा देवी कौं अपनी कुटिया में धर लेते ऐसे सदा करते। सो बात अवधूतदास कौ श्रीनाथ जी ने जनाई ताते अवधूतदास ने कृष्णदास सो कह्यौ जो तुम बगालीन को दूर करो। तब कृष्णदास ने कही जो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा बिना कैसे काढ़ें। तब अवधूतदास ने कह्यौ जो तुम अडेल में जायके श्रीगुसांई जी की आज्ञा ले आवौ। जैसे बने तैसे इन बगालीन को काढो।

तब कृष्णदास अडींगते फिरे। सो श्रीगोवर्द्धन आयें। तब बंगालीन सो कह्यौ जो हूँ तौ श्रीगुसाईं जी के पास आडेल जात हौं तुम श्रीनाथ जी की सेवा सावधानी सो किरयो[1]। और सब सेवक हुते तिनसो कृष्णदास ने कह्यौ जो हूँ तो श्रीगुसाईं जी के पास कछु काम है सो अडेल को जात हो तुम सावधान रहियो। ता पाछें श्रीनाथ जी सो विदा होय के अडेल को चले। सो दिन १५ में श्रीगुसाईं जी के पास आप पहुँचे सो आयके श्रीगुसाईं को दंडौत कीये। तब श्रीगुसाईं जी ने पूछो जो कृष्णदास तुम क्यो आयो। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो श्रीनाथ जी को अपनो वैभव बढ़ावनो है और बगालीन ने बहुत माथौ उठायौ है जो भेट आवत है सो ले जात हैं सो सब अपने गुरुन को देत हैं।

तब श्रीगुसाईं जी कहैं जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू असुर व्यामोह लीला दिखाई। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी पूरब को परदेश कीयौ सो एक जत्त की भेटभई। पाछें अडेल आये। तब श्रीगोपी-

१ करियो।

नाथ जी ने कही जो यह पहलो परदेश है ताते यामें आयौ सो सब श्रीनाथ जी को है श्रीनाथ जी कों विनियोग कियो चाहियै। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी दिन दश बारह रहकै पाछें श्रीनाथ जी द्वार पधारे। सो जाय पहुँचे। तब श्री गोपीनाथ जी ने दर्शन कीयो। पाछें जो लाये हुते सो सब भेट कियो। आभूखन सब जड़ाव के समराये। थार कटोरा डबरा चमचा तथी प्रभृत सब सोना रूपा के कियै। सब करिकै श्रीनाथ जी सो विदा होयकें श्रीगोपीनाथ जी अडेल आये। ता पाछें बगाली बरस एक कें भीतर सब ले गये। अपने गुरु के यहाँ जाय के दीयौ। यह बात श्रीगुसाईं जी ने कृष्णदास सों कही और कह्यौ जो बगालीन ने माथौ उठायौ परि वे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के राखे हैं सो कैसे निकलेंगे।

तब कृष्णदास ने श्रीगुसाईं जी सो कह्यौ जो महाराज श्रीनाथ जी की आज्ञा है जो बगालीन कों निकासौ ताते आप या बात मे कछू मति बोलौ। मोकों आप आज्ञा करौ तौ अपनो आप कर लेउगौ। जेसे बगाली निकसेंगे तेसे काढ़ूँगौ। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो अवश्य। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज दोय पत्र लिखयै, एक राजा टोडरमल्ल के नाम कौ एक बीरबल के नाम कौ। तब श्रीगुसाईं जी ने दोय पत्र लिख दीने राजा टोडर मल्ल कौ और बीरबल को। लिखौ जो कृष्णदास को श्रीनाथ जी द्वार भेजे हैं जो तुमसो कृष्ण दास कहैं सो करि देउगे[1]। सो पत्र लेकें श्रीनाथ

१ देउगे।

द्वारिका[1] को चले। सो आगरे आये। तहाँ टोडरमल्ल राजा बीरबल सो मिले। पत्र श्रीगुसाईं जी के हुते सो दीये। सो उन पत्र बाँचि के कृष्णदास सो कह्यौ जो तुम कहौ तेसें करें। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो अब तो मैं मथुरा जात हौं बगालीन को काढिबे को।

ता पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल्ल सो विदा होय कें श्रीनाथ जी द्वार को चले। सो मथुरा आये। तब मार्ग मे अवधूतदास मिले। तब कृष्णदास सो अवधूतदास ने कही जो कृष्णदास जी ढील कहा करि राखी है बगालीन को काढो, श्रीनाथ जी की ऐसी इच्छा है, श्रीनाथ जी को अपनो वैभव फैलावनो हैं। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा लेके आयो हौं अब जाय कें बगालीन कौ काढत हौं। इतनो कहिकें कृष्णदास चले। सो श्रीनाथ जी द्वार आये। सो वे बगाली सब रुद्रकुड ऊपर रहते सो उहाँ उनकी झोपरी हुती। सो कृष्णदास ने जराय दीनी। तब सोर भयौ। तब बगाली सेवा छोड कै पर्वत के नीचे आये। तब कृष्णदास ने पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दिये। तब बगाली देखे तो कृष्णदास नें झोपरी मे आग लगाय दीनी है। तब सब बगाली कृष्णदास सो लरन लागे। तब कृष्णदास ने द्वै द्वै चार चार लाठी सबन में दीनी।

तब वे बगाली तहाँ ते भाजे सो मथुरा आये। तब रूपसनातन के पास आयकै सब बात कही। तब इतने मे कृष्णदास

---

१ श्रीनाथ जी द्वार।

हू आय ठाडे भये । तब रूपसनातन ने कृष्णदास के ऊपर खीज कें कह्यौ जो क्यों रे शूद्र तू कोंन जो इन ब्राह्मणन को मारे । तब कृष्णदास ने कही जो हूँ शूद्र हों परि तुम हू तौ अग्निहोत्री नाहीं, तुमहू तो कायस्थ हौ । तब सनातन ने कह्यौ जो यह बात पातसाह सुनेगो तौ तू कहा जवाब देयगो । तब कृष्णदास ने कह्यौ जो हों तो नीके जवाब देउंगो परि तुमको जुवाब देत में दुख होयगो, और तुमकों जुवाब आवेगो[1] जो तुम कायस्थ होयकै इन ब्राह्मणन सों दडौत करावत हौ । तब रूप सनातन तौ चुप ह्वै रहे और बगालीन सो कह्यौ जो तुम जानो ये जानों ।

तब बगाली मथुरा के हाकिम पास गये । तब कृष्णदास जाय ठाडे भये । तब हाकिम ने कह्यौ जो भयौ सो तो भयौ परि अब इनको राखौ । तब कृष्णदास ने कह्यौ जो अब तौ इनका[2] न राखेगें । ये तौ हमारे चाकर हुते सो हमने इनकों सेवा सोपी हुती सो ये सेवा छोड़ कें क्यों आये । जो इनकी झोपरी जर गई हुती तौ हम नई छवाय देते ताते अब हम तौ न राखेंगे । ताऊपर तुम कहत हौ जो हम श्रीगुसाईं जी को लिखेंगे । वे कहेंगे तेसे करेंगे । तुम श्रीगुसांई जी को लिखौ ।

पाछें कृष्णदास श्रीनाथ जी द्वार आये और बगाली सब अपने श्रीकुंड आये । तब कृष्णदास ने श्रीगुसाईं जी को पत्र लिखौ तामें बगाली काढे सो सब समाचार विस्तार करिकै लिखे और लिख्यौ

---

१ न आवेगो । २ इनको ।

जो अब पधारिये तौ भलौ है। सो पत्र श्रीगुसाईं जी के पास अडेल आयो। ता पाछे श्रीगुसाईं जी अडेल ते चले सो श्रीनाथ जी द्वार आये। तब वे बगाली सब आये। तब श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो हमकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सेवा में राखे हुते सो कृष्णदास ने हमको काढे। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो तुम सेवा छोड़ के क्यो गये दोष तुम्हारो है ताते अब तो सेवा में न राखेंगे।

तब वा[1] बगाली बहुत बीनती करन लागे जो महाराज अब हम खांयगे कहा। तब श्री गुसाईं जी ने इनको श्री नाथ जी के बदले श्री मदन मोहन जी की सेवा दीनी और कह्यो जो इनकी सेवा तुम करियो जो आवै सो खाइयो। तब वे बगाली श्री मदन मोहन जी की सेवा करन लागे ताते उन बगालीन ने श्री गोवर्द्धन हिवौं छोड़ दीयौ। ता पाछें श्रीनाथ जी की सेवा में गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राखे। श्रीनाथ जी कौ अपनो वैभव बढ़ावनो ता सो सब भीतरियान कौ नेग और सब सेवकन को नेग जो जा भांति श्रीनाथ जी ने कह्यो ता भांति श्रीगुसाईं जी ने बांधे। अब तो श्रीनाथ जी की सेवा प्रनालिका ते होन लागी और कृष्ण दास अधिकार करन लागे।

प्रसग ३

बहिर[2] श्रीनाथ जी ने कृष्णदास को आज्ञा दीनि[3] जो श्याम ति[4] को लेकें ताज पसावज ले कें तू परासोली मे आईयौ।

---

१ वे। २ बहुरि। ३ दीनी। ४ कुमरि।

सो श्यामकुमर आछौ मृदग बजावते । सो श्रीनाथ जी की सैन आरती उपरात अनोसर भयो तब कृष्णदास श्यामकुमर के घर गये । तब कृष्णदास ने श्यामकुमर सो कही जो श्री नाथ जी ने आज्ञाकरी है सो मृदग ले के परासोली चलौ । तब श्यामकुमर ने कह्यौ जो मोहू को श्रीनाथ जी ने आज्ञाकरी है ताते चलिये । तब श्यामकुमर मृदग ले कें आयौ ।

तब कृष्णदास और श्यामकुमर ये दोऊ जने परासोली सो देखे तौ श्रीनाथ जी स्वामिनी जी सहित विराजे हैं । तब श्री नाथ जी ने श्यामकुमर सो कह्यो जो तू तौ मृदग बजाय, और कृष्णदास सो कह्यौ जो तू कीर्तन करि और श्रीनाथ जी और श्रीस्वामिनी जी नृत्य कीयौ । तहाँ कृष्णदास ने पद गायौ । सो पद ।

राग केदारौ ।

श्री वृषभानुनन्दनी नाचत गिरधर सग
लाग डाट उरपतिरपरास सग राखौ ।
झपताल मिल्यौ राग केदारो
सप्तसुरन अब धर तान रग राख्यौ ॥
पाई सुख सिद्धि भरतकाम विविध रिद्धि
अभिनव दल लसत सुहाग हुलास रग राख्यौ ।
वनिता सत जूथ सग लिये निरखत क्यो सधस[1]
चद बलिहारी कृष्णदास सुधर[2] रग राखौ ॥

---

१ सधस । २ सुधर ।

यह पद कृष्णदास ने गायो । श्यामकुमर ने मृदंग बजायौ । श्रीनाथ जी और स्वामिनी जी नृत्य कीयौ । ताते श्रीमहाप्रभू जी की कानि ते श्रीनाथजी कृष्णदास के ऊपर ऐसी कृपा करत हुते ।

प्रसंग ४

और कृष्णदास नें बहुत पद कीये । तब एक समय सूरदास जी नें कृष्णदास सो पूछो जो तुम पद करत हो ता में मेरी छाया है । तब कृष्णदास ने सूरदास जी सो कह्यौ जो अब के ऐसो पद करूँ जो जामें तुम्हारी छाया न आवे । तब कृष्णदास एकांत में बैठिकें एकाग्रचित्त करिकें नयौ पद करन लागे जो जामें तीन तुक को[1] कीयो और चौथी तुक बने नाहीं । तब घडी दोयलो विचारे जो आगें तुक चलत नाही तो भलो फेरि प्रसाद लेकें विचारेंगे । सो जा पत्र में लिखत हुते सो पत्र तथा द्वाति लेखनी उहाई धरि कै प्रसाद लेवे को उठे ।

जब कृष्णदास प्रसाद लेवे को बैठे तब श्रीनाथ जी ने आप तीन तुक वा पत्र मे अपने श्रीहस्त सो लिख दीये । कृष्णदास ने आधो पद कियो हुतो ताको आप श्रीनाथ जी पूरो करिकै आप तो पधारे । ता पाछें कृष्णदास प्रसाद लेकें आये तब देखो तो श्रीनाथ जी पूरो पद करिकै श्रीहस्त सो लिखि गये हैं । सो देख के कृष्णदास बहुत प्रसन्न भयो और कहें जो सूरदास जी आवें तो पद सुनावे । तब उत्थापन के समय सूरदास जी दर्शन को

१ तो ।

आये तब कृष्णदास ने कह्यौ जो सूरदास जी नयो पद एक मेनें कीयो है तामे तुम्हारी छाया नाहीं धरी। तब सूरदास जी ने कह्यौ जो कहौ सुनो तो जानो। तब पद कह्यौ। सो पद।

राग गौरी

आवत बने कान्ह गोपबालक संग
नेंधुकी खुर रेणु छुरतु[1] अलकावली॥
भौंहें मनमथ चाप बक्र लोचन बान
सीस सोभित मत्त मयूर चद्रावली॥
उदित उडुराज सुन्दर सिरोमणि बदन
निरखि फूली नवल जुवती कुमुदावली॥
अफूण सकुच अधर बिबफल हसात
कहत कछुक प्रकटित होत कुद रसनावली।
श्रवण कुडल भाल तिलक बेसरि नाक
कठ कौस्तुभ मणि सुभग त्रिवलावली॥
रत्न हाटक खचित पुरसि पदिक निपाति
बीच राजत सुभ पुलक मुक्तावली॥

अथ श्रीनाथ जी कृत।

वलय ककण बाजूबद आजानुभुज
मुद्रिका कर दल बिराजत नखावली॥
कण[2]तर मुरलिका मोहित अखिल विश्व
गोपिका जनमसि असथित प्रेमावली॥

---

१ छुरित। २ कृष्ण।

कटि क्षुद्र घटिका जटित हीरामयी
नाभि अम्बुज वलित भृंगरोमावली।
धायक वहुक चलत भक्त हित जानि पिय
गड मण्डल रुचिर श्रमजल कणावली॥
पीत कौसय परिधाने सुन्दर अग चरण
नुपुरवाद्य गीत सबदावली॥
हृदय कृष्णदास गिरवर धरण लाल की
चरण नख चन्द्रिका हरति तिमिरावली॥

यह पद कृष्णदास नें सूरदास जी के आगे कह्यौ। सो सूर-
ास जी तीन तुक तांहि तो बोले नाहीं। और तीन तुक के आगे
हन लागे तब सूरदास जी ने कृष्णदास सो कह्यौ जो कृष्ण-
ास मेरे तुमसो वाद है और प्रभून सो वाद नाहीं मे प्रभून की
ानी पहिचानत हों। तब कृष्णदास चुप कर रहे। ताते कृष्णदास
से भगवदीय हैं।

प्रसग ५

और एक समय श्रीनाथ जी के भडार मे कछू सामग्री चाहि-
ात हुती। सो कृष्णदास गाडा लेकें आगरे कौ आये। सो आगरे
के बाजार मे एक वेश्या नृत्य करत हुती। ख्याल टप्पा गावत हुती
ोर भीर हुती। सब लोग तमासो देखत हुते। सो कृष्णदास
ाजार में तमासे में जाय ठाडे भये। तब भीर सरक गई तब
ह वेश्या कृष्णदास के आगें नृत्य करन लागी। सो यह वेश्या

बहुत सुन्दर, और गावै बहुत आछौ, नृत्य तैसोई करे। सो कृष्ण दास वा वेश्या के ऊपर रीझे और मन में कहैं जो यह तौ श्रीनाथ जी के लायक है। ता पाछे वा वेश्या को दशमुद्रा तौ वहाँ ही दिये और कही जो रात्रि को समाज सहित आइयो। ता पाछें कृष्णदास उहाँ हवेली मे उतरे। सो सामग्री चाहियत हुती सो सब लेकै गाडा लदाय सिद्धि करवायौ।

ता पाछे रात्रि पहर गई। तब वेश्या समाजसहित आई। ता पाछें नृत्य भयो गान भायो। वापै कृष्णदास बहुत रीझें सो रुपैया सत एक दिये। तब वा वेश्या सो कह्यौ जो तेरौ गान हू आछौ और नृत्य हू आछौ परि हमारो सेठ है सो तेरे ख्याल टप्पा ऊपर रीझेगो नाहीं ताते हौं कहो सो गाइयौ। ता पाछें कृष्णदास ने एक पूरबी राग में पद करि कें सिखायौ। ता पाछें दूसरे दिन वा वेश्या को साथ ले के चले सो आगरे ते आये। पाछे तीसरे दिन श्रीनाथ जी द्वार आये। सामग्री सब भडार मे धराई। ता पाछे जब उत्थापन को समय भयो तब कीर्तनियाँ काहू को बागे[1] न दीये। तब वा वेश्या को समाज सहित ले गये। श्री गुसाँई जी मदिर मे ठाड़े श्रीनाथ जी को मूढा[2] करत है और मणि कोठा में वेश्या नृत्य करन लागी और यह पद गायौ॥ सो पद॥

राग पूरबी॥

मोमन गिरधर छवि पर अटक्यौ।
ललित त्रिभगी अगन परि चलि गयौ तहाँई ठटक्यौ॥ १॥

१ बागे सैनान। २ मूढा।

सजल श्यामघन चरण नीलह्वै फिर चित अनित न आनि तन भटक्यौ।
कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावरि यह तन जग सिर पटक्यौ ॥२॥

यह पद वा वेश्या ने गायौ। सो जब गावत गावत पिछली तुक आई जो "कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावर यह तन जगसिर पटक्यौ" इतनो कहत मात्र वा वेश्या के प्रान ततकाल निकसि गये और दिव्य स्वरूप धरि के श्रीनाथ जी की लीला मे प्राप्त भई। और वा वेश्या के समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तौ या तें जीविका हुती अब हम कहा खायगे। तब कृष्णदास नें कह्यो जो तुम क्यो रोवत हौ चलौ नीचे खायवे को देऊँ। तब उन समाजिन को नीचे लायकें कृष्णदास नें सहस्र रुपया द विदा किये।

कृष्णदास ने अपने मनते समर्पी ताते श्रीनाथ जी ने वा वेश्या को अगीकार करी। ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कानि तें सेवक की समर्पी वस्तु या भाति सो अगीकार करत हैं।

प्रसग ५

और कृष्णदास को गगाबाई सो बहुत स्नेह हुतो सो श्रीगुसाँई जी को न सुहावतो। सो एक दिन श्रीगुसाँई जी श्रीनाथ जी कों भोग समर्पित हुते सो सामग्री ऊपर गगाबाई की दृष्टी परी ताते श्रीनाथ जी आरोगे नाहीं। परि भोग तौ समर्प्यौ। ता पाछे समय भयौ तब भोग सरायो। तब आरती करि अनोसरि करि कें श्रीगुसाँई जी आप नीचे पधारे। तब सेवक आदि

भीतरिया सब ने प्रसाद लीयौ। तब श्रीगुसाँई जी आप तौ भोजन करिकें पोढे। तब श्रीनाथ जी नें भीतरिया कों लात मारि कें जगायौ और वासूं कहैं जो हूँ तौ भूखो हूँ। तब वा[1] भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज श्रीगुसाँई जी नें भोग समर्प्यौ है और तुम भूखे क्यो रहै। तब श्रीनाथ जी ने कही जो राजभोग मे तो गगाबाई की दृष्टि परी हुती ताते राजभोग आरोग्यौ नाहीं।

तब वा भीतरिया उठि श्रीगुसाँई जी के पास आयौ। सो श्री गुसाँई जी भोजन करिकें पोढे हुते। तब भीतरिया ने आयकें श्रीगुसाँई जी के चरण दाबे। तब श्रीगुसाँई जी चौंकि उठे तब देखें तौ श्रीनाथ जी को भीतरिया है। तब वा भीतरिया सों पूछो जो यहां इतनी वेर कहां आयौ है। तब वा भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज आज श्रीनाथ जी भूखे हैं मोको लात मारिके जगायौ और कह्यौ जो आज तौ मैं भूखौहौं। तब मेने श्रीनाथ जी सो कह्यौ जो महाराज भोग तो श्रीगुसाँई जी ने समर्प्यौ है तुम भूखे क्यो रहै। तब श्रीनाथ जी ने कही जो सामग्री पर तो गगाबाई की दृष्टि परी ताते मे नाहीं आरोग्यौ।

तब श्रीगुसाँई जी सुनत ही ततकाल स्नान करिकें श्रीगुसाँई जी के साथ ही आयौ। तब श्रीगुसाँई जी नें वा भीतरिया सो कही जो भात और बड़ी करो जो तत्काल सिद्ध होय आवे। तब भात और बडी करी सो तत्काल सिद्ध भयो। तब श्रीनाथ जी कौ भोग समर्प्यौ। पाछें भीतरिया रसोई करिकें स्नान करिकें पर्वत

---

१ वह।

ऊपर आये। तब श्रीगुसाईं जी की आज्ञा भई जो राज भोग की सामग्री तो भई सिद्धि ता पाछें राज भोग सेन भोग इकठौरो समर्प्यो। ता पाछें समय भयो। तब भोग सराय सेन आरती करी। तब श्रीनाथ जी को पोढायें भोग सरयो हो सो प्रसाद एक डबरा में उघाई रह गयो। तब रामदास भीतरिया ने कही जे पहले भोग समर्प्यो हुतो सो उहा ही रह गयो। तब श्रीगुसाईं जी डबरा में ते ठलाय के लेत उतरे। पाछें सब सेवकन कौं वह बडी भात को महाप्रसाद रचक रचक बांटि दीनो। ता पाछे श्री गुसाईं जी आप हू आरोगे। सो वह बडी भात को प्रसाद अति अद्भुति भयो। अति अलौकिक स्वाद भयो। सो श्री गुसाईं जी आप सरायो। तब कृष्णदास ठाडे हुते। तब कृष्णदास ने कही जो महाराज आप ही करन हारे आप ही आरोगन हारे तो क्यो न उत्तम होय। तब श्रीगुसाईं जी ने हस के कही जो यह तुम्हारे ही कीये भोगत हैं।

प्रसग ७

अब जो यह बात श्रीगुसाईं जी ने कही जो यह तुम्हारे ही कीये फल भोगत हैं सो यह बात सुनिकें कृष्णदास ने श्रीगुसाईं जी सो बिगाडी। तब श्रीगुसाईं जी सो श्रीकृष्णदास ने कही जो तुम पर्वत ऊपर मति चढो। तब श्रीगुसाईं जी आप तो तहां ते फिरे सो परासोली मे आय रहे। तब मन मे विचारो जो कृष्णदास कहा मने करेगो परि श्रीनाथ जी की इच्छा ऐसी है

सो श्रीनाथ जी की इच्छा जानि कें कछू बोले नाहीं। सो आप परासोली मे रहै। सो परासोली में ध्वजा के साम्हे बैठि कै विज्ञप्ति कियौ। और श्रीगुसाईं जी तीन दिन तौ श्रीगोवर्द्धन रहते और तीन दिन श्रीगोकुल रहते। तब ते परासोली आय रहै। तब श्रीगुसाईं जी के मंदिर की खिरकी परासोली की ओर पडती ताके साह्मे बैठिते। तब श्रीनाथ जी आप खिरकी में आय दर्शन देते। तब यह जानि कै कृष्णदास नें परासोली की ओर की खिरकी बनवाय दीनी तब ते श्रीगुसांई जी गोकुल ते जब परासोली आवते तब रामदास जी सब सेवक आदि दे श्रीनाथ जी के राजभोग आरती करिकै अनोसरि करिकै श्री-गुसाईं जी के दर्शन को परासोली आवते। सो आय कें चर णोदक लेय पाछें प्रसाद लेते। सो कृष्णदास को सुहावतौ नाहीं। और सब सेवक श्रीगुसाईं जी के दर्शन विना महाप्रसाद कैसे लेंय। परि सेवकन सो कृष्णदास की चले नाहीं।

और श्रीगुसाईं जी एक पत्र लिखिकें रामदास भीतरिया को देते और कहते जो श्रीनाथ जी को दे दीजै। सो पत्र श्रीनाथ जी को देते। श्रीनाथ जी विज्ञप्त उत्तर लिखिकें रामदास को देते। सो रामदास श्रीगुसाईं जी को देते। तब श्रीगुसाईं जी वा पत्र को वांचि कै पानी मे पी जाते। या भांति सो छै महीना बीते परि श्रीगुसाईं जी नें श्रीनाथ जी को अधिकारी वैष्णव जानि कै और श्रीआचार्य जी महाप्रभून को सेवक जानि कछु न कह्यौ। परि श्री नाथ जी के विरह को स्नेह बहुत करते। या भांति छै महीना भये।

तब एक दिन राजा बीरबल आय निकसे। तब ता दिन तो श्रीगुसाईं जी परासोली हुते। श्रीगिरधर जी घर हुते। तब राजा बीरबल ने श्रीगुसाईं जी कौ खबर कराई। तब पोरियान नें कही जो श्रीगुसाईं जी तौ परासोली है श्रीगिरधर जी घर है। तब राजा श्रीगिरधर जी के दर्शन को आये। तब बीरबल सो श्रीगिरधर जी ने कही जो कृष्णदास अधिकारी काका जी कौ श्रीनाथ जी के दर्शन नाहीं करन देत, सो काका जी को खेद बहुत होत है, काका जी परासोली मे जाय दर्शन करत है। तब बीरबल ने श्रीगिरधर जी सो कह्यो जो अब हूँ जाय के कृष्णदास को काढ़ूँगो। यो कहि कें राजा बीरबल श्रीगिरधर जी सो बिदा होय कें मथुरा आये और श्रीगुसाईं जी परासोली ते श्रीगोकुल आये। और बीरबल ने पाच सो मनुष्य भेजे और कह्यौ जो कृष्णदास को पकरि लावौ। सो वे मनुष्य श्रीगोवर्द्धन आय कें कृष्णदास को पकरि लाये। सो वे बीरबल ने कृष्णदास को बंदीखाने में दीनो। तब श्रीगिरधर जी सो कहवाय पठाई जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीनो।

तब श्रीगिरधर जी ने श्रीगुसाईं जी सो कही जो कृष्णदास को बंदीखाने मे दीने हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यो जो हाय हाय श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवकन को ऐसो कष्ट। तब श्रीगुसाईं जी सो कह्यौ जो तुमनें कह्यौ होयगो। तब श्रीगिरधर जी ने कह्यो जो हमने तो बीरबल सो सहज ही कह्यौ हुतो जो काका जी को दर्शन

नाहीं करन देते सो काका जी को बहुत खेद होत हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो भोजन जब करैगो तब कृष्णदास आवेगो। तब श्रीगिरधर जी ततकाल घोड़ा मँगाय असवार होय कें मथुरा को आये। तब वीरबल सो कह्यौ जो काका जी भोजन नाहीं करत ताते कृष्णदास को छोड़ देउ। तब राजा वीरबल नें कृष्णदास श्रीगिरधर जी के हवाले कर दियौ। तब श्रीगिरधर जी ततकाल संग ले श्रीगोकुल आये। तब श्रीगुसाईं जी ने सुनी जो गिरधर जी कृष्णदास को साथ लेके आवत हैं सो श्रीगुसाईं जी ठकुरानी घाट ऊपर पहुँचे। और वा ओर ते कृष्णदास आये सो श्रीगुसाईं जी को दर्शन कियौ, और दंडौत करी, और एक नयौ पद करिकें गायौ। सो पद॥

राग केदारो

श्री विट्ठल जू के चरण की बलि॥
हमसे पतित उधारन कारन परम कृपाल आये आपन चलि॥
उज्जल अरुण दया रग रंजित दश नख चंद्र विहरत मन निरदलि॥
सुभगकर सुखकर शोभन पावन भक्ति मुदित ललित कर अंजलि॥
अति सेमरदुलि सुगंध सुशीतल परत त्रिविधि ताप डारत मल॥
भजि कृष्णदास वार एक सुधि करि तेरो कहा करेगो रिपुकल॥

यह पद श्रीगुसाईं जी के आगे गायौ। पाछें श्रीगुसाईं जी कृष्णदास को अपने घर ले आये। पाछे कृष्णदास सो श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो उठौ भोजन करौ। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो

महाराज आप भोजन करिये पाछें में झूठन लेउगौ। तब श्री-गुसाईं जी भोजन को बैठे। तब कृष्णदास नें एक पद और गायौ॥ सो पद॥

राग कान्हरौ

ताही कौ सिर नाइये जौ श्रीवल्लभसुत पदरज रति होय॥
कीजे कहा आन ऊचे पद तिनसो कहा सगाई मोय॥
सार सार विचार मनौ करि श्रुति वचन[1] गोपन लियो निचोय॥
तहाँ नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो विलोय॥
जाके मन मे उग्र भरम है श्रीविट्ठल श्रीगिरधर दोय॥
ताकौ सग विषम विष हू ते भूलिहू चातुर कर है जिन कोय॥
जिन प्रताप देखि अपने चख असन सार जोभिदेन तोहि॥
कृष्णदास ते सुरते असुर भये असुरते सुर भये चरणन छोह[2] ॥४॥

यह पद सुनिकै श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये। पाछें श्री-गुसाईं जी भोजन करिकै पधारे तब कृष्णदास सो कह्यौ जो अब जाउ भोजन करौ। तब कृष्णदास भीतर गये। तब श्रीगिर धर जी नें श्रीगुसाईं जी की झूठन को पातर कृष्णदास के आगे धरी। तब कृष्णदास नें महाप्रसाद लीनो। पाछें बीडा दोय दिये। रात्रि को कृष्णदास वहाँई सोय रहे।

ता पाछें पिछली रात्रि घड़ी दोय रही तब श्रीगुसाईं जी उठे। देहकृत करि कें स्नान कियो। श्रीनवनीत प्रिया जी के मगला के

---

१ वच। २ छोहि।

दर्शन करि कें बाहिर पधारे। तब श्रीनाथ जी द्वार पधारवे की तैयारी किये। तब घोडा दोय मगाये एक घोडा ऊपर श्रीगुसाईं असवार भये एक घोडा ऊपर कृष्णदास असवारी कीये और श्रीगोकुल ते चले। सो श्रीनाथ जी द्वार दिन पहर सवा एक चढे जाय पहुँचे। सो वहाँ श्रीनाथ जी को राजभोग आयो हुतो सो श्रीगुसाईं जी ततकाल स्नान करिकै ऊपर पधारे। और श्रीगुसाईं जी विज्ञप्ति पत्र परासोली ते लिखते सो रामदास भीतरिया के हाथ पठावते। ताको प्रति उत्तर श्रीनाथ जी पत्र मे लिखि के श्रीगुसाईं जी को पठावते। सो श्रीगुसाईं जी जल मे घोर पिजाते। सो पिछले दिन को पत्र श्रीनाथ जी के हस्ताक्षर को सो श्रीगुसाईं जी राखे हुते। सो पत्र साथ ही ले आये हुते।

पाछें श्रीनाथ जी को राजभोग आयो हुतो। सो समय भयो। तब श्रीगुसाईं जी भोग सरायवे को पधारे। तब श्रीगुसाईं जी को देख के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और पूछो जो नीके हो। तब श्रीगुसाईं जी कहें जो तुमको देखे सोई दिन नीके हैं। पाछें परस्पर दोऊ जने मुसिक्यायें। पाछें श्रीगुसाईं जी राजभोग सरायो पाछें वह पत्र हुतो सो झापी में धरयो। पाछें रागभोग के दर्शन खुले। तब कृष्णदास ने कीये। पाछे श्रीगुसाईं जी राजभोग आरती करि अनोसरि करि नीचे पधारे। पाछे रसोई करि भोग समर्पित भोजन करि श्रीगुसाईं जी पोढे। सो उत्थापन ते घड़ी दोय पहले उठे। पाछें उत्थापन को समय भयो तब स्नान करि ऊपर पधारे। सो सखनाद करवायो। श्रीनाथ जी क उत्थापन

भये पाछें सेन आरती उपरान दर्शन करि कें कृष्णदास को श्रीनाथ जी के सनिधान बुलायौ और कहौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करो और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सो करियौ। तब कृष्णदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान एक पद गायौ। सो पद ॥

राग कान्हरौ

परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन, करत कृपा निज हाथ दे माथै ॥
जे जन शरण आये अनुसरहो गहि सो पति श्रीगोवर्द्धन नाथै ॥
परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धरा[1] ते साथै ॥
भजि कृष्णदास काज सब सरहीं जो जानें श्रीविट्ठल नाथैं ॥२॥

यह पद गायौ और वीनती कीनी जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करो। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ तुमारौ अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। पाछें कृष्णदास को बिदा कीयौ। पाछे श्रीनाथ जी को पोढाय कें श्रीगुसाईं जी नीचे उतरे। श्रीगुसाईं जी परम दयाल कृष्णदास को कृत कछू मन में न आनो। श्रीआचार्य जी के सेवक जानि अनुग्रह कीयौ। पाछे श्रीगुसाईं जी दिन दोय रहे पाछे श्रीगोकुल पधारे। फिर कृष्णदास श्रीगुसाईं जी की आज्ञा ते अधिकार करन लागे ॥

प्रसंग ८

सो बहुत बरस लो भली भाँति सो अधिकार कीयौ। पाछें

---

१ धारा।

एक वैष्णव ने कृष्णदास सों कही जो मोकों एक कूआ बनवा-वनो है, और मोको अपने देश को जानों है। ताते द्रव्य तुमको दे जात हों सो तुम बनवाय दीजों। तब कृष्णदास ने कही जो आछो। तब वह वैष्णव तीन सौ रुपैया देकें अपने देश को गयो। तब कृष्णदास ने उन रुपैयान में ते एक सौ रुपैया एक कुल्हरा में धरि कें आम के वृक्ष के नीचे गाड दिये। कहों जो दोय से रुपैया लाग चुकेंगे तब इनको काढ़ेंगे। सो आछे मुहूर्त देखिके रुद्रकुंड ऊपर कूआ खुदायो। तब कितनेक दिन में वह कूआ मोहताई बन के तयार भयो और दोय से रुपैया लगे। मठोठा बाकी रह्यो।

तब उत्थापन के दर्शन करिके कृष्णदास कूआ देखन को गये। सो हाथ में आसा हुतो। सो आसा टेक के कूआ के ऊपर ठाडे भये। सो वह आसा सरक्यो। तब कृष्णदास कूआ में जाय परे। तब तो मनुष्य दोय कूआ में उतरे। सो बहुतेरो ढूंढ़ें परि कृष्णदास को शरीर हू न पायो। तब सब मनुष्य उहां ते फेरि आये। सो ता समय श्रीगुसाईं जी श्रीनाथजी को सेन भोग धरि कें मजूप विराजे हुते। और रामदास श्रीगुसाईं जी के पास बेठे हुते। ता समय काहू ने आय कें कह्यो जो महाराज कृष्णदास ने कूआ बनवायो है। सो कृष्णदास देखन गये हुते, सो आसा टेकि कें कूआ के मोहडे ऊपर ठाडे हुते, सो आसा सरक्यो सो कूआ में गिरि परे। और मनुष्य दोय कृष्णदास को ढूंढवे को उतरे, सो बहुतेरो ढूंढे परि शरीरहू न पायो, कहा जानियै कहा भयो। तब

रामदास जो कहैं जो "अधोगच्छतितामसा" तब श्रीगुसाईं जी कहे जो रामदास ऐसें न कहि।

अब जो कृष्णदास कूआ मे गिरे सो शरीर न मिल्यौ ताको कारन कहा। सो ताको कारन यह जो कृष्णदास मे कोई अलोकिक जीव हुतो सोतो श्रीनाथ जी की सेवा में प्राप्त भयौ। और कृष्णदास ने या सरीर सो श्रीगुसाईं जी की अवीज्ञा करी है। जो यह शरीर अलौकिक जीव भुगतनो हो। सो कूआ में गिरत मात्र कृष्णदास को शरीर लोकिक सब होय कें पूछरी की और एक कृष्ण[1] है पीपर को तहा प्रेत होय कें रह्यौ भोग भुगतन को। ताते कृष्णदास को शरीर कूआ मे न मिल्यो। श्रीगुसाईं जी की अवीज्ञा ते कृष्णदास की यह गति भई जो प्रेत होय के पूछरी की और पीपर के वृक्ष ऊपर बैठे रहत हैं।

प्रसग ९

और एक समय श्रीनाथ जी की भैंस खोय गई हुती। सो गोपीनाथ ग्वाल और पांच ग्वाल पूछरी की ओर ढूढ़वे को गये हुते। सो गोपीनाथ देखें तो पूछरी की ओर श्रीनाथ जी खेलत हैं और एक पीपर ऊपर कृष्णदास प्रेत ह्वै के बैठे हैं। तब कृष्णदास ने गोपीनाथ ग्वाल सो कही जो अरे भैया मेरी विनती श्रीगुसाईं जी सो करियो और कहियो जो कृष्णदास ने कह्यौ है जो हों तुम्हारो अपराधी हो ताते मेरी यह अवस्था है। हूँ श्रीनाथ जी के

---

१ वृक्ष।

पास हूँ तौ मेरी गति होत नाहीं ताते मेरो अपराध क्षमा करो तो मेरी गति होय। और बाग मे एक आम के वृक्ष के नीचे कूलहरा में एक सौ रुपैया गड़े हैं सो काढ़िकें वा कूआ को मठोठा वाको रह्यौ है सो बनवाओ तो मेरी गति होय। सो गोपीनाथ ग्वाल नें यह बात श्रीगुसाईं जी के आगे कही जो महाराज कृष्णदास अधिकारी ने यह बीनती करी है। तब गुसाईं जी ने आम के नीचे तें रुपैया लाय कें मठोठा कूआ कौ बनावायौ। तब कृष्णदास की गति भई।

कृष्णदास को प्रेत जोन में श्रीनाथ जी दर्शन देते ताकौ कारन यह जो श्रीनाथ जी के सन्निधान श्रीगुसाईं जी ने कृष्णदास सो कह्यौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करो और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सो करियों। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो तुम्हारो अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। सो श्रीनाथ जी की कृपा तें श्रीनाथ जी ने अपराध क्षमा करयौ। सो प्रेत जोन में दर्शन देते। परि स्पर्श न कीयौ। जो स्पर्श होय तो उद्धार होय। सो उद्धार तौ श्रीगुसाईं जी के हाथ है। कृष्णदास श्रीनाथ जी सो कहते जो महाराज तुम मोकों दर्शन देत हौ, मो सो बोलत हौ, और मे प्रेत हौं ताते मेरो उद्धार क्यो नाहीं करत। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो हूँ तोको दर्शन देत हौं बोलत हौं सो तौ श्रीगुसाईं जी के बचन के लियै। नाहीं तो प्रेत जोन मे दर्शन नाहीं देतौ और बोलतोहू नाहीं और उद्धार तौ श्रीगुसाईं जी के हाथ है।

तेने श्रीगुसाईं जी को अपराध कीयौ है ताते श्रीगुसाईं जी उद्धार करेंगे तब होयगो।

ता पाछें श्रीगुसाईं जी आप परम कृपाल कृष्णदास के ऊपर दया आई जो अब तौ बहुत दिन भये हैं ताते अब उद्धार होय तो भलौ। तब श्रीगुसाईं जी ध्रुवघाट ऊपर आय कें कृष्णदास को करम करवाय उद्धार कीयौ। तब कृष्णदास को उद्धार भयौ और लीला में प्राप्ति भयौ। और श्रीगुसाईं जी कहें जो कृष्णदास ने तीन बात आछी करी। एक तौ अधिकार कीयौ सो ऐसो कियौ जो फेरि ऐसो न करो, दूसरे कीर्तन किये सो अद्भुत कीये, और तीसरे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक होयकें सेवाहू ऐसी करीजो कोऊ न करेगो। ताते वे कृष्णदास श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं। ताते इनकी वार्ता कहां ताईं लिखिये॥ वैष्णव॥ ९१॥

इति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक परम कृपापात्र चौरासी मुख्य वैष्णवन की वार्ता स०॥

अथ परमानन्ददास कनोजिया ब्राह्मण तिनकी वार्ता

— ० —

प्रसग १

सो परमानददास जी परम भगवल्लीला मयव्याती[1] श्रीठाकुर जी के परम सखा है। सो जब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भये तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की आज्ञा ते दैवी जीवन के उद्धारार्थ और तैसेंई श्रीआचार्य महाप्रभून को श्रीठाकुर जी को परकार सब प्रगट भयो और आप श्रीगोवर्द्धन पर्वत मे प्रगट भये। सो गोपालदास जी वल्लभाख्यान में गाये हैं जो अनेक जीव कृपा करें "वादेशातर परवेस"। ताते परमानददास जी कौ जन्म कन्नोज में हैं कनोजिया ब्राह्मण के घर भयो। सो वे परमानददास जी बहुत योग्य भये और कवि भये, भगवदकृपा के पात्र भये। कीर्तन बहुत आछौ गावते ताते परमानददास जी के सग समाज बहुत रहतो। आप स्वामी कहावते आप सेवक करते।

सो भगवद् इच्छा ते एक समय परमानददास जी कन्नोज ते आप प्रयाग[2] को आये सो प्रयाग मे उतरे। सो वहाँ कीर्तन बहुत आछें

---

१ मध्य वाती। २ प्राग।

गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवे कों आवते। और अडेलते कार्यार्थ लोग बहुत आवते सो इनके कीर्तन सुनिकें पार अडेल में जाय कहते जो परमानददास जी इहाँ प्रयाग मे आये हैं सो कीर्तन बहुत आछें गावत हैं। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जल घरिया कपूर छत्री, सो उनके राग ऊपर बहुत आसक्ति, परि वे अव काश नाहीं पावें जो परमानददास जी के कीर्तन सुनिवे कूं आवे। सेवा मे अवकाश नाहीं जो प्राग जाय सकें।

सो एक दिन एक वैष्णव प्राग ते अडेल में आयौ। सो वाने कह्यौ जो आज एकादशी है सो परमानददास जी आज जागरन करेंगें। सो यह सुनि कें वा जलघरिया नें अपने मन मे विचारो जो आज परमानद जी के कीर्तन सुनिवे को चलनों। सो वे छत्री कपूर जलघरिया अपनी सेवा सो पहुँच कें रात्रि को अपने घर आये। सो घर आय कें अपने मन मे विचार कीयौ जो या वेर नाव तौ मिलेगी नाहीं ताते कहा कर्तव्य। परि वे पेरवे में भले निपुन हुते सो मन में विचारी जो पैर कें पार जैये। पाछें अपने घर ते चले सो श्रीयमुना जी के तीर उपर आय ठाडे भये। तब पर्दनी पहर कें वस्त्र सब माथे सो बांधि कें श्रीयमुना जी मे पैर कें प्रयाग आये। पाछें वस्त्र पहर कें जा ठौर परमानद स्वामी उतरे हुते तहाँ आयै, सो इनको कछू मिलाप तौ परमानद स्वामी सो हुतौ नाहीं जहाँ और सब जने बैठे हुते तहाँ एऊ जाय बैठे। परि एउ श्री-आचार्य महाप्रभून के सेवक है सो सब कोऊ जानत हुते। ताते सबन नें इनको आदर कर कें बैठा रो सो ये बैठे।

ता पाछें परमानद स्वामी नें कीर्तन को प्रारम्भ कीयो। सो परमानद स्वामी ने विरह के पद गाये। सो विरह के पद काहे को गाये सो प्रथम इनको स्वरूप कहि आये है। कही जो यह लीला मध्यायाती श्रीठाकुर जी के परमानद स्वामी परम सखा हैं। सो इहाँ सो बिछुरे और इहाँ तो अब ही श्रीठाकुर जी को दर्शन नाहीं भयो और श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन अब होयगो। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को यह सिद्धान्त है जो भगवदीन[1] को सग होय तो श्रीठाकुर जी कृपा करें। ताही के लिये श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिकें अपने कृपापात्र भगवदीय के अन्त करणन में प्रेरना करिकें परमानद स्वामी ये इहाँ पठाये। सो ये श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनको श्रीठाकुर जी एक छन हूँ नाहीं छोडत इनको सग ही रहत हैं। काहे तें सूरदास जी गाए है "भक्ति विरह करत करुणामय डोलत पाछें पाछें।" और जगन्नाथ जोसी की हु वार्ता में लिख्यो है जो जब राजपूत नें तलवार चलाई तब श्रीठाकुर जी नें हाथ पकस्यौ ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवकन के सदा श्रीठाकुर जी निकट ही रहत है। ताते परमानद स्वामी ने विरह के पद गाये। सो पद।

राग विहागरो

व्रज के विरही लोग विचारे।

विन गोपाल ठगे से ठाड़े अति दुर्वल तन हारे॥ १॥

---

१ भगवदीयन।

मात जसोदा पथ निहारत निरखत साँझ मकारे।
जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत अखियन बहुत[1] पनारे॥२॥
यह मथुरा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे।
परमानद स्वामी बिनु ऐसे जैसे चंदा बिनु तारे॥३॥
और पद गायौ सो पद॥

राग बिहागरो

सब गोकुल गोपाल उपासी।[2]
जो गाहक साधन के ऊधौ सो सब बचन ईस पुर कासी॥१॥
जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि अब छोड़त क्यों रति जासी।
अपनी सीतलता तहा छोड़त यद्यपि बिधु राहु है ग्रासी॥२॥
किह अपराध जोग लिखि पठयो प्रेम भजन ते करत उदासी।
परमानद असी को बिरहन मागें मुकि गुनरासी॥३॥

राग कान्हरो

कौन रसिक है इन बातन को।
नद नदन बिन कासो कहिये सुनिरी सखी मेरे दुखिया मनको॥१॥
कहा वे यमुना पुलिन मनोहर कहा वह चंद सरद राति कौ।
कहा वे मद सुगंध अमल[3] रस कहा वे षट् पद जलजातन कौ॥२॥
कहा वे सेज पौढ़िबो बन कौ फूल बिछौना मृदु पातन कौ।
कहा वे दरस परस परमानद कोमल तन कोमल गात[4] कौ॥३॥

---

१ बहुत। २ नोट :—यह पद सूरसागर में सूरदास के नाम से आया है।
३ अमल। ४ गातन।

राग कान्हरो

माई को मिलिबे नद किसोरे।
एक बार को नैन दिखावें मेरे मन को चोरे॥ १॥
जागत जाम गनत नहीं खूटत क्यो पाऊँगी भोरे।
सुनरी सखी अब केसें जी जे सुन तमचर खग रोरे॥ २॥
जो यह प्रीति सत्य अतर गति जिन काहू बन होरे।
परमानद प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे॥ ३॥

इत्यादिक पद विरह के ऐसे परमानद स्वामी ने सगरी राति गाये। पाछिली घडी चारि रात रही तब जो जो जागरन मे आये हुते सो सब अपने घर को गये। तैसेंई श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक एक जलघरिया कपूर हैं परमानद स्वामी सो 'जैसी कृष्ण स्मरण' कहि कें चले। और परमानद स्वामी के कीर्तन सुनि कें बहुत प्रसन्न भये। और परमानद स्वामी सो कह्यौ जो जैसे हमने सुने हुते ताते अधिक देखे। तुम परम भगवद् अनुग्रह पूरण हो। ये जलघरिया क्षत्री कपूर महाप्रभून के परम भगवदीय है। ए जो चलि आये सो परमानद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिवे कों आये है नातर भगवदीय काहे को काहू के घर जाय।

और यह ऊपर कहि आये हैं जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू के निकट ही रहत है। सो याको हेत यह जो निकट रहत हैं तो इन जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद मे बैठिकें श्रीनवनीत प्रिया जी नें

परमानद स्वामी के पद सुने । जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की मर्यादा है जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के अनुग्रह बिना श्रीठाकुर जी कृपा न करे । सो उन जलघरिया क्षत्री कपूर ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभून को परम अनुग्रह है । ताते श्री नवनीत प्रिया जी इनकी गोद मे बेठि के परमानद स्वामी के पद काहे को सुनने पड़े । सो ताको हेत यह जो भगवदीय परमानद स्वामी के ऊपर श्री नवनीत प्रिया जी अनुग्रह करिवे कों आप पधारे हैं तातें सुने । सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री परमानद स्वामी सो जे[1]सी कृष्ण करि के चले । सो श्री यमुना जी के तीर ऊपर आये । सो वहाँ आय के विचार कीयौ जो नाव की बाट देखै तो अवार होयगी और सेवा छूटेगी और श्रीआचार्य जी महाप्रभू भी खीजेंगे ताते जैसे पैर के आये हुते तैसे ही चले । सो पैर के पार गये । सो पार आवत ही स्नान करिकें अपनी सेवा मे तत्पर भये ।

पाछें वहाँ प्राग मे परमानद स्वामी की रात्रि कें जागरन के श्रमित सो आँखि लगी, निद्रा आई । सो इतने मे स्वप्न आयौ । सो स्वप्न में देखे जो जेसे रात्रि के जागरन मे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री बेठे हैं और उनकी गोद मे श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन भये । और स्वप्न मे श्रीनवनीत प्रिया जी परमानद स्वामी सों कहैं और परमानद स्वामी की निद्रा खुली सो वा

---

१ जे (जय श्रीकृष्ण) ।

श्रीमुख को कोऊ सौंदर्य कोटि कंदर्पलावण्य परमानद स्वामी ने देख्यौ। सो स्वप्न में तो हृदय में धरि लीयौ और मन मे चटपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो। तब यह मन मे विचारो जो यह दर्शन उन श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक क्षत्री जलधरिया बिना न होयगो, ताते होय तो उनके पास जैये। जो उनसो मिलें तब कार्य सिद्ध होय।

ऐसो परमानद स्वामी ने अपने मन मे विचार कीयो। सो ततकाल प्राग ते अडेल कु चले। सो श्रीयमुना जी के तीर ऊपर आय ठाडे भये। सो प्रात काल को समय भयो। सो प्रथम नाव चली तापर बैठि कें पार उतरे। तब आगें जाय कें देखें तो श्रीआचार्य जी महाप्रभू जी स्नान सध्या वंदन करत हैं। सो परमानद स्वामी को श्रीमहाप्रभू जी को कैसो दर्शन भयो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र सो। श्रीगुसाईं जी वल्लभाष्टक मे लिख्यो है "सोयस्तुत कृष्ण एवच" ऐसो दर्शन भयो। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलधरिया क्षत्री कपूर की गोद मे श्रीठाकुर जी काहे को बैठे यह कारण जिनके माथे ऐसे प्रभू विराजत है। पर परमानद स्वामी के मन मे यह जो क्षत्री कपूर मिले तो आछी। सो काहे ते जो जिनके माथे ऐसे प्रभू और जिनके दर्शन ते श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन भयो। ता पाछे श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुख सो कह्यो जो परमानद कछू भगवदीय जस वर्णन करि। तब परमानद स्वामी नें विरह के पद गाये॥ सो पद॥

राग सारग

कौन वेर भई चलेरी गोपाले ।
हौं ननसार गई हौं[1] न्योते घार घार बोलत ब्रज बोले[2] ॥१॥
तेरौ तन को रूप कहां गयौ भामिन अरु मुख कमल सुखाय रह्यौ ।
सब सौभाग्य गयौ हरि के सग हृदय सों कमल विरह दह्यौ ॥२॥
को बोले को नेन उघारे को प्रति उत्तर देहि विकल मन ।
जो सर्वस्व अक्रूर चुरायौ परमानद स्वामी जीवन धन ॥३॥

राग सारग

जिय की साधन जिय ही रही री ।
बहुरि गोपाल देखि नहीं पाए बिलपत कुञ्ज अहीरी ॥१॥
एक दिन सेज समीप यह मारग बेचन जात दहीरी ।
प्रीत के लिये दान मिस मोहन मेरी बाँह गहीरी ॥२॥
बिन देखें घडी जात कलप सम विरहा अनल दहीरी ।
परमानद स्वामी बिन दर्शन नेन न नींद बहीरी ॥३॥

राग सगम

यह बात कमल दल नैनन की ।
बार बार सुधि आवत रजनी बहु दुरि देनी सैनी सैन की ॥१॥
यह लीला यह रास सरद को गोरज रजनी आवनि ।
अरु यह ऊची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि ॥२॥
बसन कुञ्ज में रास खिलायो विथा गमाई मन की ।
परमानद प्रभू सों क्यो जीवे जो पोखी मन वेन की ॥३॥

---

१ ही । २ बाले ।

या भांति परमानद स्वामी नें विरह के पद गाये। सो सुनिके परमानद स्वामी सो कह्यौ जो कछू बाललीला वर्णन करि। तब परमानद स्वामी नें कह्यौ जो महाराज मे कछू समझत नाहीं। तब श्रीमहाप्रभून नें कह्यौ जो स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे। तब परमानद स्वामी नें श्रीमहाप्रभून सों पूछ्यो जो महाराज आपको सेवक विरक्त कहा हैं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो कछू टहल करत होयगो।

तब परमानद स्वामी स्नान को गये। सो तब परमानद स्वामी आगे जायकें देखें तो यमुना जी की गागर लैकें वह कपूर क्षत्री आवत हैं। तब निकट आये सो साम्हें मिलै। सो उनको देखकें परमानद स्वामी बहुत प्रसन्न भये और परमानद स्वामी नें उनको नमस्कार करी और कह्यौ, जो रात्रि को जागरन में आप पधारे हुते, सो श्रीठाकुर जी नें आपकी गोद मे बेठि के मेरे कीर्तन सुने, सो आपकी कृपा ते श्रीठाकुर जी ने मोंसो कह्यौ, जो में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलधरिया क्षत्री की गोद मे बेठि कें तेरे कीर्तन सुने हैं। और आपकी कृपा ते मेरो भाग्य सिद्ध भयो है सो आवत ही तुम्हारी कृपा ते मोको दर्शन भयो। इतनी बात सुनि के उन जलधरिया ने कह्यो जो ऐसे मति कहो। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू सुनेंगे तो खीजेंगे सो सेवा छोड के क्यो गये ताते यह बात मति कहो। तब इतनी सुनिके परमानद स्वामी को आश्चर्य भयो और कह्यौ जो ए धन्य हैं जिन ऊपर श्रीठाकुर जी को ऐसो अनुग्रह है और ये अपनो स्वरूप छिपावत हैं। पाछें परमानद स्वामी तो

स्नान को गये और जलघरिया जल की गागर लेके मंदिर मे गयो।

पाछें परमानद स्वामी श्रीयमुना जी मे स्नान करिकें तत्काल आप श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे आय ठाडे भये। तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो परमानद स्वामी आगे आउ बेठी[1]। तब परमानद स्वामी आप आगे आय बेठे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानद स्वामी को नाम सुनायो। पाछें मंदिर मे पधार कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान परमानद स्वामी को अनुक्रमणिका सुनाई। काहे ते जो प्रथम परमानद स्वामी सो श्री आचार्य महाप्रभून नें अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो भगवद्यश वर्णन करि सो परमानद स्वामी ने विरह को पद गायो। तब श्रीआचार्य महाप्रभून ने कह्यो जो परमानद स्वामी बाल लीला गाउ तब परमानद स्वामी ने कह्यौ जो राज मे कछू समझत नाहीं। सो परमानद स्वामी नें काहेते कह्यौ जो ऊपर कहि आये हैं। जो ये श्रीठाकुर जी सो बिछुरे हैं बिछुरे के दुख की तो स्फुर्ति रही और सयोग जो सुख भयो ताको बिसमरन भयो। जो काहे ते जो सब सब लीला विशिष्ट पूरण पुरुषोत्तम तो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के घर पधारे है।

सो परमानददास को श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें अनुक्रमणिका सुनाई तब सब लीला की स्फुर्ति भई। और अनुक्रमणिका सुनाई ताको कारण कहा। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू को नाम

---

१ बेठि।

है "श्रीभागवत पीयूष समुद्र मथन तम"। सो श्रीभगवत कौ श्रीगुसाईं जी अमृत को समुद्र करिकें वर्णन किये हैं। सो अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत रूपी समुद्र श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें परमानद स्वामी के हृदय में धर्यौ। ताते वाणी तो सब अष्टकाव्य की समान है और ये दोऊ परमानद स्वामी और सूर दास जी सागर भये। सो याते जो श्रीभागवत रूपी अमृत सागर को स्वरूप इनके हृदय में श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने धर्यौ। सो काहे ते जो सब कोऊ सूरसागर और परमनदसागर कहते। अब परमानददास सो श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीमुख सो कहैं जो बाललीला वर्णन करि। सो परमानद जी ने तत्काल बाललीला के पद करि कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान गाये॥ सो पद॥

राग सामरी

माई री कमलनैन श्याम सुन्दर झूलत हैं पालना।
बाललीला गावत सब गोकुल की ललना॥ १॥
अरुण तरुण कमल नख मनि जस जोती।
कुंचित कच मकराकृत[1] लटकत गजमोती॥ २॥
अँगूठा गहि कमलपान मेलत मुख माही।
अपनो प्रतिबिम्ब देखि पुनि पुनि मुसिकाही॥ ३॥
जसुमति के पुन्य पुञ्ज वार वार लाले।
परमानद स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले॥ ४॥

---

१ मकराकृत।

यह पद सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये। फेरि और पद गायौ ॥ सो पद ॥

राग बिलावल

जसौधा तेरे भाग्य की कही न जाय।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्ल्लभ सो प्रघटे[1] हैं आय ॥ १ ॥
शिव नारद सनकादिक महामुनि मिलि वे करत उपाय।
ते नदलाल धूर धूसर वपु रहत गोद लिपटाय ॥ २ ॥
रतन जडित पोढाय पालने वदन देखि मुसिकाई[2]।
झूलौ मेरे लाल बलिहारी परमानद जस गाई[3] ॥ ३ ॥

राग बिलावल

"मणिमय आगन नन्द के खेलत दोऊ भैया" सो ऐसें बाल लीला के पद परमानददास ने गाये। सो सुनिकें श्रीआचार्य जी बहुत प्रसन्न भये।

सो परमानददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के पास हैं[4]। सो परमानददास को अपने कीर्तन की सेवा दीनी। सो परमानददास जी श्रीनवनीत प्रिया जी को नित्य नये पद करिकें भाँति भाँति के सुनावते। तब अनोसर होतो तब परमानददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें पदकीर्तन करे। श्रीआचार्य जी महाप्रभू नित्य कथा कहते सो परमानददास जी नित्य सुनते। सो ताही प्रसग के कीर्तन करिकें परमानददास जी

---

१ प्रगटे। २ मुसिकाय। ३ गाय। ४ है।

सुनावते। सो एक दिन परमानददास जी नें श्रीठाकुर जी के चरणारविंद को महात्म सुन्यौ। सो चरणारविंद के महात्म को कीर्तन करि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को सुनायौ। सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये॥ सो पद॥

राग कान्हरौ

चरण कमल वंदौ जगदीश गोधन के संग आए।
जे पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर लाए॥ १॥

यह पद सम्पूरण करि के परमानददास जी नें गायौ और श्रीआचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप को और प्रार्थना को पद गायौ॥ सो पद॥

राग कान्हरौ

"यह मांगों गोपी जन वल्लभ"॥

यह परमानद स्वामी ने सम्पूर्ण करि कें गायौ। सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू अपने मन में जाने जो यह मिस कर के परमानददास जी या पद को सुनाय कें व्रज के दर्शन की प्रार्थना कीनी है ताते व्रज को अवश्य चलनो॥

प्रसग २

श्रीआचार्य जी महाप्रभू यह विचार करें जो व्रज को पधारने को उद्यम कीयो। सो दामोदरदास हरिमानी कृष्ण मेघन परमानददास जी और यादवदास हलवाई तथा रसोई की सामग्री

सग लेकें चले और सब वैष्णव सग ले आप श्रीआचार्य जी महाप्रभू व्रज को पधारे।

सो व्रज को आवत परमानददास को गाम कन्नौज आयो तब परमानददास ने श्रीआचार्य जी महाप्रभून सो वीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पधारिये आपके अनुग्रह ते मेरौ भाग्य सिधि भयौ है अब मेरे घर हू पावन करिये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप अतर्यामी कृपानिधान भक्त मनोरथ पूरक आप कृपा करि के पधारें। सो परमानददास के घर आछी भाँति सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें रसोई करि श्रीठाकुर जी को भोग समर्यो। पाछें भोग सराय कें आप प्रसाद लीयौ पाछें आप गादी तकियान के ऊपर विराजे। तब परमानददास सो कह्यो जो कछू भगवद्यश गावौ। तब परमानददास ने मन मे विचारी जो या समय श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मन तो व्रज मे श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के पास है ताते विरह के पद गाऊँ। सो विरह को पद ऐसो गायौ जामे छिन हूँ कलप समान जाय॥ सो पद॥

राग सोरठ

हरि तेरी लीला की सुधि आवै॥
कमल नेन मन मोहनी मूरत मन मन चित्र बनावै॥१॥
एक बार जाय मिलत माया करि सो केसे विसरावै।
मुख मुसिक्यान वक अविलोकन चाल मनोहर भावै॥२॥
कबहुक निरड तिमर आलिंगन, कबहुक पिक सुर गावे।
कबहुक सभ्रम कासि कासि कहि सगहीन उठि धावै॥३॥

कबहुँक नैन मूदि अन्तर गति मणि माला पहरावै।
परमानद श्याम ध्यान करि ऐसे विरह गवावै ॥४॥

यह पद परमानददास ने गायो। सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मूर्छा आई। सो जा लीला को पद परमानददास नें गायो ता लीला विषै श्रीआचार्य जी महाप्रभू मग्न भये। सो देहानुसधान न रह्यौ। सो तीन दिन लो श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मूर्छा रही। सो सबरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करे सो वेसे ही बैठे रहे। चतुर्थ दिन के प्रात काल श्रीआचार्य जी महाप्रभू सावधान भये तब सब वैष्णव प्रसन्न भये। तब परमानददास जी मन में डरपे जो फेरि ऐसो पद न गाऊँ। फेरि सूधे पद गाए। सो पद ॥

राग बिभाग

माई री हो आनद गुन गाऊँ।
गोकुल की चिन्तामणि माधौ जो मांगो सो पाऊँ ॥ १ ॥
अब[1] ते कमलनेन ब्रज आये सकल सपदा बाढ़ी।
नदराय के द्वारे देखौ अष्ट महासिद्धि ठाढ़ी ॥ २ ॥
फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनु दुहि दीजै।
मारग मेघ इद्र बरषा मे कृष्ण कृपा सुख लीजे ॥ ३ ॥
कहत जसोधा सखियन आगें हरि उत्तकर्ष जनावै।
परमानददास को ठाकुर मुरली मनोहर भावै ॥ ४ ॥

---

१ अब।

और इ पद गायौ। सो पद।

राग गौरी। "विमल जस वृन्दावन के चद्र को"

यह पद सम्पूरण करिके गायौ। फेरि और गायौ।

राग सारग। "चलिरी नदगांव जाय वसियै"

यह पद सम्पूर्ण करिकें गायौ। सो पद मे यह कह्यौ जो चलरी नदगाँव जाय वसियै।

सो श्रीमहाप्रभू जी सुनि के व्रज कों पधारे। सो श्रीगोकुल आवत ही श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीयमुना जी के तीर ऊपर छोकर के नीचे वेठक मे तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू विराजे। और एक वैठक श्रीद्वारिका नाथ जी के मदिर के पास हैं सो भीतर की वैठक है। सो रात्रि के विश्राम तथा रसोई की ठोर है। उहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभून को घर हुतो। जब आप श्रीगोकुल पधारते तब उहाई उतरते। सो यह भीतर की वेठक है। पाछें सब वैष्णवन ने श्रीयमुना जी स्नान कीये और परमानद दास जी इ श्रीयमुना जी को जस वर्णन कीये॥ सो पद॥

राग रामकली

श्रीयमुना जी यह प्रसाद हौं पाऊँ।
तिहारे निकट रहो निसवासर रामकृष्ण गुन गाऊँ॥ १॥
मजन विमल पावन जल चिंता कुलख वहाऊँ।
तिहारी कृपा भान की तनया हरि पद प्रीत वढ़ाऊँ॥ २॥
विनती करौं यही वर मागौ अधम सग विसराऊँ।
परमानददास फलदाता मगन गोपाल लडाऊँ॥ ३॥

राग रामकी । "श्रीयमुना जी दीन जान मोहि दीजे[1]"

सो ऐसे पद सम्पूरण करिकें परमानदरास जी नें बहुत गाये । श्रीआचार्य जी आगें तीर विषें गाये ।

ता उपरात श्रीमहाप्रभू जी नें परमानददास को बाललीला विशिष्ट श्रीगोकुल के दर्शन करवाये । सो परमानददास को ऐसौ दर्शन भयौ सो सब व्रज भक्त श्रीयमुना जल की गागरि भरि ले जाते हैं और श्रीठाकुर जी मार्ग में खेलते हैं और व्रज भक्तिन को जल की गागरि उठाय देते हैं और उनकी कछु[2] तोरे है या भांति सो दर्शन भये । सो तेसोई पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें गायौ ॥ सो पद ॥

राग बिलावल

जमुना जल घर भरि चली चद्रावलि नारी ।
मारग खेलत मिलि घनश्याम मुरारी ॥ १ ॥
नैनन सो नैना मिले मन रह्यौ है लुभाई ।
मोहन मूरत जिय बसी पग धरो न जाई ॥ २ ॥
तब की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेट ।
परमानद ऐसी मिली जैसी गुड में चेंट ॥ ३ ॥

राग सारग

लाल नेक टेको मेरी बैया ।
औघट घाट चढ्यौ नही जाई रपटत हो कालिन्दी महिया ॥ १ ॥

---

१ लीजे । २ कछुकी ।

यह पद सपूरण करकें ऐसे पद गाये। ता पाछें परमानद ने बाल लीला के पद बहुत गाये और श्रीगोकुल को स्वरूप जामे आवै ऐसो पद गायो ॥ सो पद ॥

राग कान्हरो

गावत गोपी मधु ब्रज बानी।
जाके भुवन बसत त्रिभुवनपति राजा नद यसोधा[1] रानी ॥१॥
गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी।
गावत गुन गधर्व काल शिव गोकुल नाथ महातम जानी ॥२॥
गावत चतुरानन जदुनायक गावत शेष सहस्र मुखरास।
मन क्रम वचन प्रीत यह अम्बुज अब गावत परमानददास ॥३॥

यह पद परमानददास नें गायो। पाछें और पद गायो सो पद ॥

राग कान्हरो

जसुमति ग्रह आवत गोपी जन ॥
बासर ताप निवारन कारन बारबार कमल मुख निरखन ॥१॥
चाहत पकरि देहरी उलघन किलक किलक हुलसत मन हीं मन।
लोन उतारि दोऊ करि वारी फेर वारत[2] तन मन धन ॥२॥
लेन उठाय चापत हीयो भरि प्रेम दिवस[3] लागे दृग ढरकन।
चली ले पलना पोढावन को अरुकसाय[4] पोढे सुन्दर घन ॥३॥
देत असीस सकल गोपी जन चिरजीवो लोग गज मुन।
परमानददास को ठाकुर भक्त वत्सल भक्त मनरजन ॥४॥

१ यशोधा। २ वारत। ३ दिवस। ४ अरकसाय।

राग हमीर । " चितै चितै चित धारयौ री माई "

यह पद सपूरण करि कें गायै । सो ऐसे पद परमानददास ने बहुत गायै ।

ता पाछें श्रीगोकुलनाथ जी के दर्शन करि कें परमानददास श्रीगोकुल ऊपर बहुत आसक्ति भये । सब ऐसे पद गायै जा मे श्रीआचार्य जी महाप्रभून की प्रार्थना कीनी मोको श्रीगोकुल मे आय कें चरणारविंद के नीचे राखो । नितप्रति प्रभून के दर्शन करौ[1] । सर्व लीला विशिष्ट पूरन पुरुषोत्तम हैं । और यह पद गायो ॥ सो पद ॥

राग कान्हरो

यह मागौ जसोदानदन ॥
चरण कमल मन मन मधुकर या छवि नेनन पाऊँ दर्शन ॥१॥
चरण कमल की सेवा दोऊ तन राजत बिजुलता घन नदन ।
वृषभानु नदिनी मेरे उर बसु[2] प्रान जीवन धन ॥२॥
वृज बसिबो जमुना अचिबो श्रीवल्लभ को दास यही पन[3] ।
महाप्रसाद पाऊँ हरि गुन गाऊँ परमानददास जीवन धन ॥३॥

राग कान्हरो

" जब लगि जमुना गाय गोवर्द्धन ।
तब लग गोकुल गाँव गुसाईं " ॥

यह पद सम्पूर्ण करिकें प्रार्थना के पद गाये । तब कितनेक दिन श्रीआचार्य जी महाप्रभू गोकुल मे विराजे । ता पाछें

१ करौ । २ बसु । ३ मन ।

सब वैष्णवन कौ सग लेकें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों पधारे ॥

प्रसग ३

अब श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे। सो आवत ही परमानददास नें श्रीनाथ जी कौ श्रीमुख देखि कें वहाँ के वहाँ रहे। तब श्रीमहाप्रभू जी नें श्रीमुख सो कह्यौ जो परमानददास कछू भगवत लीला गावो। तब परमानददास अपने मन में विचारे जो कहा गाऊँ। तब ऐसे विचारो जो जामे प्रथम अवतार लीला, पाछें चरणारविंद की वदना, पाछें भगवद्गुर्णन को स्वरूप, ता पाछें बाल क्रीडा, ता पाछें श्रीठाकुर जी को महात्म। ऐसौ पद परमानददास नें गायौ ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

मोहन नदराय कुमार।
प्रगट ब्रह्म निकुंज नायक भक्त हित अवतार ॥१॥
प्रथम चरण सरोज वन्दो श्याम घन गोपाल।
मकर कुडल गड मडित चारु नेन विसाल ॥२॥
बलिराम सहित विनोद लीला से कर हेत।
दास परमानद प्रभू हरि निगम बोलत नेत ॥३॥

और असक्ति को पद गायौ ॥

राग पूरबी

मेरौ माई माधो सो मन लाग्यौ।
मेरौ नेन और कमल नैन को इकठौरौ करि मान्यो[1] ॥ १ ॥

---

१ मान्यो।

लोक वेद की कानि तजी में न्योती अपने आन्यौ।
एक गोविंद चरण के कारण वेर सबन सो ठान्यो॥ २॥
अबको[1] भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यो जेसे पान्यो।
परमानद मिली गिरधर सो हूं पहली पहचान्यो॥ ३॥

ऐसे पद परमानददास ने गाये ता पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू सेन[2] आरती करि श्रीनाथ जी कों पोढाये। तब अनोसर करि आप नीचे पधारे। तब परमानददास हू नीचें आय बैठे। तब रामदास भीतरया नें परमानददास को महाप्रसाद दूध पठायौ। सो दूध परमानददास जी लेवे लागे तब तातो लाग्यौ तब परमानददास जी नें सीरो करि कें लीयो। ता पाछें रामदास नें पूछौ जो तुमको महाप्रसाद दूध पठायौ हौ सो आयौ। तब परमानददास ने कही जो हां आयौ परि दूध बहुत तातो हुतो सो ऐसो दूध श्रीठाकुर जी कैसें आरोगत हू ताते दूध तो सुहावतो भलो। तब रामदास ने कह्यो जो बहुत आछौ आप भगवदीय हौ जैसे आज्ञा करोगे तेसे करेंगे। तब सकारें सब सेवक ध्यान करि कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा में तत्पर भये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें श्रीगिरिराज ऊपर पधारे तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को जगाये। तब वा समय परमानददास जी आय कें श्रीठाकुर जी के जगायवे को पद गायो। सो पद।

---

१ क्यों। २ सेन।

राग विभास

जागो गोपाल लाल मुख देखों तेरौ।
पाछें ग्रह काज करो नित्य नेम मेरौ ॥ १ ॥
विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयौ भानु।
गुजत अग पकज वन जागिये भगवान ॥ २ ॥
द्वारे ठाड़े वदीजन करत हैं पुकार।
वस प्रसग गावत हरिलीला सार ॥ ३ ॥
परमानद स्वामी दयाल जगत मगल रूप।
वेद पुराण पठत महिमा लीला अनूप ॥ ४ ॥
यह पद परमानद ने गायौ। फिर कलेऊ को पद गायौ।

सो पद।

राग रामकली

पिछवारे ह्वै ग्वालन टेर सुनायौ।
कमल नेन प्यारो करत कलेऊ कोटन सुख लों आयौ ॥१॥
अरी मैया गैया एक वन व्याय रही हैं वछरा उहांहीं बसायौ।
मुरली लई न लकुटिया न लीनो अरवराय कोउ सखा न बुलायौ ॥२॥
चकत भई नद जू की रानी सत्य आय किधों अपनो पायौ।
फूलो न अग समात रसवर त्रिभुवन पति सिर छत्र जो छायौ ॥३॥
मिलि वेठे सकेत सघन वन विविध भांति कीयौ मन भायौ।
परमानद सयानी ग्वालनि उलटि अग गिरधर पिय प्यायौ ॥ ४ ॥

ऐसे पद परमानददास ने गायौ। ता पाछें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के मगला के दर्शन खुले तव परमानददास नें श्रीगोवर्द्धन

नाथ जी सो पूछो जो आप तातो दूध क्यो आरोगत हो। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो ये हमको समर्पत है सो आरोगत है। ता पाछें परमानददास जी नित्य कीर्तन करिकें सुनावते।

तब ता समय एक राजा दर्शन को आयो सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कें दर्शन करे तब फेरि आयकें रानी सो कही जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ठाकुर बहुत सुदर हैं ताते तू जायकें दर्शन करि आउ। तब रानी नें कही जो जैसे हमारी रीति है सो होय तो दर्शन करें। तब राजा नें कही जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे को परदा है तब रानी ने मानी नही। तब राजा ने श्रीआचार्य जी महा प्रभून सो बीनती कीनी जो महाराज में तो रानी सो बहुत कहत हो परि वह आवत नाहीं ताते आप कृपाकरिकें दर्शन करवावो तो वह करे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कही जो यहाँ ले आवो जो प्रथम वाको एकांत में दर्शन करवावेंगे ता पाछें और लोग दर्शन करेंगे। तब राजा अपनी रानी को लिवाय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करवाये सो सब लोग सरकि गये। तब रानी दर्शन करिवे लागी तब इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ने सिंह पौर के किवाड़ खोल दिये। सो सब भीर दौर के रानी के ऊपरि परी सो रानी के सब वस्त्र निकस परे और बहुत लज्जित भई। तब राजा ने रानी सो कही जो मेने तोसो पहिले ही कह्यो हुतो जो श्रीठाकुर जी के दर्शन में काहे को परदा है। ये व्रज के ठाकुर हैं इननें काहू को परदा राख्यौ नाहीं। तब वा समय परमानददास जी ने पद गायौ।

राग देवगधार

" नेनि यह खेलवे की बानि ॥

मदन गोपाल लाल काहू की राखत नाहि न कानि " ॥१॥

यह एक तुक परमानददास जी नें गाई हुती । तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो परमानददास एसे कहौ जो 'भली यह खेलवे की बानि' । तब परमानददास जी नें एसो ही पद गायो । सो पद ॥

राग देवगधार

भली यह खेलवे की बानि ॥

मदन गोपाल लाल काहू की नाहिन राखत कानि ॥१॥

अपने हाथ ले देत है चनघर दूध दही घृत सानि ॥

जो बरजो तो आंख दिखावै पर धन को दिग दान ॥२॥

सुनि री जसोधा सुत के करतब पहले मांट मथानि ॥

फोरि डारि दधि डारि आजर[1] मे कोन सहै नित हानि ॥३॥

ठाडी देखत नद जू की रानी मूदि कमल मुख हानि ॥

परमानददास जानत हैं बोलि बूझि धो आनि ॥४॥

यह पद परमानददास ने गायौ । ता पाछें कितेक पद गाये । जो जो लीला श्रीठाकुर जी ने करी सो ता ता लीला के पद परमानददास नें गायौ ।

सो एक दिन भगवदीय रामदास जी कुभनदास जी सब वैष्णव मिलि कें परमानद जी जहाँ रहत हुते तहाँ आये । सो

---

१ आजर ।

भगवदीय आये जानि कें परमानददास जी बहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भगवदीय आये हैं सो मेरो बडौ भाग्य है और आज मेरो भाग्य सिद्धि भयौ है। सो काहे ते श्रीठाकुर जी भगवदीय के हृदय में सदा सर्वदा विराजत हैं। ताते भगवदीय की कृपा होय तौ श्रीठाकुर जी अनुग्रह करें। जो ये सब भगवदीय मेरे घर पधारे हैं सो प्रथम भगवदीय की न्योछावरि करौ। जब यह विचार कें परमानददास ने ऐसे ही पद कह्यो। सो पद।

राग हमीर

आये मेरे नद नदन के प्यारे॥
माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे॥१॥
प्रेम सहत बसत मन मोहन नेकहु टरत न टारे॥
हृदय कमल के मध्य विराजत श्रीव्रजराज दुलारे॥२॥
कहा जानो कौन पुण्य प्रगट भयौ मेरे घर जो पधारे॥
परमानद प्रभु करो न्योछावर वारवार हौं वारे॥३॥

यह पद भगवदीयन की भेट करि अपने आये भगवदीयन को विदा किये। ता पाछें ऐसी रीति सो परमानददास नें श्रीनाथ जी की भली भांति सो सेवा कीनी। सो वे परमानददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता कहां ताई लिखिये॥ प्रसग॥ ३॥ वैष्णव॥ ६६॥

अथ कुम्भनदास गोरवा तिनकी वार्ता

— ० :—

प्रसंग १

सो वे कुभनदास जी श्रीगोवर्द्धन पर्वत के पास जमुनावतौ गांव है तामे रहते। सो जमुनावतौ नाम वा गांव को काहे ते है जो जमुना जी को प्रवाह सारस्वत कल्प मे याके निकट हुतौ ताते जमुनावतौ नाम वा गांव को है। तामे कुभनदास जी रहते और परासोली चदसरोवर के ऊपर उन कुभनदास जी की धरती हुती सो वहां खेती करते। सो कुभनदास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के परम सखा हुते और कृपापात्र हुते। सो अब ही श्रीगोवर्द्धन नाथ जी प्रगट होय के श्रीमहाप्रभू जी को बुलावेंगे तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयगे।

सो एक समय श्रीआचार्य जी महाप्रभू पृथिवी परिक्रमा करत झारखड मे पधारे। सो झारखड मे श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा दीनी जो हम गोवर्द्धन मे तीन दमन हैं नागदमन इन्द्रदमन देवदमन। तिनके मध्य में हम देवदमन हैं सो मेरो नाम है। ताते तुम आयके हमको पधरावौ और हमारी सेवा को पुकार पगट करौ। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा उहां ही राखि कें वेग पधारे। तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, गोविंद दुबे, जगन्नाथ जोसी, रामदास ये पांच वैष्णव सग हुते। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धन की तरहटी आय

कें सद्दू पांडे के चोतरा ऊपर बिराजे। सो आगें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के प्रागट्य में यह सद्दू पांडे भवानी नेरा श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकी श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा सोपी। और व्रजवासी व्रज मे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक बहुत भये। और कुभनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून की शरण आये।

सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को एक छोटो सो मदिर सिद्धि करवायो। तामें श्रीनाथ जी को पधराये और रामदास चोहान कों सेवा की आज्ञा दीनी। और सब व्रजवासी लोग दूध दही माखन लावते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी आरोगत हुते। और रामदास को जो भगवदीच्छा तें जो आप प्राप्त होय सो भोग धरते और आप प्रसाद लेते। और जो व्रजवासी लोग श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व है सो तुम सब बातन सो यत्न राखियो और सेवा में तत्पर रहियो। और कुभनदास कों और सब सेवकन को श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो तुम देवदमन के दर्शन किये बिना महाप्रसाद मति लीजियो। तब या भांति सो आज्ञा करि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा झारखड में राखी हुती। अब कुभनदास जी नित्य श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कृपा तो श्रीगोवर्द्धन नाथ के दर्शन को आवते। सो कुभनदास कीर्तन बहुत नीके गावते। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें

कुभनदास जी कों नाम सुनायौ और ब्रह्म सबंध करवायौ। तब कुभनदास जी नित्य नये पद करि कें श्रीनाथ जी कों सुनावते। और श्रीनाथ जी कुभनदास जी के घर पधारते, और बहुत क्रीडा करते, खेलते वार्ता करते और बहुत कृपा कभनदास जी के ऊपर करते। अब रामदास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा करन लागे।

सो एक समय मलेच्छ को उपद्रव भयो। सो यहाँ मानिकचद पांडे, सद्दू पाडे, रामदास चोहान, कुभनदास सब मिलि कें विचार कियौ जो यह मलेच्छ आयौ है सो यह धर्म को द्वेषी है सो कहा कर्तव्य है। तब सब ने ही कही जो यामें कहा कर्तव्य कहा पूछनो, अपनो विचारौ कहा होत है, ताते श्रीनाथ जी को पूछौ जो महाराज कहा करें। तब श्रीनाथ जी ने आज्ञा दीनी जो हमको यहाँ ते ले चलो हम यहाँ ते उठेंगे। तब सबन नें पूछौ जो महाराज कहाँ पधारोगे। तब आपनें श्रीमुख सो कह्यो जो टोड के घने में चलेंगे। तब एक भेसा मगायौ ता पर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को बेठाये। तब एक ओर ते तो रामदास पकरें रहै और एक ओर ते कुभनदास पकरे रहै और सब सेवक सग चलें जात है। तहाँ घने मे कांटे बहुत हुते सो उहाँ कांटेन मे बेठे सो बस्त्र सबन के फटि गये और सरीर मे कांटे लगे दुख बहुत पायो। सो घने में एक तालाव हुतौ तहाँ रूखन को एक चौक है तहाँ बड़े रूख नीचे श्रीनाथ जी विराजे। सो कछूक सामग्री सग्रह हुती सो रामदास ने भोग धरि जल को करुआ भरि कें आगे धरि कें सब वैष्णव

बैठे। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें कुमनदास सों कह्यौ जो कुमनदास जी कछू गावौ। तब कुमनदास जी तौ मन में कुढ रहे हुते तब एक पद नयो करि कें गायो ॥ सो पद ॥

राग सारग

भावत है तोय टोड को घनौ ॥
काटे लगे गोरवू बूढे फटयो जात यह तनौ ॥१॥
सिंहो कहा लोकटी को डर यह कहा बानक बन्यौ ॥
कुमनदास प्रभू तुम गोवर्द्धनधर यह कोन राड ढेडनीको जन्यौ ॥

यह पद कुमनदास ने गायौ। सो सुनि के श्रीनाथ जी मुसिक्याय कें चुप करि रहे। इतने में श्रीगोवर्द्धन ते समाचार आये जो यह मलेच्छ की फोज आई हुती सो पाछी फिर गई। तब श्रीगोवर्द्धननाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे ॥

प्रसग २

अब श्रीनाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर मे पधारे। सो व्रज के लोगन को बहुत हर्ष भयो जो धन्य देवदमन जो ऐसो उपद्रव आयो हुतो सो इनके प्रताप ते सब मिटि गयो। तब कुमनदास जी प्रसन्न होय के पद गाये सोपद श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को सुनायें। राग श्रीचर्चरी ॥ "जयति जयति हरिदास सर्वधर नें" ॥ यह पद सम्पूरण करि कें गायौ पाछें और पद गाये सो पद ॥ राग सारग "कृष्ण तनतरया तीर" यह पद सम्पूरण करि

कुभनदास जी कों नाम सुनायौ और ब्रह्म सबध करवायौ। तब कुभनदास जी नित्य नये पद करि कें श्रीनाथ जी को सुनावते। और श्रीनाथ जी कुभनदास जी के घर पधारते, और बहुत क्रीडा करते, खेलते वार्ता करते और बहुत कृपा कभनदास जी के ऊपर करते। अब रामदास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा करन लागे।

सो एक समय मलेच्छ को उपद्रव भयौ। सो यहाँ मानिकचद पाडे, सद्दू पांडे, रामदास चौहान, कुभनदास सब मिलि कें विचार कियौ जो यह मलेच्छ आयौ है सो यह धर्म को द्वेषी है सो कहा कर्तव्य है। तब सब ने ही कही जो यामे कहा कर्तव्य कहा पूछनो, अपनो विचारौ कहा होत है, ताते श्रीनाथ जी को पूछौ जो महाराज कहा करें। तब श्रीनाथ जी ने आज्ञा दीनी जो हमको यहाँ ते ले चलो हम यहाँ ते उठेंगे। तब सबन नें पूछौ जो महाराज कहाँ पधारेंगे। तब आपनें श्रीमुख सों कह्यौ जो टोड के घने म चलेंगे। तब एक भेसा मगायौ ता पर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को बैठाये। तब एक ओर ते तो रामदास पकरें रहै और एक ओर ते कुभनदास पकरे रहै और सब सेवक सग चलें जात है। तहाँ घने में काँटे बहुत हुते सो उहाँ काँटिन में बैठे सो वस्त्र सबन के फटि गये और सरीर में काँटे लगे दु ख बहुत पायौ। सो घने मे एक तालाब हुतौ तहाँ रुखन को एक चौक है तहाँ बड़े रुख नीचे श्रीनाथ जी विराजे। सो कढ़ूक सामग्री सग्रह हुती सो रामदास ने भोग धरि जल को करुआ भरि कें आगे धरि कें सब वैष्णव

चलिये, हम तो आये हैं सो आपको ले जायगे। तब कुम्भनदास नें मन मे विचार कीयौ जो बिन जाये तौ निर्वाह न होयगो सो कुम्भनदास जी तत्काल उहाँ ते पनहिं पहिर के चले।

तब कुम्भनदास जी को लेवे को आये हुते तिनने कहीं जो बाबा सवारी मे बैठिये। तब कुम्भनदास ने कह्यौ जो भैय्या में तौ कबहूँ बैठ्यो नाहीं। पाछें ऐसे ही चले। सो फतह [2]पुर सीकरी आय पहुँचे। सो देशाधिपति के डेरा हुते तहाँ गये। तब मनुष्यन नें देशाधिपति सो कह्यौ जो कुम्भनदास जी आये हैं। तब देशाधिपति ने कुम्भनदास सो कही जो कुम्भनदास जी आवो बैठो। सो आय बैठे। सो वह स्थल कैसो है जामें जडाव की रावटी, तामें मोतीन की झालरी लगी है ऐसो स्थल है, तामें बैठे। तब मन मे बहुत दुःख लाग्यौ और कह्यो जो यामो तौ हमारे व्रज के हींसन के रूप आछे हैं सो जिनमें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी खेलत हैं। तब इतने में देशाधिपति बोल्यौ जो कुम्भनदास जी तुमने बिसनपद बहुत कीये हैं सो मेने तुमको बुलायो है ताते तुम कछू बिसनपद गावो। तब कुम्भनदास जी तो मन में कुढे हुते जो विचारें जो कहा गाऊँ मेरी वाणी के भक्ता तौ श्रीगोवर्द्धनधर हैं और कछू गाये बिना मेरो काम चलेगो नाहीं ताते ऐसो गाऊँ जो कबहूँ मेरो नाम न लेय। काहे ते जो याके सग ते मेरे प्रभू छूटे हैं ताते कठोर वचन कहूँ जो बुरे: मानेगो तो कहा करेगो। तब यह मन में आई "जो जाको मन मोहन सग करे एको के सब से नहीं

२ फते।

कें कुभनदास ने गायौ। पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदास जी देव दमन को सुनावते ।

तब कुभनदास जी के पद सब जगत में प्रसिद्ध भये सो सब लोग इनके पद गावते। तब इनको पद काहू कलामत ने सीख्यौ सो फतेपुर सीकरी में देशाधिपति के आगें कुभनदास जी को पद कीयो भयौ पद वा कलामत ने गायौ। सो सुनि के देशाधिपति को चित्त वा पद मे गड गयौ और माथो धुनौ जो ऐसेहू महापुरुष ह्वै गये हैं जिनको ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं। तब कलामत ने कह्यौ जो अजी साहब अब हूँ हैं। सो सुनि कें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयौ और वा कलामत से कह्यौ जो वे कहां हैं। तब वा कलामत से कह्यो जो श्रीगोवर्द्धन के पास जमुनावनौ गाँव है तहाँ वे रहत हैं। तब देशाधिपति ने कही जो यहाँ बुलावौ हम उन्सो मिलेंगे। तब देशाधिपति ने मनुष्य और असवारी कुम्भनदास के बुलायवे को भेजे। तब कुम्भनदास जी तो घर हुते परासोली मे बेठे हुते सो मनुष्यन ने उहाँ बताय दीये। तब कुम्भनदास जी घर तो हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये हो।[1] तब कुम्भनदास ने कही जो भैय्या मे कछू देशाधिपति को चाकर तौ नाहीं मेरो देशाधिपति सो कहा काम है। तब देशाधिपति के मनुष्यन ने कही जो बाबा हम तौ काम कछू समझत नाहीं परि हमको देशाधिपति को हुक्म है जो कुम्भनदास को ले आवौ, ताते यह पालकी है यह घोडा है जापर चाहौ ता पर बेठि कें

१ तब कुम्भनदास सो कह्यौ जो तुमको पातसाह नें याद कीयो है।

यह पद मार्ग में गावत आये। सो आपकें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन किये। और दोय दिन लो दर्शन न भये सो कुभनदास जी कों दोय जुग की बराबर बीतो। सो श्रीमुख देखते ही सब दु ख बिसर गयौ। तब एक पद गायौ। सो पद॥

राग धनाश्री

नेन भरि देखौ नदकुमार।
ता दिन ते सब भूलि गयौ हो बिसरौ पन परवार॥ १॥
बिन देखे हों विकल भयो हो अग अग सब हारि।
ताते सुधि है सावरो मूरति की लोचन भरि भरि वारि॥ २॥
रूप रास पैमित[1] नहीं मानो कैसें मिसे लो कन्हाई।
कुभनदास प्रभू गोवर्धन धर मिलियै बहुर री माई॥ ३॥

राग धनाश्री

हिलगिन कठिन है या मन की।
जाके लिये देखि मेरी सजनी लाज गई सब तन की॥ १॥
धर्म जाउ अरु लोग हँसो सब अरु गाधो कुल गारी।
सो क्यो रहे ताहि बिन देखे जो जाको हितकारी॥ २॥
रस लुब्धक निमखन छाँड़त ज्यो आधीन मृग गानो।
कुभदास सनेह परम श्रीगोवर्द्धन धर जानो॥ ३॥

ऐसे पद बहुत कुभनदास जी नें गाये। सो सुनि के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ "यह मो बिन रहत नाहीं"।

---

१ परिमित।

सिरने जो जग वैर परे" । यह विचारि के ता समय कुम्भनदास जी ने एक नयौ पद करि कें गायौ ॥ सो पद ॥

राग सारग

भक्तन कौ कहा सीकरी काम ।
आवत जात पन्हैया टूटी विसर गयो हरि नाम ॥ १ ॥
जाको मुख देखे दुख लागै ताको करन परी परनाम ।
कुभनदास लाल गिरधर विन यह सब झूठौ धाम ॥ २ ॥

यह पद गायौ सो देशाधिपति अपने मन मे बहुत कुढ्यौ[1] और कह्यौ । जो इनको काहू बात को लालच होय तो मेरो जस गावें इनको तो अपने परमेश्वर सो सांचो सनेह है । इतनो कहि कें देशाधिपति नें कुभनदास कों सीख दीनो । तब कुभनदास जी उहाँ ते चले सो मार्ग मे आवत अति क्लेश जो कब हौं प्रभून को श्रीमुख देखो । सो ऐसो विचार के कुभनदास जी आवत हैं ता समय पद गायो । सो पद ॥

राग धनाश्री

कबहू देख हौं इन नैननु ।
सुंदर श्याम मनोहर मूरत अंग अंग सुख दैननु ॥ १ ॥
वृंदावन बिहार दिन दिन प्रति गोप वृन्द संग लैननु ।
हँसि हँसि हरखि पतौवन पावन बाटि बाँटि पय फैननु ॥ २ ॥
कुभनदास किते दिन बीते किये रेणु सुख सैननु ।
अब गिरधर विन निस और वासर मन न रहत क्यों चैननु ॥४॥

---

१ कुढ्यौ ।

चलो। तब राजा मानसिंह ने कह्यौ जो यहाँ तो अवश्य चलनो ये ठाकुर सब ब्रज के राजा हैं ताते इनके दर्शन तो अवश्य करने। तब तहाँ ते चले। सो गोपालपुर गाँव आये। तब आयकें पूछी जो दर्शन को कहा समय है तब काहू ने कही जो उत्थापन के दर्शन तो होय चुके हैं अब भोग के दर्शन होयगे। तह यह सुनि कें राजा मानसिंह श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन को गिरराज ऊपर आये। सो उष्णकाल के दिन, मार्ग के श्रमित, दूर के चले आये, सो गरमी में राजा बहुत व्याकुल भयो हुतो।, इतने में भोग के दर्शन खुले सो राजा मानसिंह को मणिकोठा में ले गये।

तिन दिनन में श्रीनाथ जी की सेवा वैभव सो होत हुती। बड़ो मंदिर सिद्धि भयो हुतो। श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें गुलाब जल को शृङ्गार भयो हुतो। निज मंदिर मणि कोठा तिवारी सब जल मय होय रहे हुते। सो ता समय राजा मानसिंह दर्शन को गये हुते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करिकें साष्टांग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल भयो हुतो सो सीतलताई भई। बड़ो चैन भयो। और श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को श्रीमुख देख कें राजा बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो साक्षात पूरण ब्रह्म श्रीकृष्ण वृन्दावन चन्द्र श्रीगोवर्द्धन नाथ जी हैं। आगें श्रीभागवत में सुन्यो हुतो सो आज देखे। आज को दिन है सो धन्य है और आज मेरे बड़ो भाग्य हैं। और मन में कह्यो जो यह भोग को समय है सो तो प्रभुन की राजधानी को समय है। सो वे प्रभू विराजे हैं आगे ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत है। सो कुम्भनदास जी ठाड़े ठाड़े

प्रसंग ३

और एक समय राजा मानसिंह सब ठौर ते दिग्विजय करिकें अपने देस कू चले। तब मन में विचारे जो बहुत दिन में आये हैं ताते मथुरा वृन्दावन होयकें चलनों। सो यह विचार कें आगरे ते चले सो मथुरा आये। तब विश्रात स्नान करिकें श्रीकेसो राय जी के दर्शन करिकें वृन्दावन चले। सो उष्णकाल के दिन हुते तब वृन्दावन के सब महतन ने जानी जो आज यहाँ राजा मानसिंह दर्शन को आवेगो। सो यह जानि के श्रीठाकुर जी को आछे आछे जरी के बागे बहुत आभरण पहरायै पिछवाई चढ़ावा सब जरीन के बाधें। इतने में राजा मानसिंह दर्शन को आयो। सो भीतरि मंदिर के आय कें श्रीठाकुर जी के दर्शन कीयै। सो उष्णकाल के दिन हुते सो बहुत गरमी पड़े। सो ता समय राजा मानसिंह पे ठाडो न रह्यौ गयो। सो ऐसे दर्शन चार पाँच जगह खडे हुते। सो तहाँ सब ठौर दर्शन करि सब ठौर ते बिदा होयकें अपने डेरा में आये। सो डेरा आय कें मन में विचारे जो अबही कूच करें।

सो वहाँ सो असवार होय कें चले सो तीसरे पहर गोवर्द्धन गाँव आये। सो मानसी गंगा ऊपर डेरा कीयै। सो तहाँ श्रीहरदेव जी के दर्शन कियै। सो वहाँ वृन्दावन के महतन ने बड़े ठाठ बनाये हैं तैसोई यहाँ ठाठ बनाय राख्यौ हुतौ। सो राजा मानसिंग तहाँ ते दर्शन करि के चले। तब काहू ने कही जो महाराज यहाँ श्रीगोवर्द्धननाथ जी बहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहाँ आप दर्शन को

श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें, कोन गावत हुतो। इनने ऐसे विसनपद गाये हैं जो कछू कहिवे में नाहीं आवत। तब काहू ने कही जो महाराज एक ब्रजवासी है, कुभनदास नाम है, सो आपने सुने ही होयँगे देसाधिपति सो मिले हुते सो है। तब राजा मानसिंग ने कही जो हम हू इनसो मिलै तो आछो।

तब राजा मानसिंघ सवारे उठे सो श्रीगिरिराज की परिक्रमा को निकसे जो परासोली आये। सो परासोली में कुम्भनदास जी न्हाय कें बैठे। इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी पधारे। श्रीमुख सों कहें जो कुम्भनदास जी हों तो एक बात कहेंगो। तब इतने में राजा मानसिंग आयो सो कुभनदास जी को प्रणाम करि कें बैठो और श्रीनाथ जी तो उहाँ तें दूर जाय ठाडे भये। सो श्रीनाथ जी तो एक कुम्भनदास जी को देखे है और इनकी भतीजी को देखे है। तब कुभनदास जी की दृष्टी तो श्रीनाथ जी के सग ही गई सो श्रीनाथ जी बैठे हैं तहाँ कुम्भनदास जी देखवो करे। तब भतीजी बोली जो बाबा राजा बैठे हैं। तब कुभनदास जी ने कही जो मैं कहा करूँ जो बैठे हैं। तो जा[1] बात कहत हुते सो तो भाजि गये सो अब कहेंगे। तब दूर ते श्रीनाथ जी कहैं जो कुम्भनदास मे बात कहूँगो। तब कुभनदास जी प्रसन्न भये और भतीजी सो कह्यो जो अमुकी आरसी लाउ तिलक करो। तब भतीजी ने कही जो बाबा आरसी तो पडिया पी गई। तब राजा ने कुम्भनदास जी की भतीजी सो कही जो अरी छोरी पडिया

१ जो।

मणि कोठा में दर्शन करत हैं और कीर्तन गावत हैं। सो राजा मानसिंग को मन वा पद में गड़ गयो हुतो। तेसोई कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप और तेसोई कीर्तन कुंभनदास जी करत हुते। सो पद ॥

राग नट

रूप देख नेना पल लागे नाहीं।
गोवर्द्धन के अंग अंग प्रति निरखि नेन मन रहत तहीं ॥१॥
कहा कहौ कछू कहत न आवै चित्त चोरयो[1] माँगवै दही ॥
कुम्भनदास प्रभू के मिलन की सुन्दर बात सखियन सो कही ॥२॥

राग धनाश्री

आवत मोहन मन जु हरयौ है ॥
हौं गृह अपने सचु सो बैठी निरखि वदन अस्वरा विसरयौ है ॥१॥
रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि वदन धीरज न धरयौ है ॥
कुम्भनदास प्रभू गोवर्द्धन धर अंग अंग प्रेम पियूष भरयौ है ॥२॥

ऐसे पद कुम्भनदास जी गावत है। इतने में राजभोग के दर्शन होय चुके। तब राजा मानसिंग दंडौत करि कें अपने डेरा मे गयौ। तब कुम्भनदास जी संध्या आरती के दर्शन करि कें अपनी सेवा सों पहुँच कें अपने घर कों गये। तब राजा मानसिंह अपने डेरा मे जाय कें अपने पास के मनुष्य हुते तिनमे श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यौ जो यह

---

१ चाखो।

श्रीनाथ जी ने यह बात कही और बहुत प्रसन्न भयो। तब फेरि कुम्भनदास जी श्रीगिरिराज ऊपर आय कें श्रीनाथ जी की सेवा में तत्पर भये।

प्रसग ४

और एक समय कुभनदास जी को मिलिबे को वृन्दावन के महत हरिवश भृत आये। सो यह जानि कें आये सो महापुरुष है, इनसो श्रीठाकुर जी बोलत हैं, बातें करत हैं और काव्य इनको सुनी सो कीर्तन बहुत सुन्दर कीये, ताते ऐसे पद श्रीठाकुर जी के साक्षात्कार बिना न होय। यह जानि कें कुम्भनदास सो मिलवे आये। सो कुभनदास जी सो मिलि कें बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो कुम्भनदास जी तुमने बिसनपद बहुत कीये सो हमनें आप कें सुने हैं, और आप को पद श्रीस्वामिनी जी कौ नाहीं सुन्यो ताते आप कोइ स्वामिनी जी कौ पद सुनावौ। तब कुम्भनदास जी नें श्रीस्वामिनी जी को पद करि कें गायौ॥ सो पद॥

राग रामकली

ताल चरचरी

कुमरि राधिका के तुव सकल सौभाग्य
की या बदन पर कोटिस[1] चद्रवारौ॥
खजन कुरग सत कोटि जघन ऊपर
सिंह सत कोटि उपरि न्योछावर उतारौ।

---

१ कोटिशत।

कहा पी गई। तब वह कठौठी मे पानी लाय के कुभनदास जी के आगें धरयौ तब कुम्भनदास जी वा मे देखि कें तिलक करन लागे।

इतने मे राजा मानसिग ने अपनी सोने की आरसी कुभन दास जी कें आगें धरी। और कह्यौ जो बाबा यामें देखि कें तिलक करिये। तब कुभनदास जी बोले जो अरे भैय्या याको हौं कहा करूँगो, हमारे तौ यहाँ छानि के घर हैं ताते कोऊ या के पाऊँ हमारो जीव लेवगो ताते हमे तौ यह नाहीं चाहियत है। तब राजा मानसिग ने इनके आगें सोने की थैली धरी। तब कुभनदास ने कह्यो जो भैया हमकौ धन तौ चाहिये नाहीं हमारे तौ यह खेती है ताको धन आवत है सो खात हैं। तब राजा मानसिग ने कह्यौ जो भलौ आपको गाम है ताको लिखौ है[1] करि देउ। तब कुम्भन-दास ने कह्यो जो भैया हो तो ब्राह्मण नाहीं जो तेरो उदक लेउ। तब फेरि राजा मानसिग ने कह्यो जो बाबा कछु तौ आज्ञा करौ। तब कुंभनदास ने कह्यो जो हमारो कह्यौ करोगे। तब राजा मानसिग नें हाथ जोर कह्यौ जो महाराज आप कहौगे सो करूँगो। तब कुम्भनदास नें कह्यौ जो फेरि मेरे पास तुम मत आइयो। तब राजा मानसिग नें कह्यौ जो महाराज धन्य है, यह माया के भक्त तो सगरी पृथ्वी मे फिरो सो बहुत देखे परि भग-वद्भक तौ एक यही देखे। यह कहि कें राजा मानसिग कुभनदास को दंडौत करि कें उठि चल्यौ। तब फेरि आय कें कुम्भनदास सो

१ हो।

पधारे। सो श्रीगुसाईं जी नाथ जी द्वारि पधारे। सो श्रीनाथ जी कों सेवा सिंगार किये ता पाछें आप भोजन करिकें गादी ऊपर विराजे। तब सब सेवक दर्शन को आये। तब बात चलत में कुम्भन दास की बात चली। तब काहू वैष्णव नें कह्यौ जो महाराज कुम्भनदास जी को द्रव्य को बहुत सकोच है सात बेटा हू हैं और उपजत तो एक खेती की है ताको धन आवत है तासो निरवाह करत हैं। सो यह बात श्रीगुसाईं जी ने अपने मन में राखी। ता पाछें उत्थापन के समय कुम्भनदास जी दर्शन को आये तब श्री गुसाईं जी अपने श्रीमुख सो कहे जो कुम्भनदास हम श्रीद्वारिका रणछोड़ जी दर्शन को पधारेंगे और विदेसहू होयगो। वैष्णव नें बहुत करिके लिख्यौ है ताते जो तुम सग चलो तो विदेस मे भगवदीय कों ग्रहकाज बाधा न होय। तब भगवदीय को काल व्यतीत हो जाय कछु जान्यो न परै। और मे सुन्यौ है जो कछू तुम्हारें द्रव्य को सकोच है सो वहां सिद्धि होयगो ताते सर्वथा तुमकौ चल्यौ चाहियै। तब कुम्भनदास जी नें कही जो आज्ञा। इतने मे दर्शन को समय भयो सो श्रीगुसाईं जी आप स्नान करिकें श्रीनाथ जी के मदिर मे पधारे। श्रीनाथ जी की सेवा सो पहुँचिकें श्रीनाथ जी को पौढाय कें बैठक में पधारे और कुम्भन दास जी को सीख दीनी जो कुम्भनदास जी तुम सेवा सो पहुँचि कें वेग आईयो हम कालि आरती करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर जाय रहेंगे।

मत्त सत कोटि चालि पर कुम्भसत
कोटि इन कुचन परि वारि डारो ॥१॥
कोर दश कोटि दशनन परि कहिन वारौ
पक कदूरवहू कसत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर गर्भ टारौ ॥
नाग सत कोटि वैनी ऊपर कपोत सत कोटि
करि जुगल पर वार ने नाहिन कोऊ लोक उपमा जुधारौ ॥२॥
दासकुभन स्वामिनी सुनएसिख
अति अद्भुत सुठान कहा लगि समारौ ॥
लाल गिरधर कहत मोहितौ
हिलौजी[1] वह रूप छिन छिन निहारौ ॥३॥

यह पद कुम्भनदास ने गायो सो सुनि के महत बहुत ही रीझे और कहैं जो हमने श्रीस्वामिनी जी के पद बहुत किये हैं परि वहाँ उपमा दीनी ही और वारि फेरि डारी ताते कुभनदास जी आप बड़े महापुरुष हो आपकी सराहना कहाँ ताँई करिये। वा महत नें कुम्भनदास की बड़ी बडाई करी बहुत रीझे। ता पाछें वे महत आदि सब कुभनदास जी सो विदा होयकें अपने घर गये।

प्रसग ५

और एक समय श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल मे अपने घरते श्रीनवनीत प्रिया जी सो आज्ञा माँगि कें विदेसार्थ[2] द्वारिका को

---

१ लोहिनोजी। २ विदेशार्थ।

श्याम सुन्दर सग मिल खेलन की आवत जिये अपेखें ।
कुभनदास लाल गिरधर बिन जीवन जन्म अलेखें ॥ ३ ॥

यह पद कुम्भनदास नें गायो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के भीतर सुनो । सो कुभनदास जी को कलेश श्रीगुसाईं जी सो सह्यौ न गयो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के बाहर पधारें और श्रीमुख ते कह्यौ जो कुम्भनदास अब तुम वेगि जाउ तुम्हारो विदेस होय चुक्यो । और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है । कैसें जानियै । जो श्रीअक्का जी नें गज्जन धावन को पान लेवे को पठायो । सो गज्जन को तो भगवद आसक्ति देखें बिना एक क्षण हू न रह्यो जाय । सो गज्जन धावन पान लेवे को बाहिर गये । सो थोरी सी दूर गये और ज्वर चढ़ि आयो । सो मूरछा खायकें गिरें और श्रीअक्का जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी को भोग समर्प्यो । तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें गज्जन धावन को बोल न सुन्यो तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें अपने श्रीमुख सो कह्यो जो मेरो गज्जन धावन कहां है । तब श्रीअक्का जी नें कह्यौ जो वह तो पान लेवे को गयो है । तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें कह्यो जो मेरो गज्जन धावन आवेगो तब आरोगूगो । सो श्रीहस्त खेंच कें बैठ रहे । तब वेगि गज्जन धावन को बुलायो । तब गज्जन धावन ने कही जो बाबा आरोगो तब श्रीनवनीत प्रिया जी आरोगे हैं । यह श्रीआचार्य जी महाप्रभू की मर्यादा है जो जितनो सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय । और भगवद्गीता मे भगवान कहें हैं । श्लोक ॥ ये यथा मा प्रपद्यतेस्तास्तथैव भजाम्यह ॥ यह आधो श्लोक कह्यौ ।

तब कुभनदास जी श्रीगुसाईं जी को दंडोत करिकें अपने घर को आये। सवारे सेवा सों पहुँच कें श्रीनाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर आये और श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सों सीख मागि कें आप नीचे आये। पाछें आप भोजन किये और सब सेवकन को महाप्रसाद लिवायौ। ता पाछे समयें ताही कौ[1] महूर्त हुतौ सो श्रीगुसाईं आप पर्वत नीचे आये। सोई अपछरा कुण्ड ऊपर आये। सो तहाँ अपछरा कुण्ड ऊपर डेरा करे हुते। सब सेवक अगारु सो ठाड़े हुते। सो श्रीगुसाईं जी डेरा पधारि कें पोढे। इतने में सब सेवक सामान लेकें वेऊ आये। सो कुम्भनदास उहाँ बैठि के विचारत हुते। कहियै जो कहिवे की होय प्रान नाथ बिछुरन की बिरियाँ जानत नाहि न कोऊ। यह विचार करत उत्थान को समय भयौ। तब आप गुसाईं जी आप भीतर डेरा में जागे। और कुभनदास जी कू दर्शन की सुधि आई सो वहाँ पुछरी की ओर कोनें मे जाय कें बैठि कीर्तन गावत है और आखिन मे ते जल को प्रवाह बहत है। सो कुम्भनदास ने एक पद गायौ॥ सो पद॥

राग सारग

केते दै जुग रे बिन देखें।
तरुण किशोर रसिक नदनदन कछुक उठति मुख रेखें॥ १॥
वह शोभा वह काति वदन की कोटिक चद विसेखें।
वह चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेषें॥ २॥

---

१ ताही समय को।

श्याम सुन्दर सग मिल खेलन की आवत जिये अपेखें ।
कुम्भनदास लाल गिरधर बिन जीवन जन्म अलेखें ॥ ३ ॥

यह पद कुम्भनदास नें गायो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के भीतर सुनों । सो कुम्भनदास जी को कलेश श्रीगुसाईं जी सो सह्यो न गयो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के बाहर पधारें और श्रीमुख ते कह्यो जो कुम्भनदास अब तुम वेगि जाउ तुम्हारो विदेस होय चुक्यो । और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है । कैसें जानियें । जो श्रीअक्का जी नें गज्जन धावन को पान लेवे को पठायो । सो गज्जन को तो भगवद आसक्ति देखें बिना एक क्षण हू न रह्यो जाय । सो गज्जन धावन पान लेवे को बाहिर गये । सो थोरी सी दूर गये और ज्वर चढ़ि आयो । सो मूरछा खायकें गिरें और श्रीअक्का जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी को भोग समर्प्यो । तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें गज्जन धावन को बोल न सुन्यो तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें अपने श्रीमुख सो कह्यो जो मेरो गज्जन धावन कहां है । तब श्रीअक्का जी नें कह्यो जो वह तो पान लेवे को गयो है । तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें कह्यो जो मेरो गज्जन धावन आवेगो तब आरोगूगो । सो श्रीहस्त खेंच कें बेठ रहे । तब वेगि गज्जन धावन को बुलायो । तब गज्जन धावन नें कही जो बाबा आरोगो तब श्रीनवनीत प्रिया जी आरोगे हैं । यह श्रीआचार्य जी महाप्रभू की मर्यादा है जो जितनों सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय । और भगवद्गीता में भगवान कहें हैं । श्लोक ॥ ये यथा मा प्रपद्यतेस्तास्तथैव भजाम्यहं ॥ यह आधो श्लोक कह्यो ।

तब कुभनदास जी श्रीगुसाईं जी कों दंडोत करिकें अपने घर को आये। सवारे सेवा सों पहुँच कें श्रीनाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर आये और श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सो सीख मांगि कें आप नीचे आये। पाछें आप भोजन किये और सब सेवकन कों महाप्रसाद लिवायौ। ता पाछे समयें ताही कौ[1] महूर्त हुतौ सो श्रीगुसाईं आप पर्वत नीचे आये। सोई अपछरा कुण्ड ऊपर आये। सो तहाँ अपछरा कुण्ड ऊपर डेरा करे हुते। सब सेवक अगारु सो ठाड़े हुते। सो श्रीगुसाईं जी डेरा पधारि कें पोढे। इतने में सब सेवक सामान लेकें वेऊ आये। सो कुम्भनदास उहाँ बैठि के विचारत हुते। कहियै जो कहिवे की होय प्रान नाथ बिछुरन की विरियाँ जानत नाहि न कोऊ। यह विचार करत उत्थान को समय भयौ। तब आप गुसाईं जी आप भीतर डेरा में जागे। और कुभनदास जी कू दर्शन की सुधि आई सो वहाँ पुछरी की ओर कोनें में जाय कें बैठि कीर्तन गावत है और आखिन में ते जल को प्रवाह बहत है। सो कुम्भनदास ने एक पद गायौ॥ सो पद॥

राग सारग

केते है जुग रो बिन देखें।
तरुण किशोर रसिक नदनदन कछुक उठति मुख रेखें॥ १॥
वह शोभा वह कांति वदन की कोटिक चंद विसेखें।
वह चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेषें॥ २॥

---

१ ताही समय को।

कृष्णदास हैं। सो श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करत है तासो आधो है। कुंभनदास जी कृष्णदास सो आधो क्यों कहैं ताको हेत यह जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने पुष्टि मार्ग प्रगट कीयो है। सो पुष्टि मार्ग कहा है जो व्रज भकन को हेत यह मार्ग प्रगट कीयो है। सो भगवदीय गाये हैं 'जो सेवा रीति प्रीत व्रज जन की जन हित जग प्रगटाई'। सो व्रज भकन की कहा रीति है जो श्रीठाकुर जी के सन्निधान तो सेवा करे और श्रीठाकुर जी वन में पधारे तब गुणगान करें। जो ये वस्तु होय तो आखो और इनमें एक होय तो आधो। ताते चत्रभुजदास सेवा और गुणगान है ताते आखो और कृष्णदास में एक सेवा है सो आधो। तब श्रीगुसाईं जी श्रीमुख ते कहैं जो भगवदीय है तेई बेटा हैं और बहुत भये तो कोन काम के। यह चत्रभुजदास की वार्ता में लिखे हैं॥ वैष्णव ६०॥

(कुम्भनदास के पुत्र कृष्णदास की वार्ता)

सो वे कृष्णदास श्रीनाथ जी की गायन के ग्वाल[1] हुते। श्रीगुसाईं जी ने इनको गायन की सेवा दीनी हुती। सो कृष्ण दास श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करते। सवारे खिरक सेवा सों पहुँच कें फेर गायन चरायवे को जाते। सो सगरे दिन कृष्णदास गायन की सेवा करते। सो एक गाय चराय कें पूछरी के पोर[2] कृष्णदास गायन के संग आवत हुते। सो सगरी गाय तो खिरक में आई और गाय बडी हुती ताको औन[3] बहुत भारी हुतो सो

१ ग्वार। २ पूछरी को छोर। ३ ऐन।

ताते श्रीमुख मों कहैं जो इहां तुम्हारी विवस्था और उनकी विवस्था है। सो ऐसो कुभनदास कों और श्रीनाथ जी को विरह हुतो। ताते श्रीगुसाईं जी नें कुम्भनदास कों सीख दीनी। तब कुभनदास नें श्रीनाथ जी के दर्शन कीये। तब कुम्भनदास ने एक पद गायो। सो पद ॥

राग सारग

जो ये चौप मिलन की होय ॥

तो क्यो रहै ताहि विन देखें लाख करो जिन कोय ॥
जो ये विरह परस्पर व्यापै जो कछू जीवन वनै ॥
लोक लाज कुलको मर्यादा एकौ चित्त न गनै ॥
कुम्भनदास प्रभू जाय[1] तन लागी और न कछू सुहाय ॥
गिरधर लाल तोहि विन देखे छिन छिन कलप विहाय ॥

सो यह पद कुम्भनदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान गायो। सो सुनि कें श्रीनाथ जी वहुत प्रसन्न भये। सो कुभनदास श्रीनाथ जी को देख कें प्रसन्न भये ॥

प्रसग ६

और एक समय कुम्भनदास जी श्रीगुसाइ जी के पास बैठे हुते। तव कुम्भनदास नें श्रीगुसाईं जी सो कह्यो जो महाराज वेटा डेढ है और हे तो साथ[2]। तव श्रीगुसाईं जी नें कह्यो जो कुम्भनदास डेढ कौ कारन कहा। तव फेरि कुम्भनदास जी कहैं जो महाराज आधो वेटा तो चत्रभुजदास और आधो वेटा

१ जाहि। २ साथ।

गाय उत्तम लोक कों ले जात है और कृष्णदास नें तो श्रीनाथ जी की गाय बचाई हैं ताते कृष्णदास को गाय कैसें छोड़ि आवैगी। और गुसाईं जी ने कह्यौ कुभनदास जी कहाँ है। तब काहू वैष्णवनें कही जो महाराज कुम्भनदास जी को कलेश बहुत बाधा कियो है। जो कुम्भनदास जी ऊपर आवत हुते, सो कुम्भनदास जी के आगे काहू नें कृष्णदास के समाचार कहें, सो सुनत ही कुम्भन दास जी मूर्छा खाय कें गिरे। सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं।

तब श्रीगुसाईं जी ने अपने श्रीमुख सो कह्यो जो फेरि कुम्भन-दास जी की खबर लावो जो कुम्भनदास जी की देह कैसे हैं। सो वे आय कें कुभनदास जी को पुकारें। तब ये समाचार श्रीगुसाईं जी सो कहें जो महाराज कुम्भनदास जी तो कछू समझत नाहीं। तब श्रीगुसाईं जी तो सेन भोग के दर्शन करि कें श्रीनाथ को पेढाय कें आप नीचे पधारे। सो देख कें मार्ग के साम्हें कुम्भनदास जी परे हैं और लोग चारयो ओर ठाडे हैं सो कहत हैं जो कुभनदास जी कैसे भगवदी हैं परि पुत्र को सोक बहुत बुरे होत है, या पीरा सो कोई बच्यो नाहीं, काहे ते जो अपनी आतमा है। तब यह बात लोगन की सुनि कें श्रीगुसाईं जी मन मे विचारे जो यहाँ तो कारण कछू और है और लोगन को तो कछू और भासत है। ताते भगवदीय को स्वरूप करिवे के लिये श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सो कही जो कुम्भनदास जी सधारे तुम वेगो

वह गाय बहुत हरवे हरवे चलती। सो वा गाय को आवत अँधियारो परि गयो। सो तहाँ पर्वत के नीचे अधियारे में एक नाहर निकस्यो सो गाय पे दोरयो। तब कृष्णदास कहैं जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथ जी की गाय हैं तू भूखो हो तो मेरे ऊपर आऊ। तब इतने मे गाय तो भाजि खिरक में गई और नाहर नें कृष्णदास को अपराध कीयो।

और ऊपर कहि आये है जो गाय सब खिरक मे आई। तब श्रीनाथ जी आप गाय दुहिवे को आये। सो सब गाय ग्वाल दुहत हैं और वह बड़ी गाय खिरक मे आई सो वह गाय कों श्री[1] दुहिवे को बैठे और कृष्णदास बछरा थामें हैं और वह गाय बछरा[2] को चाटत है। सो ऐसे दर्शन कुभनदास जी को भये। ता पाछें गोदुहन करि कें श्रीनाथ जी गिरिराज ऊपर मदिर में पधारे। तब श्रीगुसाईं जी ने भोग समर्प्यो और कुम्भनदास जी खिरक मे से आये सो दडौती सिला पास ठाडे भये। इतने में समाचार आयै जो कृष्णदास को नाहर ने मारयो। सो सुनि कें कुम्भनदास को मूर्छा खाय के गिरे। सो ऐसे गिरे जो देहानुसधान भूल गये। तब कुभनदास जी कौ सब कोऊ बुलावे परि बोले नाहीं। तब यह समाचार काहू नें श्रीगुसाईं जी सो कहे जो महाराज कृष्णदास को नाहर नें मारयो और गायकों कृष्णदास ने बचाई सो कृष्णदास उहाँ ही परे हैं। तब गुसाईं जी कहैं जो गाय कबहु न छोडि आवै। अत समय गाय सकल्प करत है ताको

१ श्रीनाथ जी।, २ बछरा।

राग धनाश्री

अब दिन रात्रि पहार से भये।
तब ते निपलट नाहिनि जबते हरि मधुपुरी गये।
यह जानियै विधाता जुग सम कीने जाम नये।
जागत जाग विहातन के ऐसें प्रीत पठयै[1]।
ब्रजवासी अतिपरम दीन भये व्याकुल सोच लये।
उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम पये।
कुम्भनदास विछुरत नदनदन बहुत सताप करे।
अब गिरधर विन रहत निरनर नैत न नीर छये॥

राग केदारो

औरन कों समीप विछुरनो आयो मेरी हिसा।
अब को जसोवे सुख अपने आली मोकों चाहत रिसा॥
ना जानो यह विधाता की गति मेरे आक लिखे ऐसो कौन रिसा।
कुम्भनदास प्रभू गिरधर कहत निस दिन रहू ज्यो चातक घन त्रिसा॥

ऐसे पद गाय गाय कुम्भनदास जी नें सूत ते पद कियें। पाछें शुद्ध होय कें कुभनदास जी भगवत्सेवा मे आये। ऐसी जिनको दर्शन की आरति सो वे कुम्भनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं। ताते इनकी वार्ता को पार नहीं ताते इनकी वार्ता कहाँ ताई लिखिये॥ प्र० १॥

---

१ छये।

आईयो तुमको श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करावेंगे[1] तुम मन मे खेद मति करौ। इतनो श्रीगुसाईं जी श्रीमुख सो कहैं तब कुभनदास जी उठि ठाड़े भये और प्रसन्न भये। तब श्रीगुसाईं जी को दंडौत करिकें कुम्भनदास को जो कार्य करनो हो सो सब कीयो।

पाछें सवारे कुभनदास जी दर्शन को आये। श्रीनाथ जी को सिंगार करिके श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो प्रथम कुम्भनदास जी को दर्शन कराउ देय। सो कुम्भनदास जी वैष्णवन के ऊपर यह कार कियौ जो सूतकी को कोन मंदिर में जान देतौ। सो कुम्भनदास जी के अनुग्रहते सब कोउ दर्शन करत हैं। सो कुभन दास जी नित्य एक वेर दर्शन करिकें परासोली में जाय बेठते। सो वहाँ बैठे बेठे विरह के पद गावते। सो पद॥

राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल।
अति आतुर ब्रज सुन्दर प्यारे विरही बेहाल॥ १॥
सीतल चद नयन भयो दाहत किरण कमल जनु जाल।
चदन कुसुम सुहाय घनसार लगन बदी[2] ज्वाल॥ २॥
कुम्भनदास प्रभूनघधन तुम बिन कनकलता मानो सूपी
जीव मा[3] काल।
अधरामृत बशी सीचि लेउ तुम गिरि गोवर्द्धन लाल॥ ३॥

१कराऐंगे। २ बढ़ी। ३ भा।

जब वा छत्रानी की जात मे बहुत चर्चा फेली तब वा छत्रानी को सुसरो तथा पती विनने विचार कीनो गाम मे रहनो नहीं। तब उहाँ ते घर के सगरे मनुष्य श्रीगोकुल जी कू चले कारण कें सब वैष्णव हते। तब नददास जी कू खबर भई तब नददास जी हूँ विन के पाछें गये। रस्ता मे विन से दूर दूर चले जाय और विन सें दूर डेरा करें। ऐसे कितने दिन पीछे ब्रज मे पहुँचे। सो यमुना जी उतरवे के समय वा छत्री नें कछू मलाहन कु दीनो और ये कही कें या ब्राह्मण कू मती उतारो ये हमकू दु ख देत हैं। जब सब उतरके श्रीगोकुल गये। श्री गुसाईं जी के दर्शन करे। जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञाकरी जो वा ब्राह्मण कू यमुना जी के पार क्यों वैठाय आये हो। तब वा छत्री के मन मे ऐसी आई कोई ने विनकी बात कही है अथवा जान गये हैं। सो छत्री मन में बहुत पछतायवे लग्या।

जब श्रीगुसाईं जी ने एक मनुष्य पठायके वा ब्राह्मण कू पार सो बुलाय लीनो। जब वा नददास जी नें आयकें श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। साक्षात् कोटिकदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। तब नददास जी नें साष्टांग दडवत करी और हाथ जोर कें ठाडे रहे और जा स्वरूप के दर्शन वा छत्रानी के नेत्रन मे नददास जी कू होत हते वही स्वरूप के दर्शन श्रीगुसाईं जी के भये। तब नददास जी को मन वहाँ ते छूटके साक्षात् श्रीगुसाईं जी के चरणारविंद मे लग्यो। तब नददास जी हाथ जोर कें ठाढे रहे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी नंददास जी स्नान

श्रीगुसाईं जी के सेवक नंददास जी तिनकी वार्ता

— o —

प्रसग १

नददास जी तुलसीदास के छोटे भाई हते। सो विनकू नाच तमासा देखवे को तथा गान सुनवे को शोक बहुत हतो। सो वा देश मेसू एक सग द्वारका जात हतो। सो नददास जी ऐसे विचारे कें मे श्रीरणछोड जी के दर्शन कू जाऊँ तो अच्छो है। जब विन नें तुलसीदास जी सू पूँछी। तब तुलसीदास जी श्रीरामचद्र जी के अनन्य भक्त हते जासू विन नें द्वारका जायवे की नाहीं कही। जब नददास जी नहीं माने सो वा सग मे चले गये। सो मथुरा लूधे गये। मथुरा मे वा सग कूं बहुत दिन लगे सो नद दास जी सग कू छोड़कर चल दीने।

सो नददास जी द्वारका को रस्ता भूल गये सो कुरुक्षेत्र की आड़ी सीनद गाम मे जाय पहुँचे। सो वहाँ एक साहुकार क्षत्री रहतो हतो। तब नददास जी वाके घर भिक्षा लेवे गये। वाकी स्त्री को रूप सुन्दर हतो सो नददास जी देखकर मोहित होय गये। जब आखो दिन जाय के वाके दरवाजे पें बैठ रहते, जब वा क्षत्रानी को मुख देख लेते तब डेरा पे आवते हते। ऐसे करते बहुत दिन बीते।

हते। ऐसें श्रीगुसाईं जी की कृपा तें ऐसो मन को निरोध होय गयो हतो। जासू इनके भाग्य की बड़ाई कहा कहिये।

प्रसंग २

ता पाछें श्रीगुसाईं जी श्रीजी द्वार पधारे। सो नददास जी कु आज्ञा करकें संग ले गये। तब नददास जी नें जाय कर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे। सो साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दरशन भये। सो दर्शन करकें नददास जी बहुत प्रसन्न भये और नददास जी कु किशोरलीला की स्फूर्ती भई। तब उत्थापन को समय हतो। सो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा पायकें यह पद गायो, 'सोहत सुरंग दुरंगी पाग कुरंग जलना कैसे लोयन लोने'। यह पद गायकें अपने मन में नददास जी नें बड़े भाग्य माने। फिर संध्या आरती समय दर्शन करे। तब ये पद गाये।

बनते सखन संग गायन के पाछे पाछे
आवत मोहनलाल कन्हाई ॥ १ ॥
बनते आवत गावत गौरी ॥ २ ॥
देख सेखी हरि को वदन सरोज ॥ ३ ॥
घर नंदमहर के मिस ही मिस
आवत गोकुल की नारी ॥ ४ ॥

या भाँत सु नददास जी ने इत्यादि अनेक पद गाये।

कर आओ। तब स्नान कर आये। तब श्रीगुसाईं जी नें श्रीनवनीत प्रिया जू के सन्निधान नाम निवेदन करवाये। पाछे नददास जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन सब आशयपूर्वक करे।

पाछें श्रीगुसाईं जी भोजन करके जब वैष्णवन कुं पातर धराई। तब नददास जी महाप्रसाद लेवे बैठे। तब महाप्रसाद लेत ही नददास जी कु देहानुसधान रह्यौ नहीं। जब पातर पर बैठेई रहे। भगवल्लीला मे मन मग्न होय गयो। अनेक लीलान को अनुभव होवै लग्यो। भरे घर के चोर की सी नाई मोहित भये। ऐसें करते सवारो होय गयो। कछु सुद्धि रही नहीं। तब श्रीगुसाईं जी पधार कें नददास जी के कान मे कही कें नददास जी उठो दर्शन करो। जब नददास जी उठके ठाढे भये। तब नददास जी ने उठके श्रीगुसाईं जी के दर्शन करके ये पद गायो। 'प्रात समय श्रीवल्लभसुत को उठतहि रसना लीजिये नाम' इत्यादिक पद गाय के श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करत मात्र ही भगवल्लीला की स्फूर्ती भई। जब पालने को पद गायो 'बालगोपल ललन को मोद भरी यशुमति दुलरावत'। इत्यादि भगवल्लीला सबधी बहुत नये करिके गाये।

सो नददास जी के ऊपर श्रीगुसाईं जी नें ऐसी कृपा करी तब सब ठिकानेन सो चिनको मन खीचकें श्रीप्रभुन मे लगाय दीनो। सो वे क्षत्री की बहू जिनसो नददास जी को मन लाग्यो हतो सो वे क्षत्री की बहू नददास जी कुं रास्ता मे पांच सात बार नित्य दीखती हती परन्तु नददास जी वाकी आडी देखते ही न

सके। सो रावण हर ले गयो। और श्रीकृष्ण तो अनत अवतान के स्वामी हैं और जिनको पती भये पीछे कोई प्रकार को भय रहे नहीं है। एक कालावच्छिन्न अनत पत्नीन कु सुख देत हैं। तासू मैंने श्रीकृष्ण पती कीने हैं। सो जानोगे।

ये पत्र जब नददास जी को लिख्यो तब तुलसीदासकु मिल्यो। तब तुलसीदास जी नें बाच के विचार किया क नददास जी को मन वहाँ लग गयो है। सो वे अब आवेंगे नहीं। सो उनको टेक हमसू अधिको है। हम तो अयुध्या छोड़ के काशी में रहे हैं और नददास जी तो ब्रज छोड़ के कहीं जाय नहीं हैं। इनको टेक हमारी टेक सू बड़ो है। सो वे नददास जी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसग ४

सो एक दिन नददास जी के मन में ऐसी आई जो जैसे तुलसीदास जी नें रामायण भाषा करी है सो हमहूँ श्रीमद्भागवत भाषा करें। ये बात ब्राह्मण लोगन नें सुनी तब सब ब्राह्मण मिल कें श्रीगुसाईं जी के पास गये। सो ब्राह्मण ने बीनती करी, जो श्रीमद्भागवत भाषा होयगो तो हमारी आजीविका जाती रहेगी। तब श्रीगुसाईं जी ने नददास जी सु आज्ञा करी जो तुम श्रीमद्भागवत भाषा मत करो और ब्राह्मणन के क्लेश मे मत परो, ब्रह्मक्लेश आछो नहीं है और कीर्तन कर कें ब्रजलीला गाओ। जब नददास जी ने श्रीगुसाईं जी की आज्ञा मानी,

सो नददास जी कोई दिन श्रीगिरिराज जी रहते कोई दिन श्रीगोकुल आवते । जिनकू ससार ऐसो फीको लागतो जैसे मनुष्य कू उल्टी देखके बुरो लगे। जासू वे और ठिकाने जाते नाहीं हुते और श्रीमहाप्रभु जी और श्रीगुसाईं जी और श्रीगिरिराज जी और श्रीयमुना जी और श्रीव्रजभूमी इनको स्वरूप विचारयो करते। प्रभुन के दूसरे अवतारन पर्यंत कोई ठिकाने विनको मन नहीं लागतो हुतो। जासूं विननें श्रीस्वामिनी जी के स्वरूप वर्णन में कह्यो है 'चलिये कुवरकार सखी भेप कीजे'। या पद मे कह्यो है 'शिवमोहे जिन वे मोहनीजे कोई। प्यारी के पायन आज आन परे सोई'। ऐसी दृष्टी जिनकी ऊँची हुती।

प्रसंग ३

सो वे नददास जी व्रज छोड़ के कहूँ जाते नहीं हुते। सो नददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी काशी में रहते हुते। सो विननें सुन्यो नददास जी श्रीगुसाईं जी के सेवक भये हैं। तब तुलसीदास जी के मन में ये आई के नददास जी नें पतिव्रता धर्म छोड़ दियो है आपने तो श्रीरामचद्र जी पती हुते। सो तुलसीदास जी नें ये विचार कें नददास जी कु पत्र लिख्यो जो तुम पतिव्रता धर्म छोड़कें क्यों तुमनें कृष्ण उपासना करी। ये पत्र जब नददास कु पहुँचो तब नददास जी ने वांच के यह उत्तर लिख्यो। जो श्रीरामचन्द्र जी तो एक पत्नीव्रत हैं सो दूसरी पत्नीनकु कैसे समार सकेंगे। एक पत्नी हुँ बरोबर समार न

कु भजो। तब नददास जी ने एक कीर्तन में उत्तर दियो। सो पद।

कृष्ण नाम जब तें मैं श्रवण सुन्योरी आली
भूली री भवन हो तो बावरी भई री।
भरभर आवें नयन चितहूँ न परे चैन
मुखहूँ न आवै बैन तनकी दशा कछु और रही री ॥१॥

जेतेक नेमधर्म व्रत कीने री मैं
बहुविध अंगो अंग भई मैं तो श्रवण भई री।
नददास प्रभु जाके श्रवण सुने यह गति
माधुरी मूरत देखो कैसी दई री ॥२॥

ये पद सुनके तुलसीदास चुप रहे।

जब नददास जी श्रीनाथ जी के दर्शन करवे कू गये तब तुलसीदासहूँ उनके पीछें पीछ गये। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब तुलसीदास जी नें माथो नमायो नहीं। तब नददास जी जान गये जो ये श्रीरामचंद्र जी बिना और दूसरे कु नहीं नमे है। जब नददास जी नें मन में विचार कीनो यहाँ और श्रीगोकुल में इनकु श्रीरामचंद्र जी के दर्शन कराऊँ तब ये श्रीकृष्ण को प्रभाव जानेंगे। तब नददास जी ने गोवर्द्धननाथ जी सो बीनती करी सो दोहा।

आज की सोभा कहा कहूँ, भले विराजो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नमे, धनुष बाण लेओ हाथ ॥

भाषा न कर्यो। ऐसो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा को विश्वास हतो। ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसग ५

सो नददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी हते। सो काशी जी ते नददास जी कू मिलवे के लियें व्रज में आये। सो मथुरा में आयके श्रीयमुना जी के दर्शन करे, पाछे नददास जी की खबर काढ के श्रीगिरिराज जी गये। उहां तुलसीदास जी नददास जी कु मिले। जब तुलसीदास जी नें नददास जी सु कही कें तुम हमारे सग चलो, गाम रुचे तो अयोध्या मे रहो, पुरी रुचे तो काशी मे रहो, पर्वत रुचे तो चित्रकूट में रहो, वन रुचे तो दडका रण्य मे रहो, ऐसे बडे बड़े धाम श्रीरामचद्र जी ने पवित्र करे है। तब नददास जी ने उत्तर देव कु ये पद गायौ। सो पद॥

जो गिरि रुचे तो बसो श्रीगोवर्द्धन,
गाम रुचे तो बसो नदगाम।
नगर रुचे तो बसो श्रीमधुपुरी,
सोभासागर अति अभिराम ॥१॥
सरिता रुचे तो बसो श्रीयमुनातट
सकल मनोरथ पूरण काम।
नददास कानन रुचे तो
बसो भूमि वृन्दावन धाम ॥२॥

यह पद सुनके तुलसीदास जी बोले जो ऐसो कोन सो पाप है जो श्रीरामचद्र जी के नाम सू न जाय। जासूं तुम श्रीरामचद्र

सो जब श्रीनाथ जी इच्छा करते तब चतुर्भुजदास कु साथ खेलवेकु ले जाते। और जैसी लीला के दर्शन करते तैसे पद गावते। सो ये चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र हते।

प्रसग २

सो एक दिन श्रीनाथ जी एक व्रजवासी के घर माखन चोरी करवेकु पधारे और चतुर्भुजदास जी कु सग ले पधारे। और उहाँ एक व्रजवासी की बेटी के चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथ जी तो नजर नाहीं पड़े। और चतुर्भुजदास पकड़ाय गये सो बिनने मार खाई। पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के पास गए। जब चतुर्भुजदास जी नें कही जो महाराज मोकु तो आछी मार खवाई। श्रीनाथ ने कही जो तेरे मे सामर्थ्य ओछी नहीं हती जब तू क्यो न भाग आयो। सो वें चतुर्भुजदास श्रीनाथ के अतरग लीलामध्यपाती हते। ताते इनकी वार्ता कहा कहिये।

प्रसग ३

और जा दिन चतुर्भुजदास जीकु प्रथम लीला को अनुभव भयो वा दिनतें सर्व व्यापी वैकुठ सम्बन्धी लीला सर्वत्र दर्शवे लगी। सो ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें कृपा करिके धरी। जब कुम्भनदास जी कु पोढवे के दर्शन होते हते तब कुम्भनदास जी कीर्तन गायवे लगे। सो पद। "ये देखो चरन भरोसन दीपक, हरि पोढे ऊँची चित्रसारी"। सो इतनी तुक जब

श्रीगुसाईं जी के सेवक चतुर्भुजदास कुम्भनदास के बेटा तिनकी वार्ता

— ० —

प्रसंग १

सो वे कुम्भनदास जी श्रीनाथ जी के संग खेलत हुते। सो एक दिन कुम्भनदास कु श्रीगोवर्द्धनाथ जी नें चार भुजा धरि के दर्शन दिये। वाही दिन बेटा को जन्म भयो जासू वा बेटा को नाम चतुर्भुजदास धरयो। ये बात कुम्भनदास जी की वार्ता में लिखी है।

सो वे चतुर्भुजदास जी ग्यारह दिन के भये ताही समय कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी के पास ले जायके नाम सुनवाये। और चतुर्भुजदास जब इकतालिस दिन के भये तब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी पास ले जाय निवेदन करवाये। वा दिन तें चतुर्भुजदास में श्रीनाथ जी ने इतनी सामर्थ्य धरी जब इच्छा आवे तब मुग्ध बालक होय जाय और इच्छा आवे तो बोलने चालने सब अलौकिक बातें करवें लग जाय। जब कुम्भनदास जी एकात में बेठे तब चतुर्भुजदास कुम्भनदास को भगवद्वार्ता करें और पूछें और पद गावें और जब लौकिक मनुष्य आय जाय तब चतुर्भुजदास मुग्ध बालक बन जाय। ऐसी सामर्थ्य श्रीनाथ जी चतुर्भुजदास मे धर दीनी।

सो जब श्रीनाथ जी इच्छा करते तब चतुर्भुजदास कु साथ खेलवेकु ले जाते। और जसी लीला के दर्शन करते तैसे पद गावते। सो ये चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र हते।

प्रसंग २

सो एक दिन श्रीनाथ जी एक व्रजवासी के घर माखन चोरी करवेकु पधारे और चतुर्भुजदास जी कु संग ले पधारे। और उहाँ एक व्रजवासी की बेटी के चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथ जी तो नजर नाहीं पड़े। और चतुर्भुजदास पकड़ाय गये सो विनने मार खाई। पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के पास गए। जब चतुर्भुजदास जी नें कही जो महाराज मोकु तो आछी मार खवाई। श्रीनाथ ने कही जो तेरे में सामर्थ्य ओछी नहीं हती जब तू क्यो न भाग आयो। सो वे चतुर्भुजदास श्रीनाथ के अंतरंग लीलामध्यपाती हते। ताते इनकी वार्ता कहा कहिये।

प्रसंग ३

और जा दिन चतुर्भुजदास जीकु प्रथम लीला को अनुभव भयो वा दिनतें सर्व व्यापी वैकुंठ सम्बन्धी लीला सर्वत्र दर्शवे लगी। सो ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें कृपा करिके धरी। जब कुम्भनदास जी कु पोढ़वे के दर्शन होते हते तब कुम्भनदास जी कीर्तन गावने लगे। सो पद। "धे देखो चरन झरोखन दीपक, हरि पोढे ऊँची चित्रसारी"। सो इतनी तुक जब

कुम्भनदास जी नें गाई तब चतुर्भुजदास जी गाय उठे। "सुन्दर वदन निहारन कारन, बहुत यतन राखे कर प्यारी"। ये सुनिकें कुम्भनदास जी ने निश्चय करयो जो इनकु श्रीगुसाईं जी की कृपा सों सपूर्ण अनुभव भयो। सो बड़ी दया मान के बहोत प्रसन्न भये। जा दिन तें चतुर्भुजदास कहुँ जाते अथवा नहीं जाते अथवा अवार सवार आवते सो कुम्भनदास जी कछू कहते नहीं। ऐसो जानते जो श्रीनाथ जी सग खेलत होयेंगे। सो चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसग ४

और एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथ जी के शृङ्गार के दर्शन चतुर्भुजदास जी ने कीने और श्रीगुसाईं जी आरती दिखावते हते। ता समे चतुर्भुजदास जी नें ये पद गाया।

"सुभग शृङ्गार निरख मोहन को ले दर्पण कर पियहि दिखावें।
आपुन नेक निहारिये बलिजाऊँ आज की छवि कछू कहत न आवें"।

ता पीछे गोविंदकुण्ड ऊपर श्रीगुसाईं जी पधारे। तब एक वैष्णव ने पूछ्यो जो महाराज चतुर्भुजदास जी ने "आज की छवि कछु वरनि न जावै" ऐसे गायो और आपतो नित्य शृङ्गार करे हैं और आरसी दिखावें है। सो आज को अभिप्राय कछु समझ में नहीं आयो। जब श्रीगुसाईं जी ने कही सो चतुर्भुजदास सो पूछियो। तब वा वैष्णव नें चतुर्भुजदास सो पूछी। जब चतुर्भुजदास जी नें और भी पद गायो। सो पद। "माईरी आज

और काल और छिन छिन प्रति और और।" ये पद सुनिके वा वैष्णव ने श्रीगुसाईं जी सो पूछ्यो जो भगवल्लीला तो नित्य है और सर्वत्र है। जब चतुर्भुजदास जी ने और और क्यो कही।

तब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। भगवल्लीला में विलक्षण पणो येई है जो नित्य है और क्षण क्षण मे नूतन लागत है और लीलास्थ जीवन कू और लीला के दर्शन करवे वारेन कू क्षण क्षण नूतन लगत है और नूतन रुचि उपजे है। सो गोपालदास जी नें गायो है। चोथे आख्यान में पाचमी तुक। "एक रसना किम कहूँ गुण प्रकट विविध विहार। नित्य लीला नित्य नूतन श्रुति न पामे पार।" ऐसी भगवल्लीला है। ये सुनके वो वैष्णव बहोत प्रसन्न भयो। और वे चतुर्भुजदास ऐसे कृपापात्र हुते जो जिनको नित्य लीला को अनुभव सर्वत्र होय गयो।

प्रसंग ५

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल विराजते और श्रीगिरिधर जी सो लेके सब बालक श्रीजी द्वार विराजते हुते। तब उहाँ रास धारि आये। तब श्रीगोकुलनाथ जी नें श्रीगिरिधर जी सो पूछ के परासोली मे रास करायो। और रास में खूब गान भयो। जब चतुर्भुजदास जी सु श्रीगोकुलनाथ जी ने आज्ञा करी जो तुम कछु गावो। तब चतुर्भुजदास जी नें कही जो मेरे सुनवे वारे श्रीनाथ जी नहीं पधारे हैं जा सू मे कैसे गाऊँ। जब श्रीगोकुलनाथ जी ने कही जो श्रीनाथ जी अबी पधारेंगे।

ये बात श्रीगोकुलनाथ जी की सत्य करवे के लियें श्रीनाथ जी जाग के और श्रीगिरिधर जी कु जगाय के श्रीनाथ जी परासोली पधारे और श्रीगिरिधर जी पधारे और चतुर्भुजदास कू और श्रीगोकुलनाथ जी कूं दर्शन भये । और कोई कु दर्शन भये नहीं । तब श्रीनाथजी के दर्शन करकें चतुर्भुजदास जी गावे लगे । जब अधिक सुख भयो रातहुं बढ गई और चतुर्भुजदास जी नें गायो सोपद । "अद्भुत नट भेख धरे यमुना तट श्याम सुंदर गुण निधान गिरिवर धरन रास रग राचें ।" पद दूसरो । "प्यारी ग्रीवा भुजमेलत नृत्यत प्रिया सुजान," ऐसे ऐसे चतुर्भुजदास जी नें बहुत पद गाये । जब रास भयो तब परम आनद भयो ।

फेर श्रीगिरिधर जी नें श्रीनाथ जी कु रात के जगे जान के सवारे जगाए नहीं । इतने मे श्रीगुसाईं जी गोकुल तें पधारे और पूंछी जो कहा समय है । जब श्रीगिरिधर जी नें कही जो श्रीनाथ जी जागे नहीं है । रात कु रास में जगे हते । जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो श्रीनाथ जी तो सदैव रास करें हैं और सदैव जगें है जासू शखनाद करावो । जब शखनाद कराय के श्रीनाथ जी कु जगाए । फेर श्रीगोकुलनाथ जी कु श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी । जो ऐसो आग्रह करिके श्रीनाथ जी कु पधरावने नहीं । एतो सदैव अपनी इच्छा तें रास करत है जासू बीनती करिके पधरावने नहीं । वे चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते के श्रीनाथ जी के विना दूसरे ठिकानें नहीं करत हते ।

प्रसंग ६

एक दिन श्रीगुसाईं जी नें चतुर्भुजदास सो आज्ञा करी जो अपछराकुंड ऊपर जाय के रामदास भीतरीया कु बुलाय लावो और तुम फूल ले आवो। तब चतुर्भुजदास जाय के रामदास जी कु बुलाय के आप फूल बीनके आवते हते। जब श्रीगोवर्द्धन पर्वत की कंदरा सू बाहेर श्रीनाथ जी श्रीस्वामिनी जी सहित पधारे और श्रीस्वामिनी जी नें मन में ये विचार कला जे यह लीला कोई जाने नहीं हैं। इतने में चतुर्भुजदास जी नें दर्शन करिके ये पद गायो। 'गोवर्द्धन गिरि सघन कंदरा रैन निवास कियो पिय प्यारी।" और दूसरो पद गायो। "रजनी राज कियो निकुंज नगर की रानी।" ये पद सुनके श्रीस्वामिनी जी प्रसन्न भई। फेर चतुर्भुजदास जी फूल लेके श्रीगुसाईं जी के पास गए। सो वें चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते जो श्रीनाथ जी के तथा श्रीस्वामिनी जी के मन की जानने वारे भये।

प्रसंग ७

सो चतुर्भुजदास की बहू एक दिन श्रीनाथ जी के चरणारविंद में पहुँच गई जब चतुर्भुजदास जी कु सूतक आयो। सूतक में चतुर्भुजदास जी वन में बेठके नित्य कीर्तन करते। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी विराके चारो ओर दूर दूर खेलें करते। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा करी जो चतुर्भुजदास तुम दूसरो विवाह करो। जब चतुर्भुजदास नें कही जो जात में कन्या नहीं मिले है जब

श्रीनाथ जी ने कही जो तुम धरेजा करौ। जब चतुर्भुजदास जी ने धरेजा कर्यो। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नित्य चतुर्भुजदास जी ऐसे अतरग भगवदीय हते।

प्रसग ८

एक समय श्रीगुसाईं जी परदेस पधारे हते। तब श्रीगिरिधर जी की ऐसी इच्छा भई जो श्रीनाथ जी कु मथुरा मे अपने घर पधरावें तौ ठीक। जब श्रीनाथ जी की आज्ञा लैके फागन वदी पष्ठी के दिन सैन पीछे श्रीनाथ जी कु मथुरा पधराए। और फागनवदी ७ के दिन बडो उत्सव मान्यो और जो कछु घर में हतो सो सर्वस्व अर्पण करयौ। और बेटी जी ने एक बीटी धर राखी हती। बेटी जी बालक हते जासू समझते नहीं हते। सो बिटी हूँ श्रीनाथ जी ने माँग लीनी। कारण जो श्रीगिरधर जी नें सर्वस्व अर्पण करवे की प्रतिज्ञा करी हती सो प्रतिज्ञा सत्य करिवे के लिये श्रीनाथ जी ने बीटी माँग लीनी।

और नित्य चतुर्भुजदास गिरिराज जी ऊपर बैठके विरद के पद और हिजग के पद गायो करते। और श्रीनाथ जी नित्य विनकु सध्या समे गायन के सग पधारते दर्शन देते। सो वैशाख सुदि त्रयोदशी के दिन चतुर्भुजदास जी नें ये पद सध्या समें गायो। "श्रीगोवर्द्धन वासी साँवरेलाल तुम बिन रह्यो न जाय हो।" या पद की ऐसी तुक श्रीनाथ जी नें पधारतें ही सुनि तब करुणा व्याकुल भये और मन में ये विचार करयो जो सर्वथा काल इहाँ

पधारूँगो जासू भक्त को दुसह दुख देखके श्रीनाथ जी से रह्यो न गयो।

जब रात्र एक प्रहर रही तब श्रीनाथ जी ने वैशाख सुदि चौदस के दिन श्रीगिरिधर जी कु आज्ञा करी जो आज गोवर्द्धन पर्वत ऊपर राजभोग अरोगुगे जब श्रीगिरिधर जी नें मंगला करायके श्रीनाथ जी कु पधराए। और पहेले मनुष्य पठाय के मंदिर खाला करायो और श्रीनाथ जी कु पधारते अधार होय गई। जासू राजभोग तथा शयनभोग एक समय मे आरोगे। वा दिनकू आज दिन पर्यंत नृसिंघ चतुर्दशी के दिन श्रीनाथ जी दोय समें राजभोग अरोगें हैं। एक तो नित्य के समें और एक शयन-भोग के संग। वे चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के ऐसे कृपापात्र हते जो तिन विना श्रीनाथ जी सो रह्यो न गयो।

प्रसंग ९

एक समय चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के संग श्रीगोकुल गए और श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करे और बाललीला के तथा पालने के कीर्तन करे। और दर्शन करके फेर गोपालपुर आए जब कुम्भनदास नें पूछ्यो जो कहाँ गयो हतो। तब विननें कही श्रीगोकुल गयो हतो।

जब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी सो पूछो जो प्रमाण प्रकर्ण की लीला और प्रमेय प्रकर्ण की लीला मे कितनो भेद है। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो भगवल्लीला सब एक समान है।

कुम्भनदास जी कु किशोर लीला मे बहोत आसक्ती है जासू ऐसे बोले भगवल्लीला मे भेद समझनो नहीं और श्रीठाकुर जी विरुद्ध धर्म आश्रय हैं। एक कालावाच्छिन्न श्रीप्रभु सर्वत्र सब लीला करत हैं। ये सुनके चतुर्भुजदास जी बहोत प्रसन्न भए। वे चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र हते। जिनसू श्री गुसाईं जी कछु गुप्त नहीं राखते हते।

प्रसंग १०

और चतुर्भुजदास जी के पाछें चतुर्भुजदास जी के बेटा राघोदास हते। सो विनकू भगवल्लीला को अनुभव भयो जब राघोदास जी ने धमार गाई। सो धमार। "ए चल जाएँ जहाँ हरि क्रीडत गोपिन संगा।" ये धमार की जब दस तुक भई तब राघोदास की देह छूटी। सो भगवल्लीला मे प्रवेश भयो। राघोदास जी की बेटी ने डेढ तुक धर के धमार पूर करी। वे चतुर्भुजदास तथा विनके बेटा विनकी बेटी ये सब ऐसे कृपापात्र हते। ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १० ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ३ ॥

नोट :—चतुर्भुजदास की वार्ता में तथा 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में अन्य स्थलों पर भी गोकुलनाथ का नाम इस तरह आया है कि इस ग्रंथ के गोकुलनाथ कृत होने में सन्देह होने लगता है। 'चौरासी वार्ता' में ऐसे उल्लेख नहीं मिलते।

श्रीगुसाईं जी के सेवक छीत स्वामी चौबे तिनकी वार्ता

— ० —

प्रसग १

सो वे छीत स्वामी मथुरा मे रहते हते। और मथुरा जी मे पांच चौबे बड़ा गुंडा हते। और ठगाई करते और छीत चौबे बिन पांचन मे मुख्य हतो। सो बिनने विचार करयो जो कोई गोकुल में जाय है सो श्रीविट्ठल नाथ जी के बस होय जाय है। जासू ऐसो दीसे है जो श्रीविट्ठल नाथ जी जादू टोना बहोत जाने है। परन्तु हमारे ऊपर चले तब सांचो मानें। ये विचार पांचो चौबेन नें करयो।

तब एक खोटो नारियल और खोटो रुपैया लैकै पांचो चौबे श्रीगोकुल आये। तब चार चौबे तो बाहेर बेठ रहे और मुख्य जो छीत चौबे हतो बिनकु भीतर पठायो। सो वे छीत चौबा नें खोटो नारियल तथा खोटो रुपैया जायकै भेट धरयो। तब श्रीगुसाईं जी नें खवास सू आज्ञा करी जो या रुपैया के पैसा ले आव। जब रुपैया के पैसा आए और नारियल फोड्यो तब सुफेद गरी निकसी। तब छीत स्वामी देखिकै मन में विचारी जो ये तो साक्षात् ईश्वर हैं। जब छीत स्वामी नें कही जो महाराज मोकु शरण लेओ। जब श्रीगुसाईं जी नें छीत स्वामी कु नाम सुनायो। पाछे श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करवे कु गये।

भीतर देखें तो श्रीगुसाईं जी विराजे और बाहेर आयके देखे तो विराजे हैं। जब छीत स्वामी नें विचारी जो श्रीगुसाईं जी की ईश्वरता जीव सो जानी नहीं जाय है।

जब वे चार चोबे बाहर बेठे हते विनने छीत स्वामी कु बुलाये। तब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जो तुमारे सगी बाहेर तुमकु बुलावत हे सो तुम जाओ। तब छीत स्वामी नें बाहर आयके चारौ चौबान से कही मोकु टोना लग गयो हे तुम भाग जावो। नहि तो तुमको लग जायगो। ये सुनके चारौ चौबे भाग गये। छीत स्वामी नें एक पद करिके गायो।

राग नट

भई अब गिरिधर सों पहेचान।
कपट रूप छलवे आयो पुरुषोत्तम नहि जान ॥१॥
छोटो बडो कछू नहि जान्यो छाय रह्यो अज्ञान।
छीत स्वामि देखत अपनायौ श्रीविट्ठल कृपानिधान ॥२॥

ये पद सुनके श्रीगुसाईं जी प्रसन्न भए। और छीत स्वामी कु साक्षात् कोटि कंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। और भगवल्लीला को अनुभव भयो और श्रीगुसाईं जी तथा श्रीठाकुर जी के स्वरूप मे अभेद निश्चय भयो, दोनो स्वरूप एक हैं ऐसे जानन लगे।

तब छीत स्वामी गोपालपुर श्रीनाथ जी दर्शन कु गये। उहाँ श्रीनाथ जी के पास श्रीगुसाईं जी कुं देखे। जब बाहेर निकसवे

पूँछी जो श्रीगुसाईं जी कब पधारचे है। तब उहाँ के लोगन नें कही जो श्रीगुसाईं जी तो गोकुल विराजे है। जब छीत स्वामी उहाँ ते श्रीगोकुल में आयके श्रीगुसाईं जी के दर्शन किये। जब छीत स्वामी नें ये निश्चय कियो जो श्रीनाथ जी तथा श्रीगुसाईं जी एक ही स्वरूप है। जब सू छीत स्वामी जी नें "गिरिधरन श्रीविट्ठल" ऐसी छाप के बहुत पद गाए। सो वें छीत स्वामी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

प्रसंग २

सो वे छीत स्वामी बीरबल के पुरोहित हते। सो वे बीरबल के पास बसेंधी लेवे कु गए। तब सवार के समें छीत स्वामी नें यह पद गाये।

"जे वसुदेव लिये पूरण तप, सोई फल फलित श्रीवल्लभ देह।"

ये पद सुनिके बीरबल बोले जो मै तो वैष्णव हूँ परन्तु ये बात देशाधिपति सुनेंगे तो तुम कहा जवाब देओगे वे तो म्लेच्छ है। तब छीत स्वामी बोले जो देशाधिपति पूछेंगे तो मै नीके जवाब देउँगो और मेरे मनसू तो तूही म्लेच्छ है। आज पीछे तेरो मुख न देखू गों ऐसे कहेके छीतस्वामी स्वामी चले गए।

जब ये बात देशाधिपती नें सुनी तब बीरबल सू पूँछी जो तुमारे पुरोहित क्यों रिसाय गए। तब बीरबल नें सब बात देशाधिपति आगे कही। ब्राह्मण लोग वृथा रिस बहुत करे है। तब देशाधिपती नें कही जो तुम और हम नाव मे बैठे हते जब

दीक्षित जी नें मोकुं आशीर्वाद दियो हतो। तव मैनें मणी भेट करी हती। वे मणी कैसी हती जो पाँच तोला सोना नित्य देती हती। सो वे मणी दीक्षित जी ने श्रीयमुना जी में पटक दीनी। जव मेरे मन में वड़ो गुस्सा लग्यो तव मैनें मणी पाछी माँगी। तव दीक्षित जी नें श्रीयमुना जी मे सु खोच भरिके मणी काढ़ी तव हमकुं कही तुमारी होय सो पहिचान लेओ। जव हमकूं ये निश्चय भयो ये साक्षात् ईश्वर है, ईश्वर विना ऐसो कारज नहीं होयगो। ये वात विचार करतें तुमारे पुरोहित की सब वात साची है सो तुमनें क्यो विचार न कसौ। ये वात सुनके वीरवल वहोत खिसातो भयो। और कछू बोल्यो नहीं।

और ये वात श्रीगुसाईं जी नें सुनी तव लाहोर के वैष्णव आये हते विनसो आज्ञा करी जो छीत स्वामी की खबर राखते रहियौ। जव छीत स्वामी वोले जो मैंने वैष्णवधर्म विक्रय करवेकु लियौ नहीं है। मेरो तो विश्रात घाट है सो आपकी कृपा सो सब चलेगो। यो वात सुनके श्रीगुसाईं जी वहोत प्रसन्न भये।

प्रसग ३

और एक दिन वीरवल देशाधिपती सों रजा लेके श्रीगोकुल में जन्माष्टमी के दर्शकु आयो। पाछे वेष पलटाय के देशाधिपती हूँ छाने छाने आयो। तव जन्माष्टमी के पालना के दर्शन करे मनुष्यन की भीड मे। तव देशाधिपती कु श्रीगुसाईं जी विना और कोई नें पहिचान्यो नहीं। तव छीत स्वामी कीर्तन करते हते

और श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी कु पालना झुलावते हते। तब छीत स्वामी नें ये पद गायो।

प्रिय नवनीत पालनें झूले श्रीविट्ठलनाथ झुलावै हो।
कबहुँक आप सग मिल झूलै कबहुक उतर झुलावै हो॥ १॥
कबहुँक सुरग खिलोना लै लै नाना भाँति खिलावै हो।
चकई फिरकनी लै चिंगीटु झुणझुण हात बजावें हो॥ २॥
भोजन करत थाल एक झारी दोउ मिल खाय खवावें हो।
गुप्त महारस प्रकट जनावे प्रीति नई उपजावें हो॥ ३॥
धन्य (ध) न्य भाग्य दास निज जनके जिन यह दर्शन पाए हो।
छीत स्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल निगम एक कर गाए हो॥ ४॥

ऐसे दर्शन छीत स्वामी कु भए। और देशाधिपतीकु हूँ ऐसे दर्शन भए। और मनुष्यनकु साधारण दर्शन भए। तब देशाधिपतीकु महाप्रसाद दिवाये।

तब देशाधिपती आगरे आये। फेर दूसरे दिन बीरबल हूँ आए। तब देशाधिपती नें बीरबल सू पूछी जो कहा दर्शन किये। तब बीरबल ने कही श्रीनवनीत जी पालना झूलते हते और श्रीगुसाईं जी झुलावते हते। तब देशाधिपती नें कही ये बात झूठी है। श्रीगुसाईं जी पालना झूलते हते और श्रीनवनीत प्रिया जी झुलावते हते मोकु ऐसे दर्शन भए हैं। और छीत स्वामी तुमारे पुरोहित ऐसे कीर्तन गावते हते। और मै तेरे पास ठाड़ो हते। तब बीरबल नें कही मोकु ऐसे दर्शन क्यू नहीं भये। तब

देशाधिपनी नें कही तुमकु गुरु के स्वरूप को ज्ञान नहीं है और तुमारे पुरोहित छीत स्वामी जिनकु इन बात को अनुभव है ऐसेन सों तुमारी प्रीती नहीं है। जब तुमकुं ऐसे दर्शन काहेकु होवें। सो ये छीत स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। वार्ता सपूर्ण। वैष्णव॥ २॥

श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद स्वामी सनाढ्य ब्राह्मण महावन में रहते तिनकी वार्ता

— ० —

प्रसंग १

प्रथम गोविंददास आतरी गाम मे रहते। तहाँ गोविंद स्वामी कहावते। और आप सेवक करते। गोविंददास परम भगवद्भक्त नित्य याही रीती सो रहते। जो श्रीभगवत् चरणारविंद की प्राप्ति कैसें होय याही बात की तलासी करत रहते हते।

एम समय गोविंददास आतरी गाम ते व्रज को आये। और महावन मे आयके रहे। काहे तें जो यह व्रजधाम है। इहाँ भगवत् चरणारविंद की प्राप्ति होयगी। और गोविंददास कवि हते। सो आप पद कते। सो जो कोऊ इनके पद सीख कें श्रीगुसाईं जी के आगें आय कें गावें। तिनके ऊपर श्रीगुसाईं जी प्रसन्न होते। सो गावनहारे गोविंद स्वामी के आगे आयकें कहते। जो तुमारे पद सुनके श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न होत है। ये वार्ता सुनि गोविंद स्वामी नें ऐसो विचार कियो जो श्रीगुसाईं जी कू मिलें तो ठीक।

तब एक समय श्रीगुसाईं जी को सेवक महावन गयो हतो। सो भगवदिच्छा ते श्रीगुसाईं जी के सेवक को और गोविंद स्वामी को मिलाप भयो। वा वेष्णव की गोविंद स्वामी की आपस मे

बातचीत भई। जब गोविंद स्वामी नें कही कें श्रीठाकुर जी को अनुभव कैसे होय। जो मोकु बहुत दिन सों या बात की आतुरता है तातें कहो। तब वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी की आतुरता देखिके कह्यो। जो आजकल श्रीठाकुर जी कु श्रीविट्ठल नाथ श्रीगुसाईं जी नें बसकर राखें हे। तातें श्रीठाकुर जी और ठोर कहुँ जाय सकत नहीं। श्रीठाकुर जी तो श्रीगुसाईं जी के हाथ हें। सो यह सुनके गोविंद स्वामी कु अति आतुरता भई। तब गोविंद स्वामी नें उन वैष्णव सों कही। जो मोकु श्रीगोकुल में श्रीगुसाईं जी के पास ले चलो। तब उहाँ से उठे सो श्रीगोकुल में आये।

तब श्रीगुसाईं जी ठकुरानी घाट ऊपर सध्या तर्पण करत हते। वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी कु श्रीगुसाईं जी को दर्शन करायो। गोविंद स्वामी दर्शन करिके मन मे समझें ये कर्म मार्गीय दीखत हें। सो कहा कारण होयगो। तब गोविंद स्वामी कु देखके श्रीगुसाईं जी बोले जो आवो गोविंद स्वामी बहुत दिन सू देखे। तब गोविंद स्वामी नें कही महाप्रभु अब ही आयो हूँ। तब गोविंद स्वामी नें अपने मन में विचार किये की आपने मोकु कोई दिन देख्यो नहीं हें सो कैसे जान गये। यामे कछु कारण दीसत है।

जब श्रीगुसाईं जी मंदिर में पधारे। तब गोविंद स्वामी नें बीनति करी हे महाप्रभु मोकू कृपा करिके शरण लेओ। तब श्रीगुसाईं जी नें कही न्हाय आवो। तब वे न्हाय आये। तब

श्रीनवनीत प्रिया जी के सनिधि मे नाम निवेदन करायो। तब गोविंद स्वामी कु साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम कोटिकंदर्प लावण्य के दर्शन भये। और सब लीलान को अनुभव भयो। श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी की सेवा करके बाहिर पधारे। तब गोविंद स्वामी नें बीनती करी। जो आपनो कपट रूप दिखावत हो। साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम रूप होय के वेदोक्त कर्म करत हो। सो हम जैसेन कू मोह होय है, जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। जो भक्ति है सो फूल को वृक्ष है, और कर्म मार्ग है सो काटन की वार है। तासू कर्म मार्ग की वार विना भक्ति मार्ग जो फूल को वृक्ष वाको रक्षा न होय। ये सुनके गोविंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये। गोविंद स्वामी ऐसें कृपापात्र भगवदीय भये।

प्रसग २

सो गोविंददास महावन के टेकरा पर रहते हते। और नये कीर्तन करके गावत हते और उहां श्रीठाकुर जी सुनवेकु पधारते हते। जब उहां मदनगोपालदास कायथ कीर्तन लिखिवेकु आवते हते। सो एक दिन श्रीठाकुरकु गोविंदस्वामी नें कही। इहां तांई आप नित्य श्रम करो हो। सो आपको गान सुनवे की बहुत इच्छा दीखे हैं। आपकु गान को अभ्यास है। यातें आपकु कछु गायो चहिये। तब आपनें कछु गान कियो। तब गान सुनके श्रीस्वामिनी जी पधारी। जब ताल स्वर बरोबर बजावे लगे तब गोविंदस्वामी धन्य धन्य कहन लगे। और आपनें भाग्य की सराहना करन लगे।

जब मदनगोपालदास कायथ बोले। जो इहाँ कोई आदमी तो दिसे नहीं है। तुम कौनसू बात करत हो। तब गोविंदस्वामी कछु बोले नहीं। बात गुप्त राखी। पाछे एक दिन श्रीगुसाईं जी नें पूँछी जो श्रीठाकुर जी कैसे गावें ह। तब गोविंदस्वामी नें कही श्रीठाकुर जी बहोत आछे गावें हैं। परतु ताल स्वर श्रीस्वामिनी जी बहोत आछो देत हैं। ये सुनके श्रीगुसाईं जी मुसकाय के चुप होय रहे।

प्रसग ३

सो गोविंदस्वामी जब श्रीगोकुल में रहते हुते। सो उहाँ आतरिगाम में पहले गोविंदस्वामी के सेवक हते सो श्रीगोकुल आये। सो पूछत पूछत विनके पास गये। जायके पूँछी जो गोविंदस्वामी कहा है। तब विननें कही गोविंदस्वामी मर गये। तब तिनमे सू एक पहेचानतो हतो। जब वानें कही आप क्यों हमारी हाँसी करो हो। जब गोविंदस्वामी नें कही हमने स्वामी पनो छोड़ दियो। जासु तुम ऐसे समझो जो मर गये हैं। जब विननें वीनती करी जो अब हम सेवक कौनके होंय। जब गोविंद स्वामी नें विनकु ले जायके श्रीगुसाईं जी के सेवक कराये। सो गोविंदस्वामी के सग सो विनकु भगवत्प्राप्ती भई। जिनके सग ते सहज भगवत्प्राप्ती होवै विनकी कृपातें कहा न होवै सब होवै। विनिकी बात कहा कहिये।

प्रसग ४

सो वे गोविंदस्वामी श्रीगोकुल में रहते। परन्तु श्रीयमुना जी

मे पाँव नहिं देते । श्रीयमुना जी कु साक्षात् श्रीस्वामिनी जी अष्टसिद्धी के दाता जानते । जैसो स्वरूप श्रीमहाप्रभू जी नें यमुनाष्टक में वर्णन कियो है । वैसे श्रीगुसाईं जी की कृपा से गोविंदस्वामी जानते हते जासु श्रीयमुना जी मे पाँव नहीं धरते हुते । और श्रीयमुना जी के दर्शन करते, और दंडवत करते, और पान करते ।

सो एक दिन श्रीबालकृष्ण जी और श्रीगोकुलनाथ जी गोविंद-स्वामीकु पकड के श्रीयमुना जी मे नहायवे लगे । जब गोविंद स्वामी नें बीनती करी जो ये मल मूत्र को भरयो देह श्रीयमुना जी के लायक नहीं है । श्रीयमुना जी साक्षात् स्वामिनी हैं । जासू ये अधम देह स्पर्श करने योग्य नहीं है । श्रीयमुना जी कु तो उत्तम सामग्री चहिये । ये सुनके श्रीबालकृष्ण जी और श्रीगोकुल नाथ जी चुप कर रहे । सो वे गोविंदस्वामी ऐसो स्वरूप श्रीयमुना-जी को जानत हते ।

प्रसंग ५

गा गोपकैरनुवन नयनो सदार
वेणुस्वनै कलपदैस्तनुभृत्सुसख्य ।
अस्पदन गतिमता पुलकस्तरूणा
नियोगपाश कृत लक्षणयोर्विचित्र ॥

या श्लोक को व्याख्यान श्रीगुसाईं जी गोविंदस्वामी के आगे कहने लगे । जब कहते कहते अर्धरात्र बीती तब श्रीगुसाईं जी पोढे । गोविंदस्वामी घरकू चले । तब श्रीबालकृष्ण जी तथा

श्रीगोकुलनाथ जी तथा श्रीरघुनाथ जी तीनो भाई वैष्णवन के मडल में विराजत हते।

जब गोविंद स्वामी नें जायके दडवत करी। तब श्रीगोकुल नाथ जी नें पूछे जो श्रीगुसाईं जी के इहां कहा प्रसग चलतो। हतो। जब गोविंद स्वामी नें ये श्लोक की सुबोधिनी जी को प्रसग कह्यो। फिर कह्यो आपको व्याख्यान आप करें यामें कहा केहेनो। जाके स्वरूप को वेद हूँ नहीं जान सकें वाको व्याख्यान वे आप ही करें तब होय। जब ऐसे कह्यौ तब श्रीगोकुलनाथ जी नें दोनौ भाइन सो कही जो गोविंद स्वामी नें श्रीगुसाईं जी को स्वरूप कैसो जान्यो है। और इनके ऊपर आपनें कैसी कृपा करी है सो इनके भाग्य को कहा वर्णन करिये ये कहिके श्रीगोकुल नाथ जी चुप होय रहे॥

प्रसग ६

सो गोविंद स्वामी श्रीनाथ जी के सग खेलते हते। सो एक दिन अपछरा कुण्ड सो गोवर्द्धन पर्वत ऊपर होय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के सग गोविंददास आवते हते। उहां से राजभोग की आरती भई ऐसी आवाज सुनी। जब गोविंद स्वामी नें कहि श्रीनाथ जी तो अबी आवत हैं। राजभोग कौन नें अरोगे हैं। गोविंद स्वामी नें जायके श्रीगुसाईं जी सो वीनती करी। जब श्रीगुसाईं नें दूसरो राजभोग सिद्ध कराय के धरायो।

और गोपालदास भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सो वीनती करी। जो एक दिन पूछरी की औरतें गोविंददास श्रीनाथ जी के

सग आवते मेने देखे हते। जब श्रीगुसाईं जी नें कही। जो कुम्भनदास तथा गोविंद स्वामी तथा गोपिनाथ दास ग्वाल ये तीनो श्रीनाथ जी के एकात के सखा है। सो इनकु अधिकार श्रीमहाप्रभू जी नें दियो है। ये बात सुनके गोपालदास जी बहुत प्रसन्न भये और अपने मन मे कहवे लगे। जो हम भितरिया भये तो कहा भयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे भगवदीय कृपा पात्र हते।

प्रसंग ७

सो एक दिन गोविंद स्वामी उत्थापन के समे श्रीनाथ जी के दर्शन कु गये। जब देखें तो श्रीनाथ जी के पाग के पेच खुल रहे हते। तब गोविंद स्वामी नें कही कें पाग के पेच क्यों खोल डारे हे। जब श्रीनाथ जी नें कही तू पाग के पेंच सवारि दे। तब गोविंद स्वामी नें भीतर जाइके पाग के पेंच सवार दिये। तब भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सो कही जो गोविंददास नें अपरस छिवाय दीन्ही है। पाछें श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करि जो गोविंददास सें श्रीनाथ जी नहीं छुआय जाय। ये तो श्रीनाथ जी के सग सदैव खेलें हैं। सो गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

प्रसंग ८

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी को श्रृङ्गार करत हते। तब गोविंदस्वामी जगमोहन में कीर्तन करत हते। तब श्रीनाथ जी नें गोविंददास कु आठ काकरी मारी। जब गोविंदस्वामी नें

एक कांकरी मारी। तब श्रीनाथ जी चमक उठे। जब श्रीगुसाईं जी नें कही गोविंददास यह कहा किया। तब गोविंदस्वामी नें कही। हे महाराज आपको तो पूत और को मूली कर। जो आठ घखत मोकु काकरी मारी जब आप कछु नहीं बोले। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुपकरि रहे। सो गोविंददास जी कु ऐसो सखा भाव सिद्ध भयो हतो।

प्रसंग ९

एक दिन गोविंददास की बेटी देस में सो आई। परन्तु गोविंदस्वामी कोई दिन वा बेटी सु बोले नहीं। जब कान्हबाई नें कही जो बेटी सु एक दिन तौ बोलो। तब विननें कही जो मन तो एक है इनको लगाऊँ के उनको लगाऊँ। फेर कछु दिन रहिके बेटी देसकु जावे लगी। जब बहु बेटिन नें साड़ी चोली पठाई। तब गोविंद स्वामी के मन मे दया आई। जो गुरु के घर को अनप्रसादी लेवेगी तो याको बिगार होयगो। वे गोविंद स्वामी कोई दिन बेटी से बोलते न हते। तो परन्तु दया के लियें बोले जो तू ये लेवेगी तो तेरो बुरो होयगो। जब बेटी नें कही मोकुं समज नहीं हती। तो मोकु तुमनें बड़ी कृपा करिके रस्ता बतायो। तब वे सब कपडा पाछें पठाय दिये। बेटी अपनें घर को गई। सो वे गोविंद स्वामी गुरु की अश सो ऐसे डरपत हते।

प्रसंग १०

और फागन के दिन हते। सो सेन भोग सरायकें श्रीगुसाईं जी बीडी अरु गावत हते। तब गोविंद स्वामी धमार गावत हते।

सो धमार श्रीगोवरधनराय लाला। ये धमार पूरी करे विना गोविंद स्वामी चुप कर रहे। जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी गोविंददास धमार पूरी करो। तब गोविंद स्वामी नें कही महाराज धमार तौ भाज गई है। वे तो घर में जाय घुसे। खेल तो बद भयो अब कहा गावू। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुप कर रहे। पाछे बैठक में पधारे। जब एक तुक आपनें बनाय के गोविंद स्वामी के नाम की वा धमार में धरी। वा दिन सू गोविंद स्वामी की धमार लोक मे साढ़े बारह कही जाय है। सो गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हुते। जो लीला के दर्शन करिकें गान करते हुते॥

प्रसग ११

सो वे गोविंद स्वामी महावन के टेकरा पर नित्य गान करते हुते। श्रीनाथ जी नित्य सुनिवे कु पधारते हुते। और श्रीनाथ जी सग गानहूँ करते हुते। और वे गोविंद स्वामी भगवल्लीला मे अष्ट सखान में हुते। सो कोई समे श्रीनाथ जी चूकते सो गोविंद स्वामी भूल काढते। और गोविंद स्वामी चूकते जब श्रीनाथ जी भूल काढते। श्रीनाथ जी तथा गोविंद स्वामी के गान सुनिवे के लिये श्रीगोकुलनाथ जी नित्य पधारते और एक मनुष्य बैठाय राखते। जो श्रीगुसाईं जी भोजन करवें कु पधारें तब मोकु बुलाय लीजो।

एक दिन वा मनुष्य के मन में ऐसी आई। जो श्रीगोकुल नाथ जी नित्य श्रीगुसाईं जी सो छाने पधारते है। एक दिन जो मे

न बोलाओ तो गुसाईं जी सब जान जाएगे। जब श्रीगोकुल नाथ जी तो नित्य जाते बद होय जाएगे। ये समझके वे मनुष्य एक दिन बुलायवे न गयो। जब श्रीगुसाईं जी भोजन को पधारने लगे। तब सब लाल जी आए। श्रीगोकुल नाथ जी न आए। तब श्रीगुसाईं जी नें दूसरे मनुष्य कुं आज्ञा करी जो गोविंद स्वामी के पास वल्लभ जी बैठें हैं विनको बुलाय लाव।

जब दूसरो मनुष्य लायो तब वे मनुष्य जो जान के बोलावे नहीं गयो हतो सो पश्चात्ताप करने लग्यो। जो श्रीगुसाईं जी तो सब जानते हैं मैंने काहे को श्रीगोकुल नाथ जी सो कुटिलता करि ऐसो पश्चात्ताप भयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसो कृपापात्र हते। जो तिनके सग श्रीनाथ जी क्षण क्षण आयके विराजते हते।

प्रसग १२

वे गोविंद स्वामी पाग आछी बाधते हते। सो टूक टूक पाग होती तब कोई कु खबर न हती। जब एक दिन एक व्रजवासी नें गोविंद स्वामी की पाग आछी जान के उतार लीनी। तब गोविंद स्वामी नें कही सारे यें टूक सभार के धर राखियो काल तेरे घर कु आयके ले जाऊँगो। वे व्रजवासी नें पाँव पर के पाग पाछी दीनी। वे गोविंददास कु पाग बाधवे की ऐसी चतुराई हती।

प्रसग १३

सो गोविंददास नित्य जसोदा घाट पर जाय बैठते। सो उहाँ एक दिन एक वैरागी गायवे लग्यो। सो राग ताल स्वर हीन

हतो। जब गोविंद स्वामी नें कही जो तु मत गावे या गायिषे सो कहा होत है। तब वा वैरागी नें कही मे तो मेरे राम को रिझावत हो। जब गोविंद स्वामी नें कही राम तो चतुर शिरोमणी है सो कैसे रीझेंगे। जो तेरो साचो भाव होय तो मन में नाम लिये सो रीझेंगे। सो वे गोविंद ऐसे नि शक हते।

प्रसग १४

सो एक दिन श्रीनाथ सामढाक के ऊपर चढिके विराजते हते और मुरली बजावत हते, और गोविंददास दूर सो टेकरा के ऊपर बैठे देखते हते। और वाही समय श्रीगुसाईं जी न्हाय कें उत्थापन करवे के लिये श्रीगिरिराज ऊपर पधारे। श्रीनाथ जी ने सामढाक पें सु देखे और उतावल सो कूदे और वागा को दावन फट गयो और लीर झाड पें रहि गई। तब श्रीगुसाईं जी नें केवार खोलि के उत्थापन करे देखें तो वागा को दावन फट्यो है। जब मनुष्यन सो पूछी जो इहां कोई आयो तो नहीं हतो। तब सबनें नाहीं कही। जब आप विचार करवे लगे।

तब गोविंददास नें कही जो आप या बात को विचार कहा करे हे। लरिका को सुभाव जाने नहीं हे। जो बहुत चचल है स्याम ढाक पे सु कूदि के वागा को दामन फाड्यो है। सो आप चलो तो दिखाऊँ ऐसे लीर लटक रही है। जब श्रीगुसाईं जी पधार के वा लीर उतारि लाये। तब श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सो पूछी जो आपने उतावल काहें को करी। तब श्रीनाथ जी

जी नें कही जो उत्थापन को समय भयो हतो। और आप न्हाय के पधारे हते जासूं उतावल भई। वा दिन तें ऐसौ वदो वस्त कस्यौ जो तीन वेर घटानाद तथा तीन वेर शखनाद करि के और वीस पल रहिके मदिर के किंवार खोल के उत्थापन करनें। सो वे गोविंददास ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

प्रसंग १५

एक दिन आगरे मे अकवर पातशाह नें सुन्यो जो गोविंद स्वामी वहुत आछे गावत हें और निरपेक्ष हे और निःशक हें। जव इनके मुख को राग कैसे सुन्यो जाय। ये विचार करिके पात शाही वेष पलटके श्रीगोकुल में इकेले आए। जव गोविंददास जसोदा घाट पर भैरव राग अलापत हते तव वा पातशाह नें वाहवा वाहवा करी। जव गोविंददास नें कही ये राग छी गयो। जव वानें कही जो मै पातशाह हूं। जव विनने कही जो तुम पात शाह हो तो पातशाही करो। परन्तु ये राग तो तुमारे सुनवे सू छिवाय गयो। जव पातशाह नें विचार कस्यो एक देस को मै राजा हूं और इनको तो त्रिलोकी को वैभव फीको लगे है। जासू ये काहे कू आपने हुकुम में रहेंगे। ये विचारिके पातशाह चले गये। और गोविंद स्वामी नें वा दिन सू भैरव राग गायो नहीं। वे गोविंद स्वामी ऐसे टेकी भगवदीय हते।

प्रसग १६

और वे गोविंद स्वामी के सग श्रीनाथ जी नित्य वन में

खेलते। और कोई दिन गोविंददास को घोडा करते और कोई दिन हाथी करते। ऐसे नित्य क्रीडा करते। सो एक दिन श्रीनाथ जी ने गोविंद स्वामीकु घोडो कर्‍या हतो और ऊपर आप असवार भये हते। सो गोविंद स्वामी नें घोडा की सी न्याई लघुशंका करी। ये बातें एक वैष्णव नें देखी। सो श्रीगुसाईं जी सो जाय के कही। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जब गोविंद स्वामी हाथी घोडा होते हैं सो हाथी घोडा को स्वांग पूरो न करें तो कैसे होवै। और इन बातन मे तुम मत पडो। ये बात सुनके वे वैष्णव चुप करि गयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

प्रसंग १७

एक दिन गोविंददास श्रीगुसाईं जी के संग मथुरा जी मे केशवराय जी के दर्शन कूं गये। तब उष्णकाल हतो। और सब जरी को धागा जरी की ओढ़नी देख के गोविंददास नें केशवराय जी सो पूंछो जो नीके तो हो। सो सुनकें केशवराय जी मुसकाये। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो गोविंददास ऐसे न बोलिये। तब गोविंददास नें कही महाराज मादी मनुष्य को पोसाक पहेरयो है जब कैसे न पूंछो जाय। ये सुनिके श्रीगुसाईं जी चुपकर रहे।

प्रसंग १८

और एक दिन श्रीनाथ जी के राजभोग आवते हते। तब भीतरिया सो गोविंददास स्वामी नें कही जो राजभोग धरे पहिले

मोकु प्रसाद लेवाव। जब भीतरिया नें थार पटिक दियो और श्रीगुसाईं जी कू पुकार करि। जब श्रीगुसाईं जी ने गोविंददास सों पूछी यह कहा। जब गोविंद स्वामी ने कही जो आप सग में मोकु खेलवे कू ले जाए हैं। और जो पाछे प्रसाद लेवेकू रहि जाऊँ तो वन मे पाछे मोकु श्रीनाथ जी मिले नहीं हैं जब कैसे करूँ। ये सुनके श्रीगुसाईं जी नें ऐसी बदोबस्त करी जो राजभोग आवे के समय गोविंददासकु प्रसाद लेवावनो ऐसी भडारी सो आज्ञा करि। सो ये गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते जिन बिना श्रीनाथ जी रहि नहीं सके॥

प्रसंग १९

एक दिन श्रीनाथ जी गोविंद स्वामी सग खेलते हते। तब श्रीनाथ जी के ऊपर दाव आयो। तब उत्थापन को समय भयो। तब श्रीनाथ जी भाग के मदिर मे घुस गये। तब मदिर मे भीतर जायकें श्रीनाथ जी कु गीली मारि। तब सेवक टहेलवान नें गोविंददास कु धक्का मार के बहेर काढ दिये और उत्थापन भोग धरयो। तब गोविंद स्वामी जाय के रास्ता मे बेठे और कहे जो अवि गायन के सग श्रीनाथ जी ये रास्ता पर आवेंगे और याको मार देउगो।

पीछे श्रीगुसाईं जी न्हात के मदिर में पधारे। देखें तो श्रीनाथ जी अनमने होय रहे हैं और उत्थापन कि सामग्री अरोगें नाहीं है। तब श्रीगुसाईं जी ते श्रीनाथ जी सो पूछे जो कैसे हो। तब

श्रीनाथ जी नें कहि जे। जहाँ सुधि गोविंददास कु नहिं मनावोगे तहाँ सुधि मोकु कछू आवेगो नहीं, काहे ते मोकु रस्ता चले विना और वाके संग खेले विना सरेगो नहिं। अवि रस्ता में जाउ तो आनगिनतोन कि मार देवगे। या चिंता के लिये मोकु कछू भावे नहि है। गोविंददास आवेगो जब कछु भावगा।

ये बात सुनके और श्रीनाथ जी की भक्त वत्सलता देखके श्रीगुसाईं जी को हृदय भर आयो। तब गोविंददास कु बुलाय के और मनायके श्रीनाथ जी सु बीनति करि जो ये हाजिर हैं अब आय गये हैं। तब श्रीनाथ जी आरोगे। सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र हते। प्रसंग १६ ॥ वार्ता संपूर्ण ॥

Printed by Ramzan Ali Shah at the National Press Allahabad